मासिक पत्रिका

RAJHIN/2007/21229

वर्ष–02, अंक नं. 02

जयपुर टाइम्स

राजस्थान की रग-रग से निकली बात जयपुर टाइम्स मैग्जीन के साथ

वर्ष: 02, अंक 02

इस अंक में

जून, 2026

मोदी के हाथों रिफाइनरी का शुभारंभ 04

मोदी के हाथों रिफाइनरी का शुभारंभ, विश्व तेल संकट में भजनलाल सरकार का जलवा

कांग्रेस सेवादल में इतिहास पुरूष माने 10

कांग्रेस सेवा दल में इतिहास पुरूष माने जाने वाले सुरेश चौधरी का क्यों टूटा दिल!

मास्टर का बेटा जिसने करोड़ों भक्तों के भगवान 18

मास्टर का बेटा जिसने करोड़ों भक्तों के भगवान बने आसाराम बापू के गंदे चरित्र का किया पर्दाफाश

गांव की माटी से तप कर सोना बने कानाराम ... 26

गांव की माटी से तप तप कर सोना बने आईएएस कानाराम

बड़े-बड़े गैंगस्टर, हनी ट्रैप और फ्रॉड 32

बड़े-बड़े गैंगस्टर, हनी ट्रैप और फ्रॉड करने वालों में दबंग आईपीएस करण शर्मा का खौफ

जमवारामगढ़ क्षेत्र में नए पेड़ों से ले आए 38

अभिषेक सुराणा का "कोड चूरू" नवाचार छात्रों के उज्ज्वल भविष्य के लिए बना वरदान

जयपुर पश्चिम में साइबर ठग 44

हाई प्रोफाइल एग्जाम की तैयारी में युवाओं के “सारथी" बनेंगे आईपीएस "सुधीर चौधरी”

प्रकाशक, मुद्रक
रामेश्वर लाल जाट

संपादक
नीतू चौधरी

उप संपादक
कुमकुम रंगा, रूपचंद गुर्जर, रोहित शर्मा

ग्राफिक डिजाईनर
रजत जाखड़

स्वत्वाधिकारी

केम्ब्रिज मल्टी मीडिया के लिए प्रकाशक, मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा केम्ब्रिज मल्टी मीडिया प्रा.लि. सी-565, सी-4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, सीकर रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं सी-565, सी-4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड़, सीकर रोड़ जयपुर से प्रकाशित

संपर्क
संपादक
जयपुर टाइम्स (मासिक)
सी-588, सी-4सी स्कीम,
न्यू लोहा मण्डी रोड़
जयपुर-302013

E-mail
jaipurtimes2007@gmail.com

website
www.jaipurtimes.org

मो. 7014217770

मूल्य:- 100/- प्रति अंक
वार्षिक सदस्यता- 1251 (पोस्टल चार्ज सहित)

सुधी पाठकों के लिए जयपुर टाइम्स का विशेष संदेश

ईवी चार्जर: सुविधा के नाम पर उपभोक्ता की परीक्षा क्यों?

देश में इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना आज समय की आवश्यकता है। बढ़ता प्रदूषण, महंगा ईंधन और ऊर्जा सुरक्षा जैसी चुनौतियों के बीच इलेक्ट्रिक वाहन भविष्य का महत्वपूर्ण विकल्प बनकर सामने आए हैं। केंद्र और राज्य सरकारें भी ईवी अपनाने के लिए लगातार प्रयास कर रही हैं। वाहन खरीद पर सब्सिडी, चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए प्रोत्साहन और निजी कंपनियों को चार्जर लगाने के लिए सहायता-इन सबका उद्देश्य यही है कि आम आदमी इलेक्ट्रिक वाहन की ओर भरोसे के साथ बढ़े। लेकिन, सवाल यह है कि जब चार्जिंग व्यवस्था ही भरोसेमंद नहीं होगी, तो आम आदमी इलेक्ट्रिक वाहन पर विश्वास कैसे करेगा? आज कई स्थानों पर ईवी चार्जर लग तो गए हैं, लेकिन उपभोक्ता अनुभव बेहद खराब दिखाई देता है। चार्जर लगाने वाली कंपनियां सब्सिडी और सरकारी योजनाओं का लाभ लेकर चार्जिंग स्टेशन खड़े कर रही हैं, परंतु उनकी गुणवत्ता, रखरखाव और जवाबदेही पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। कई वाहन मालिकों का अनुभव है कि चार्जिंग शुरू करने से पहले ऐप डाउनलोड करना पड़ता है, फिर वॉलेट में पैसा डालना पड़ता है, लेकिन उसके बाद भी गाड़ी चार्ज होगी या नहीं, इसकी कोई गारंटी नहीं होती। कभी बिजली चली जाती है, कभी मशीन तकनीकी खराबी बताती है, कभी ऐप पेमेंट स्वीकार कर लेता है, लेकिन चार्जिंग शुरू नहीं होती। कई बार चार्जर का गन वाहन में अटक जाता है, और उपभोक्ता असहाय स्थिति में खड़ा रहता है। ऐसी स्थिति में, न मौके पर कोई कर्मचारी मिलता है, न हेल्पलाइन तुरंत समस्या हल करती है। यह केवल असुविधा नहीं, बल्कि उपभोक्ता के समय, धन और मानसिक शांति की सीधी हानि है। सबसे गंभीर समस्या पेमेंट मॉडल की है। अधिकांश कंपनियां पहले अपने अलग-अलग वॉलेट में पैसा जमा करवाती हैं। उपभोक्ता को हर कंपनी के लिए अलग ऐप, अलग वॉलेट और अलग प्रक्रिया अपनानी पड़ती है। यदि चार्जिंग सफल नहीं होती, तो पैसा वापस बैंक खाते में तुरंत नहीं आता। वह कंपनी के वॉलेट में ही फंसा रहता है। रिफंड की प्रक्रिया लंबी, जटिल और कई बार अस्पष्ट होती है।

आम नागरिक, जो केवल अपनी गाड़ी चार्ज करना चाहता है, वह ग्राहक सेवा, टिकट नंबर, ईमेल और लंबे इंतजार के चक्कर में उलझ जाता है। यह व्यवस्था उपभोक्ता हितों के खिलाफ है। जब उपभोक्ता ने सेवा के लिए भुगतान किया और सेवा नहीं मिली, तो पैसा तुरंत वापस होना चाहिए। यह कोई उपकार नहीं, बल्कि उसका अधिकार है। यदि पेट्रोल पंप पर ग्राहक पैसा दे और पेट्रोल न मिले, तो क्या उसे कहा जाएगा कि आप ऐप पर शिकायत दर्ज करिए और कई दिन इंतजार करिए? फिर ईवी चार्जिंग में ऐसी व्यवस्था क्यों स्वीकार की जा रही है? ईवी चार्जिंग नेटवर्क का उद्देश्य सुविधा देना होना चाहिए, न कि उपभोक्ता को ऐप और वॉलेट की भूलभुलैया में फंसाना। आज स्थिति यह है कि कई उपभोक्ता चार्जिंग स्टेशन पर पहुंचने के बाद भी तनाव में रहते हैं कि चार्जर चालू होगा या नहीं, पेमेंट फंसेगा या नहीं, गाड़ी कितनी देर में चार्ज होगी, और बीच में कोई तकनीकी समस्या आई, तो समाधान कौन करेगा। इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने वाला व्यक्ति यदि हर यात्रा से पहले चार्जिंग को लेकर डरे, तो यह ईवी क्रांति के लिए अच्छा संकेत नहीं है। सरकार की जिम्मेदारी केवल चार्जर लगवाने तक सीमित नहीं हो सकती। सरकार यदि कंपनियों को सब्सिडी दे रही है, तो उसे यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि वे चार्जर वास्तव में काम कर रहे हैं या नहीं। कितने चार्जर चालू हैं, कितने खराब हैं, कितनी ट्रांजेक्शन सफल हो रही हैं, कितनी फेल हो रही हैं, कितने उपभोक्ताओं का पैसा वॉलेट में फंसा है-इन सभी आंकड़ों की नियमित निगरानी होनी चाहिए। सिर्फ कागजों में चार्जर लग जाना विकास नहीं है। विकास तब है, जब आम आदमी को वास्तविक सुविधा मिले। इसके लिए सरकार को कुछ कठोर और स्पष्ट कदम उठाने चाहिए। सबसे पहले, सभी ईवी चार्जिंग कंपनियों के लिए सेवा गुणवत्ता मानक तय किए जाएं। यदि कोई चार्जर लंबे समय तक खराब रहता है, तो कंपनी पर जुर्माना लगे। यदि भुगतान के बाद चार्जिंग नहीं हुई, तो पैसा अपने आप तुरंत उसी माध्यम में वापस जाना चाहिए, जिससे भुगतान किया गया था। वॉलेट में पैसा रोकना बंद होना चाहिए, या फिर उपभोक्ता को तुरंत बैंक रिफंड का विकल्प मिलना चाहिए। दूसरा बड़ा सुधार एकीकृत भुगतान व्यवस्था है। जैसे यूपीआई ने डिजिटल भुगतान को सरल बना दिया, वैसे ही ईवी चार्जिंग के लिए भी एक सामान्य भुगतान प्रणाली होनी चाहिए। उपभोक्ता को हर कंपनी का अलग ऐप और अलग वॉलेट रखने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए। एक ही वॉलेट, एक ही यूपीआई या एक ही राष्ट्रीय प्लेटफॉर्म से सभी कंपनियों के चार्जर पर भुगतान की सुविधा होनी चाहिए। इससे उपभोक्ता का पैसा अलग-अलग कंपनियों के वॉलेट में फंसने से बचेगा, और पूरी व्यवस्था पारदर्शी होगी। तीसरा, चार्जिंग स्टेशन पर वास्तविक समय की जानकारी उपलब्ध होनी चाहिए। उपभोक्ता ऐप पर देख सके कि कौन सा चार्जर चालू है, कौन सा खराब है, कौन सा उपलब्ध है, और कितनी अनुमानित प्रतीक्षा है। कई बार उपभोक्ता लंबी दूरी तय करके चार्जर तक पहुंचता है, और वहां जाकर पता चलता है कि मशीन बंद है। यह स्थिति अस्वीकार्य है। चौथा, कंपनियों की जवाबदेही तय होनी चाहिए। हर चार्जिंग स्टेशन पर हेल्पलाइन नंबर, शिकायत प्रक्रिया और समाधान की समय सीमा स्पष्ट रूप से लिखी होनी चाहिए। यदि चार्जर का गन वाहन में अटक जाए या कोई तकनीकी समस्या आए, तो तत्काल सहायता उपलब्ध होनी चाहिए।

उपभोक्ता को सड़क पर खड़े होकर घंटों इंतजार करना पड़े, यह ईवी इंफ्रास्ट्रक्चर की विफलता है। ईवी का भविष्य तभी सफल होगा, जब चार्जिंग व्यवस्था विश्वसनीय, सरल और उपभोक्ता-अनुकूल होगी। यदि आज आम आदमी यह महसूस कर रहा है कि ईवी चार्जर सुविधा से ज्यादा परेशानी बन गए हैं, तो सरकार और कंपनियों, दोनों को तुरंत आत्ममंथन करना चाहिए। सब्सिडी जनता के पैसे से दी जाती है। इसलिए उसका लाभ भी जनता को मिलना चाहिए, केवल कंपनियों को नहीं। इलेक्ट्रिक वाहन केवल तकनीक का बदलाव नहीं है, यह आम आदमी की जीवनशैली और देश की ऊर्जा दिशा का बड़ा परिवर्तन है। ऐसे परिवर्तन में विश्वास सबसे महत्वपूर्ण होता है। यदि चार्जिंग स्टेशन पर उपभोक्ता का पैसा फंसता रहेगा, सेवा अधूरी रहेगी और शिकायत का समाधान नहीं होगा, तो लोग ईवी से दूरी बनाने लगेंगे। यह सरकार की ईवी नीति और पर्यावरणीय लक्ष्यों, दोनों के लिए नुकसानदायक होगा। अब समय आ गया है कि ईवी चार्जिंग व्यवस्था को अनियंत्रित बाजार के भरोसे न छोड़ा जाए। सरकार को सख्त नियम, पारदर्शी भुगतान प्रणाली, त्वरित रिफंड व्यवस्था और कंपनियों की जवाबदेही सुनिश्चित करनी चाहिए। ईवी चार्जर 'सब्सिडी का खेल' नहीं, बल्कि जनता की सुविधा का माध्यम बनने चाहिए। जब तक आम आदमी को भरोसा नहीं मिलेगा, तब तक इलेक्ट्रिक वाहन क्रांति अधूरी ही रहेगी।

-प्रधान संपादक
रामेश्वरलाल जाट

मोदी के हाथों रिफाइनरी का शुभारंभ, विश्व तेल संकट में भजनलाल सरकार का जलवा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पचपदरा में रिफाइनरी के उद्घाटन के बाद रेगिस्तान के टीले अब सोना उगलेंगे, यह रिफायनरी पश्चिमी राजस्थान ही नहीं बल्कि समूचे राजस्थान को आत्मनिर्भर बनाने में वरदान साबित होगी, इस रिफाइनरी में रोजाना 1.5 लाख बैरल कच्चे तेल को रिफाइन किया जा सकेगा जिससे भारत की पेट्रोल और डीजल से दूसरे देश पर जो निर्भरता है, वह खत्म हो जाएगी और भारत पेट्रोल डीजल का निर्यात करने लग जाएगा

जयपुर। एक तरफ पूरे विश्व में पेट्रोल और डीजल का जोरदार संकट मचा हुआ है, तो दूसरी तरफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले दिनों बालोतरा की पचपदरा में रिफाइनरी का उद्घाटन करके राजस्थान ही नहीं, बल्कि पूरे भारत के विकास की रफ्तार को तेजी से आगे बढ़ाएगी। इसमें कोई संदेह नहीं, करीब 80000 करोड रुपए की लागत से बनकर तैयार हुई यह रिफायनरी राजस्थान के विकास में एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में इतिहास के पन्नों में अपना नाम दर्ज करवाएगी। राजनीतिक विश्लेषक यह भी कहते हैं कि पिछले सवा दो साल में प्रदेश की भजनलाल सरकार ने वैसे तो पानी, बिजली, उद्योग, कृषि, सड़क, पर्यटन, चिकित्सा, रोजगार, महिला और युवा विकास इत्यादि सभी क्षेत्रों में ऐतिहासिक और उत्कृष्ट काम किया, लेकिन इस रिफाइनरी के उद्घाटन से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की जबरदस्त कार्य कुशलता, दूरदर्शी सोच और उनके समर्पित भाव से काम करने की क्षमता से राजस्थान और भारत ही रूबरू नहीं हुआ है, बल्कि पूरा विश्व रूबरू हुआ है। मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठने के पहले दिन से ही भजन लाल शर्मा इस रिफाइनरी के कार्य को जल्दी से जल्दी कंप्लीट करवाने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध नजर आए। रिफाइनरी के कार्य के निर्माण से जुड़े तमाम तरह की समस्याओं का समाधान करने के लिए इन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्र सरकार से जुड़े सभी बड़े लोगों के साथ समय-समय पर बैठक आयोजित करके रिफायनरी को जल्दी से जल्दी शुरू करवाने के प्रयासों को गति देते रहे, उसी का परिणाम है कि विगत 4 जुलाई को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों से इस रिफाइनरी का उद्घाटन हो पाया। बड़ी बात यह है कि इस रिफाइनरी का शिलान्यास भी वर्ष 2018 में मोदी के हाथों से हुआ था, और इसका उद्घाटन भी मोदी के हाथों से ही हुआ। इसीलिए रिफाइनरी के उद्घाटन के अवसर पर मोदी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा था कि भाजपा सरकार जिसका शिलान्यास करती है, उसका उद्घाटन भी करती है।

आम आदमी के लिए इसका सीधा मतलब क्या है ?....

बहुत से लोग सोच सकते हैं कि रिफाइनरी से आम आदमी का क्या लेना देना? इसे बहुत ही सरल शब्दों में समझ सकते हैं। अब तक भारत अपनी जरूरत का अधिकांश कच्चा तेल विदेश से खरीदता था, और फिर उसे देश के अलग-अलग हिस्सों में साफ किया जाता है। पचपदरा की यह रिफाइनरी इतनी विशाल है कि यह हर दिन देश की लाखों कार, बाइक, और ट्रकों की टंकी फुल करने जितना ईंधन अकेले तैयार कर सकती है। जब हमारे अपने देश में आयातित तेल के साथ-साथ हमारी अपनी जमीन से निकलने वाले तेल को अत्याधुनिक तकनीक से साफ किया जाएगा, तो देश का पैसा बाहर जाने से बचेगा।

रिफाइनरी में एचपीसीएल की 74 प्रतिशत और राजस्थान सरकार की 26 प्रतिशत हिस्सेदारी

जानकारी के अनुसार यह परियोजना हिंदुस्तान पैट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड और राजस्थान सरकार की संयुक्त ताकत का नतीजा है। इसमें हिंदुस्तान पैट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड की 74 प्रतिशत और राजस्थान सरकार की 26 प्रतिशत हिस्सेदारी है। यह रिफाइनरी केवल तेल साफ नहीं करेगी, बल्कि बाड़मेर के बेसिन से निकलने वाले कच्चे तेल को सीधे इस्तेमाल के योग्य बनाएगी, जिससे परिवहन का खर्चा बचेगा और देश में स्वच्छ ईंधन की सप्लाई सुनिश्चित होगी। रिफाइनरी को धरातल पर उतारने के लिए 79450 करोड रुपए से अधिक का भारी भरकम पूंजी निवेश किया गया है। हालांकि शुरू में वर्ष 2009 में जब अशोक गहलोत राजस्थान के मुख्यमंत्री थे, उस समय इस रिफाइनरी की लागत करीब 37000 करोड रुपए से ज्यादा आंकी गई थी, लेकिन बाद में इस रिफाइनरी का निर्माण कार्य अटक गया। इसके बाद वर्ष 2018 में तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों से रिफाइनरी के निर्माण कार्य का शिलान्यास करवाया और रिफाइनरी की अनुमानित लागत करीब 43000 करोड़ से ज्यादा बाकी गई थी, लेकिन बाद में प्रदेश में कांग्रेस पार्टी की सरकार का गठन हो गया। जैसा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 4 जुलाई को रिफाइनरी के उद्घाटन के दौरान कहा कि पिछली सरकार का रिफाइनरी के मामले में ठीक तरह से सहयोग नहीं मिला, इसकी वजह से रिफाइनरी का निर्माण कार्य ठीक तरह से संपादित नहीं हो पाया। तो दूसरी तरफ कांग्रेस पार्टी के नेताओं का कहना है कि कोरोना महामारी के बावजूद भी पिछली सरकार के दौरान रिफाइनरी का निर्माण कार्य जारी रहा था, लेकिन सच्चाई यही थी कि रिफाइनरी का निर्माण कार्य निर्धारित अवधि में संपादित नहीं हो पाया और यह रिफाइनरी राजस्थान सरकार, केंद्र सरकार और तेल कंपनी के लिए बड़ी चुनौती और मुश्किल बनी रही। लेकिन वर्ष 2023 में प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार के गठन होने के बाद नए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस रिफाइनरी के निर्माण कार्य से जुड़े सभी विषयों और आर्थिक समस्याओं से जुड़े मामलों को केंद्र सरकार के साथ प्रभावी बातचीत करके सुलझाया। प्रदेश में भजनलाल सरकार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पूरा आशीर्वाद रहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी इस रिफाइनरी को जल्दी से जल्दी शुरू करवाने के लिए पूरी तरह से संकल्पित नजर आए, इसीलिए रिफायनरी के निर्माण कार्य और आर्थिक मामलों से जुड़े सभी विषयों को केंद्र सरकार ने राजस्थान सरकार और हिंदुस्तान पैट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड प्रशासन से जुड़े लोगों को एक टेबल पर बिठाकर रिफाइनरी के निर्माण कार्य को युद्ध स्तर पर तेजी से आगे बढ़ाने के निर्देश दिए। इसी का परिणाम रहा की पिछले सवा दो साल में रिफाइनरी के निर्माण कार्य को जबरदस्त तरीके से गति मिली और आखिरकार पिछले एक दशक से अधूरी पड़ी यह रिफाइनरी बनकर तैयार हुई। हालांकि प्रदेश की भजनलाल सरकार ने रिफाइनरी की अनुमानित लागत करीब 79450 करोड रुपए सुनिश्चित भी कार्रवाई, क्योंकि कोरोना महामारी और अन्य कई वजह से रिफाइनरी के निर्माण कार्य में प्रयुक्त होने वाली सामग्रियों की कीमत और मानवीय श्रम में जबरदस्त वृद्धि हुई थी, इसलिए रिफाइनरी की कास्ट भरना भी स्वाभाविक था। लेकिन कुल मिलाकर इस रिफाइनरी को शुरू करवा कर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अपनी प्रशासनिक कुशलता को सिद्ध करके दिखाया।

रिफाइनरी के शुभारंभ से पश्चिमी राजस्थान में भाजपा की लोकप्रियता में जबरदस्त बढ़ोतरी

राजनीतिक विश्लेषक्ति मानते हैं कि पचपदरा में रिफाइनरी के शुभारंभ से पश्चिमी राजस्थान में कहीं ना कहीं भारतीय जनता पार्टी की लोकप्रियता में भी जबरदस्त वृद्धि होगी, क्योंकि रिफाइनरी से बालोतरा, पचपदरा, बाड़मेर क्षेत्र के लोगों के जीवन में ही खुशी नहीं आई है, बल्कि इस रिफाइनरी का असर बाड़मेर के अलावा पश्चिमी राजस्थान के सभी जिलों में व्यापक स्तर पर पड़ेगा। क्योंकि रिफायनरी से बड़ी संख्या में यहां रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं और इलाके में बड़ी संख्या में नए-नए उद्योग धंधे विकसित हो रहे हैं, जो कहीं ना कहीं कश्मीर राजस्थान के यहां रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं और इलाके में बड़ी संख्या में नए-नए उद्योग धंधे विकसित हो रहे हैं जो कहीं ना कहीं पश्चिमी राजस्थान के सभी जिलों के बेरोजगार युवाओं को रोजगार देने में वरदान साबित हो रहे हैं। इसलिए जिस घर में रोजगार के अच्छे अवसर बनेंगे, उस घर के सदस्य मतदान करने के दौरान अपने सामने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का चेहरा देख कर ही मतदान करेंगे। क्योंकि मोदी और भजनलाल शर्मा के प्रयासों से कई सालों से अधूरी पड़ी रिफाइनरी कंपलीट हुई, जिसका सीधा सा मतलब यही निकला जा सकता है कि कहीं ना कहीं भारतीय जनता पार्टी के प्रति पश्चिमी राजस्थान के जिलों में रहने वाले लोगों का आकर्षण और बढ़ेगा, जो भाजपा को निश्चित रूप से मजबूती प्रदान करेगा। इसलिए इस रिफाइनरी से आगामी विधानसभा और लोकसभा चुनाव में भी भारतीय जनता पार्टी को काफी फायदा हो सकता है। क्योंकि पश्चिमी राजस्थान के जिले जो अब से पहले रेगिस्तान के लिए जाने जाते थे और विकास के मामले में राजस्थान के अन्य जिलों से काफी पीछे रहते थे, आज पश्चिमी राजस्थान के जिले पचपदरा की रिफाइनरी से मॉडल तरीके से विकसित हो रहे हैं। रेगिस्तान अब हरियाली में नजर आने लगा है। बड़ी-बड़ी इमारतें, बड़ी-बड़ी स्कूल, बड़े-बड़े हॉस्पिटल, मजबूत सड़के और मॉडर्न तरीके से बसाई जा रही कालोनियां पश्चिमी राजस्थान को अब एक नया लुक दे रही है। इसलिए इतना बड़ा क्रांतिकारी बदलाव देखकर पश्चिमी राजस्थान में रहने वाले लोगों का निश्चित रूप से भारतीय जनता पार्टी की सरकार के प्रति लगाव और जुड़ाव मजबूत होगा, जो भाजपा की चुनावी जीत के रास्ते को भी आसान बनाएगा।

रिफाइनरी से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां

जानकारी के अनुसार पचपदरा की रिफाइनरी हर साल 9 मिलियन मेट्रिक टन कच्चे तेल को प्रोसेस करने की क्षमता रखती है। पचपदरा में हर दिन करीब 1.8 लाख बैरल कच्चे तेल की सफाई की जाएगी, जो न्यूजीलैंड और वियतनाम जैसे देशों की कुल क्षमता से भी अधिक है। तेल के साथ-साथ यहां हर साल 2.4 मिलियन मेट्रिक टन मूल्यवान पेट्रो केमिकल उत्पादन का निर्माण भी होगा। इस रिफाइनरी का नेल्सन कंपलेक्सिटी इंडेक्स 17.0 है, यानी यह दुनिया की सबसे उन्नत रिफाइनरी में से एक है। भारत अपनी जरूरत के लिए अलग-अलग देशों से हल्का, भारी हर तरह का कच्चा तेल आयात करता है, और यह रिफाइनरी सबको रिफाइन कर सकती है। इस रिफाइनरी का पेट्रोकेमिकल यील्ड 26 प्रतिशत से अधिक है, जो वैश्विक स्तर पर इसे सबसे कुशल संयंत्र की कतार में खड़ा करता है। यह रिफाइनरी प्लांट पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए पूरी तरह से पेट्रोल और डीजल का उत्पादन करेगी। यह संयंत्र पूरी तरह चालू होने से भारत के सालाना तेल आयात बिल में अरबो रुपए के बचत होने का अनुमान है, तथा इस रिफाइनरी से परियोजना के निर्माण और संचालन चरण को मिलाकर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हजारों लोगों को रोजगार मिल रहा है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पर्सनालिटी में भी लगे चार चांद

पिछले सवा दो साल में प्रदेश में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में पानी, बिजली, सड़क, शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार, उद्योग, युवा और महिला विकास इत्यादि सभी क्षेत्रों में ऐतिहासिक विकास कार्य हुए। इसलिए अपनी वर्किंग स्टाइल, दूरदर्शी सोच तथा ईमानदारी से भजनलाल शर्मा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह और मोदी सरकार के सभी मंत्रियों तथा पार्टी हाई कमान को काफी प्रभावित किया हुआ है। इसलिए भजनलाल शर्मा को अन्य राज्यों के भाजपा शासित मुख्यमंत्री की तुलना में ज्यादा अहमियत मोदी सरकार से मिल रही है। अब जिस तरह से पचपदरा की रिफाइनरी का शुभारंभ हुआ है, उसके बाद भजन लाल शर्मा की राजनीतिक और प्रशासनिक कुशलता के ग्राफ में जबरदस्त इजाफा हुआ है। क्योंकि यह रिफाइनरी पिछले 15 साल से राजस्थान सरकार, केंद्र सरकार और हिंदुस्तान पैट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड के लिए तो बड़ी चुनौती और मुश्किल बनी हुई थी ही, इसके अलावा प्रदेश के लोग भी इस रिफाइनरी को लेकर असमंजस की स्थिति में नजर आ रहे थे। लेकिन पिछले सवा दो साल में मुख्यमंत्री बनने के बाद भजनलाल शर्मा ने इस रिफाइनरी को शुरू करवाने के लिए जो मेहनत और भागदौड़ की, और केंद्र सरकार से लगातार संपर्क करके रिफाइनरी के कार्य को तेजी से आगे बढ़ते रहे, उसी का परिणाम रहा कि यह रिफायनरी कंप्लीट रूप से तैयार हो सकी। इसलिए इस रिफाइनरी के पीएम नरेंद्र मोदी के हाथों उद्घाटन करवाने के बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा नेभी प्रदेश के इतिहास के पन्नों में अपना खुद का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित करवा लिया है।

देश की पहली ग्रीन फील्ड इंटीग्रेटेड रिफायनरी

पचपदरा रिफाइनरी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह भारत का पहला ऐसा प्रोजेक्ट है जहां रिफाइनरी और पेट्रोल केमिकल कंपलेक्स दोनों एक साथ विकसित किए गए हैं। आमतौर पर देश में रिफाइनरी या केवल कच्चे तेल को शुद्ध कर पेट्रोल और डीजल जैसे ईंधन तैयार करती है, लेकिन पचपदरा रिफाइनरी इससे कहीं आगे बढ़कर पेट्रोल केमिकल उत्पादों का भी बड़े स्तर पर निर्माण करेगी। यह कारण है कि इस परियोजना को केवल एक रिफाइनरी नहीं बल्कि एक इंटीग्रेटेड इंडस्ट्रियल हब माना जा रहा है, जो कच्चे तेल से लेकर उच्च मूल्यवान औद्योगिक उत्पादको तैयार करेगा। यहां रिफाइनरी में केवल पेट्रोल, डीजल और केरोसिन जैसे ईंधन ही नहीं बनाए जाएंगे, बल्कि कई उच्च मूल्य वाले औद्योगिक उत्पादन भी तैयार होंगे, जिसमें पालीएथिलीन, बेटाडिन, बेंजीन, पालीप्रोइ लीन जैसे बड़े उत्पाद भी शामिल हैं। इससे भारत में पेट्रोकेमिकल उत्पादों के आयात पर निर्भरता कम होगी और घरेलू उद्योगों को आवश्यक कच्चा माल देश में ही उपलब्ध हो सकेगा। आधुनिक तकनीक से तैयार इस रिफाइनरी में पर्यावरण सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है, जिससे वाहनों से होने वाले प्रदूषण में भी कमी आएगी। इसके अलावा रिफाइनरी में जीरो लिक्विड डिसचार्ज तकनीक अपनी गई है। इस तकनीक के तहत औद्योगिक अपशिष्ट जल का दोबारा उपयोग किया जाएगा और किसी भी प्रकार का प्रदूषित पानी बाहर नहीं छोड़ा जाएगा।

इस रिफाइनरी से भारत दुनिया के कई देशों को तेल के मामले में पीछे छोड़ देगा

अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी का कहना है कि भारत आने वाले वर्षों में तेल की मांग के मामले में इस रिफाइनरी से दुनिया के सबसे बड़े देशों को भी पीछे छोड़ देगा। ऐसे समय में पचपदरा रिफाइनरी का उद्घाटन देश की ऊर्जा सुरक्षा के लिए एक सुरक्षा कवच की तरह है। यह रेगिस्तान के सुनहरे भविष्य की शुरुआत है, जो पूरे भारत को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने का दम रखती है। यह रिफाइनरी भारत की दूसरे देशों पर निर्भरता को और काम करने के साथ देश की तेल निर्यात करने की क्षमता को बढ़ाएगी। 487 किलोमीटर लंबी पाइप लाइन के माध्यम से रिफाइनरी को सीधा मुंद्रा पोर्ट से कनेक्ट किया गया है। रूस और खाड़ी देशों से आयातित तेल सीधा यहां रिफाइन होने के लिए आएगा। रिफाइनरी से जहां तक एक और राजस्थान सरकार को 5000 करोड़ की सालाना इनकम होगी, तो वहीं स्थानीय लोगों का जीवन भी बेहतर हो रहा है। इस रिफाइनरी से आसपास के गांव में सड़क बेहतर हो गई है, स्कूल बन गए हैं, अस्पताल बन रहे हैं, गांव में पानी की पाइपलाइन आ गई है। रिफाइनरी के इंजीनियर और अधिकारियों के लिए टाउनशिप बन गई है। इस रिफाइनरी की वजह से आसपास के जिलों के युवा यहां नौकरी के अवसर तलाश रहे हैं। बड़ी संख्या में यहां युवाओं को रोजगार मिला हुआ है, जिसकी वजह से लोगों का जीवन स्तर भी तेजी से सुधार रहा है। इसके अलावा यहां जमीनों की कीमत भी कई गुना ज्यादा बढ़ गई है, क्योंकि आसपास का पूरा इलाका अब मिनी सिटी की तरह विकसित हो रहा है, जो क्षेत्र के विकास को एक नई दिशा दे रहा है।

पेट्रोकेमिकल कंपलेक्स होगा असली गेम चेंजर

आमतौर पर पुरानी रिफाइनरी में केवल पेट्रोल, डीजल और केरोसिन ही बनता था, लेकिन पचपदरा की सबसे बड़ी खासियत इसकी पेट्रोकेमिकल यूनिट है। यह यूनिट प्लास्टिक, टेक्सटाइल, पेंट, फार्मास्यूटिकल्स और कॉस्मेटिक उद्योगों के लिए जरूरी कच्चा माल तैयार करेगी। वर्तमान में भारत को इन पेट्रोल केमिकल उत्पादन के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता है। सरकार के विजन के अनुसार यह कंपलेक्स उत्तर पश्चिम भारत के लिए एक बहुत बड़ा इंडस्ट्रियल इंजन बनने जा रहा है। इस रिफाइनरी के आसपास एक विशाल पेट्रोल केमिकल और प्लास्टिक पार्क विकसित किया जा रहा है। इसका मतलब यह है कि आने वाले समय में यहां छोटे-छोटे हजारों नए कारखाने खुलेंगे। जब नए उद्योग लगेंगे तो स्थानीय युवाओं को नौकरी के लिए गुजरात, महाराष्ट्र और दिल्ली भागने की जरूरत नहीं होगी, उनके अपने घर यानी बालोतरा, बाड़मेर और पूरे राजस्थान में ही रोजगार के शानदार अवसर उपलब्ध होंगे। राजस्थान का यह इलाका कभी अपनी विरानियत और पानी की किल्लत के लिए जाना जाता था, लेकिन आज यहां का नजारा पूरी तरह बदल चुका है। जहां तक दूर-दूर तक सिर्फ रेट के तिल दिखाई देते थे, वहां आज चमचमाती सड़क, आधुनिक टाउनशिप और दुनिया की सबसे बेहतरीन तकनीक से गैस पाइपलाइन का जाल बिछ चुका है।

कांग्रेस सेवा दल में इतिहास पुरुष माने जाने वाले सुरेश चौधरी का क्यों टूटा दिल!

राजस्थान कांग्रेस सेवा दल और कांग्रेस पार्टी के संगठन के प्रमुख स्तंभकार रहे जाट समाज के इस वरिष्ठ नेता की कांग्रेस पार्टी की सालों की तपस्या का क्यों हुआ दुखद अंत? क्या बीजेपी जाट समाज की इस ग्रेट पर्सनालिटी का अब समुचित उपयोग कर पाएगी?

जयपुर। प्रदेश में जाट समाज के वरिष्ठ नेता सुरेश चौधरी का नाम लेते ही कांग्रेस पार्टी के सेवादल की एक अभूतपूर्व तस्वीर हर किसी की आंखों में तैरने लग जाती है, क्योंकि राजस्थान में कांग्रेस सेवादल के संगठन को सक्रिय और गतिशील बनाने में सुरेश चौधरी की भूमिका को आज कांग्रेस जन उनके पार्टी छोड़कर चले जाने के बाद भी याद करते हैं। राजस्थान में सेवादल के संगठन को जिन बुलंदियों पर चौधरी ने पहुंचाया, वैसा करिश्मा राजस्थान सेवादल के अब तक के इतिहास में शायद ही किसी नेता ने किया हो, क्योंकि राजस्थान कांग्रेस के आधा दर्जन से ज्यादा प्रदेश अध्यक्षों के कार्यकाल के दौरान चौधरी राजस्थान में सेवादल के मुखिया बने रहे, जो यह दिखाता है कि राजस्थान और दिल्ली में बैठे सेवादल और पार्टी के तमाम बड़े नेता चौधरी के सेवादल में किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यो से कितने प्रभावित और संतुष्ट थे। इसीलिए राजस्थान में कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष तो समय-समय पर बदलते रहे, लेकिन पार्टी के रणनीतिकारों ने चौधरी के हाथों से सेवा दल की कमान वापस लेना मुनासिब नहीं समझा। इसीलिए राजस्थान कांग्रेस में सेवादल से जुड़े लोग अब चौधरी के भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने के बाद भी उनके सेवादल में किए गए प्रयासों और कार्यों को नहीं भूले हैं। बहुत से नेता तो यह कहते हैं कि राजस्थान में सेवादल चौधरी से ही शुरू हुआ और चौधरी के जाते ही सेवादल विलुप्त हो गया। हालांकि कांग्रेस पार्टी में सालों से सेवादल कांग्रेस पार्टी की आत्मा रहा है और राजस्थान सेवादल में भी कांग्रेस पार्टी के बड़े-बड़े नेताओं ने काम किया, लेकिन करीब 10 साल तक सुरेश चौधरी ने जिस सक्रियता और समर्पण भाव से सेवादल का राजस्थान में संचालन किया और सेवादल को बुलंदियों पर पहुंचाया, ऐसा राजस्थान में कांग्रेस पार्टी के इतिहास में अब तक देखने को नहीं मिला। हालांकि सुरेश चौधरी ने सेवादल के अलावा कांग्रेस पार्टी के संगठन में भी बड़ी-बड़ी भूमिका निभाई, लेकिन सेवा दल में उनकी ओर से किए गए कार्य और उनका कार्यकाल हमेशा हमेशा के लिए स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गया है। भले ही आज सुरेश चौधरी कांग्रेस पार्टी को छोड़कर भाजपा में चले गए हो, लेकिन कांग्रेस पार्टी के संगठन को गति देने और कांग्रेस पार्टी में जिस सक्रियता और मेहनत के साथ उन्होंने सालों तक काम किया, उनका काम आज भी प्रदेश कांग्रेस के कार्यालय में कांग्रेसजनों में हमेशा चर्चा का विषय बना रहता है। यह बात अलग है कि सुरेश चौधरी को कांग्रेस पार्टी में सालों की तपस्या और कड़ी मेहनत

को कांग्रेस पार्टी के रणनीतिकारों ने दिल से तो खूब महसूस किया, लेकिन इस मेहनत का प्रतिफल सुरेश चौधरी को देने में पार्टी के रणनीतिकार हमेशा कंजूसी करते रहे। अन्यथा एक बार नहीं, कई बार विधानसभा चुनाव में पार्टी के टिकट के लिए चौधरी का नाम फुलेरा, आमेर, नवलगढ़ विधानसभा सीटों के लिए पैनल में टॉप पर चला, लेकिन उन्हें कभी भी टिकट नहीं मिला, जिसका मलाल चौधरी ही नहीं बल्कि सेवादल के लाखों कार्यकर्ताओं और जाट समाज के लोगों को आज तक भी है। फिलहाल सुरेश चौधरी राजस्थान भाजपा की शोभा बढ़ा रहे हैं। पिछले विधानसभा चुनाव और लोकसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस पार्टी के कई बड़े कई बड़े नेताओं ने कांग्रेस का दामन छोड़कर भाजपा का दामन पकड़ लिया था, उनमें सुरेश चौधरी भी शामिल हैं। अब देखने वाली बात यह है कि सुरेश चौधरी, जो न केवल एक वरिष्ठ और कुशल लोकप्रिय राजनेता के रूप में राजस्थान की राजनीति में माने जाते हैं, बल्कि उद्योग जगत में भी इन्होंने खुद को साबित किया है। इसके अलावा सामाजिक सरोकारों के कामों और जाट समाज ही नहीं, बल्कि हर जाति और बिरादरी से जुड़े बड़े-बड़े संगठनों के साथ इनकी मित्रता और अच्छे संबंध हैं। उन्हें देखते हुए राजस्थान बीजेपी चौधरी का आने वाले समय में कैसे और किस तरह से उपयोग करती है, यह काफी दिलचस्प रहेगा।

जाट समाज के लोकप्रिय और कद्दावर नेताओं में होती है गिनती

राजनीतिक विश्लेषक भी यह मानते हैं कि भले ही सुरेश चौधरी जाट समाज से ताल्लुक रखते हो, लेकिन चौधरी के पिता रामदेव सिंह और इनके पुरखों की सामाजिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि इतनी मजबूत और लोकप्रिय थी कि हर जाति और बिरादरी के लोग सालों से इनके परिवार से दिल से जुड़े हुए हैं। बाद में पहले सुरेश चौधरी के पिता और फिर खुद सुरेश चौधरी ने राजस्थान की राजनीति और उद्योग जगत में खुद को साबित करके दिखाया, और पैसा कमाने के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों के कार्यों में भी खुद को समर्पित करके रखा। उसी का परिणाम है कि सुरेश चौधरी सिर्फ जाट समाज नहीं, बल्कि हर जाति और बिरादरी के संगठनों में अपने मिलनसार व्यवहार से अच्छा सम्मान हासिल किए हुए है। जहां तक राजस्थान के जाट समाज के संगठनों की बात है, तमाम जाट समाज के संगठन सुरेश चौधरी की सक्रियता, कर्मठता और जमीनी जुड़ाव से अच्छी तरह से वाकिफ है। इसलिए राजस्थान जाट समाज के संगठनों की ओर से संपादित किए जाने वाले तमाम तरह के कार्यों और गतिविधियों में सुरेश चौधरी की सालों से हमेशा अग्रिम भूमिका रही है। चाहे जाट सम्मेलन करवाने की बात हो, या फिर जाट समाज से जुड़े विषयों और मामलों को सरकारों के समक्ष उठाने की बात हो, या फिर जाट समाज के कल्याण और विकास के लिए काम करने की बात हो, या फिर समाज को आर्थिक सहयोग करने की बात हो, हर जगह सुरेश चौधरी अग्रिम पंक्ति में नजर आते हैं। इसीलिए राजस्थान जाट समाज की जब कोई बड़ी पंचायत होती है, उसमें सुरेश चौधरी हमेशा अग्रिम पंक्ति में बैठे नजर आते हैं।

पीसीसी चीफ गोविंद सिंह डोटासरा भी कहीं ना कहीं सुरेश चौधरी को कर रहे हैं मिस

सुरेश चौधरी ने अपने जीवन का लंबा समय कांग्रेस पार्टी में समर्पित भाव से बिताया, राजस्थान में कांग्रेस की सेवादल की इकाई के करीब 10 साल तक मुखिया रहे। सेवादल की बागडोर हाथ में लेने से पहले भी सेवादल के संगठन से जुड़े सभी बड़े-बड़े पदों पर काम किया, लेकिन सेवादल के मुखिया के तौर पर उनका कार्यकाल राजस्थान सेवा दल के इतिहास में एक अच्छे अध्याय के रूप में हमेशा याद किया जाएगा। क्योंकि इन्होंने सेवादल के संगठन को गति देने के साथ-साथ प्रदेश भर में सेवादल की ओर से किए जाने वाले कार्यों का शानदार तरीके से विस्तार किया, वह कांग्रेस पार्टी के संगठन को मजबूती देने में भी हमेशा सहायक साबित हुआ। इनके सेवादल के 10 साल के कार्यकाल में प्रदेश भर में सेवादल अपनी गतिविधियों को लेकर हमेशा कांग्रेस पार्टी में ही नहीं, बल्कि अन्य विरोधी दलों में भी चर्चा का विषय बना रहा। प्रदेश के लोग भी सेवादल को खूब पसंद करते नजर आए। इसीलिए राजस्थान में कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष पद पर नए-नए नेताओं की नियुक्ति होती रही, लेकिन हर प्रदेश अध्यक्ष ने सुरेश चौधरी को सेवादल का मुखिया बनाए रखा। गिरिजा व्यास, नारायण सिंह, बीडी कल्ला, डॉ. चंद्रभान, सीपी जोशी, सचिन पायलट इन सब नेताओं ने राजस्थान कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर रहने के दौरान सुरेश चौधरी के कार्यों से खुश होकर चौधरी को ही सेवादल का मुखिया बनाए रखा। इसीलिए कांग्रेस पार्टी के गलियारों में आजकल यह चर्चा सुनने को मिल जाती है कि कहीं ना कहीं राजस्थान कांग्रेस के मौजूदा अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा सुरेश चौधरी को जरूर मिस कर रहे होंगे। क्योंकि एक तरफ राजस्थान कांग्रेस से कई बड़े जाट नेता पार्टी छोड़कर जा चुके हैं, तो दूसरी तरफ सुरेश चौधरी जैसा समर्पित और निष्ठावान नेता जो जाट समाज में तो सम्मानित और पॉपुलर है ही, साथ-साथ जिसने अब तक के अपने जीवन का अधिकांश समय सेवादल और कांग्रेस पार्टी के संगठन को मजबूती देने के अलावा राजस्थान कांग्रेस के मुख्यालय में बिताया, उस नेता को प्रदेश कांग्रेस के मुख्यालय में आज नहीं देखकर गोविंद सिंह डोटासरा भी कहीं ना कहीं अंदरूनी तौर पर अफसोस जरुर प्रकट कर रहे होंगे। क्योंकि राजस्थान कांग्रेस के प्रधान कार्यालय में सुरेश चौधरी की मौजूदगी मात्र से ही पार्टी कार्यालय में मौजूद नेता खुद को तरोताजा महसूस किया करते थे, क्योंकि चौधरी हमेशा अपने अच्छे मिलनसार व्यवहार और ठेठ ग्रामीण अंदाज में कांग्रेस जनों में अपनी एक अलग शानदार छवि कई सालों से बना कर रखे हुए थे। लेकिन उनके भाजपा में चले जाने के बाद राजस्थान कांग्रेस के मुख्यालय में बैठने वाले लोग आज भी उनके बारे में अक्सर चर्चा करते रहते हैं।

सुरेश चौधरी ने गुटबाजी से खुद को हमेशा दूर रखा

कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुए सुरेश चौधरी के बारे में आज भी कांग्रेस पार्टी में यही चर्चा होती है कि उन्होंने हमेशा कांग्रेस पार्टी में रहते हुए कांग्रेस पार्टी को ही अपनी मां माना, और एक कर्मठ और सच्चे बेटे की तरह कांग्रेस पार्टी को मां मानकर सेवा की। इस दौरान राजस्थान कांग्रेस पार्टी में बड़े-बड़े नेताओं के बीच आपस में बड़े स्तर पर गुटबाजी भी होती रही, लेकिन इन्होंने हमेशा पार्टी के सभी नेताओं के साथ संतुलन और समन्वय बनाकर काम किया और खुद को किसी भी बड़े नेता के साथ जोड़कर नहीं रखा। बल्कि कांग्रेस पार्टी के सिंबल को ही अपना सब कुछ मानकर पार्टी ने इन्हें जो भी जिम्मेदारी दी उस जिम्मेदारी को शानदार तरीके से निभाया। कई बार टिकट कटने के बावजूद भी इन्होंने बगावती तेवर नहीं अपने, बल्कि सब कुछ ईश्वर के भरोसे छोड़कर समर्पित भाव से कांग्रेस पार्टी की सेवा करते रहे। इसीलिए सुरेश चौधरी जब तक कांग्रेस में रहे कांग्रेस पार्टी के छोटे बड़े सभी नेताओं में काफी लोकप्रिय और सम्मानित नेता के रूप में नजर आए। अब भारतीय जनता पार्टी में भी सुरेश चौधरी एक अनुशासित नेता के रूप में खुद को स्थापित किया है।

जयपुर में राजनीति के साथ साथ औद्योगिक क्षेत्र में भी खूब नाम कमाया

जानकारी के अनुसार सुरेश चौधरी मुख्य रूप से झुंझुनू जिले में नवलगढ़ इलाके में बड़वासी गांव के रहने वाले हैं, और किसान परिवार में जन्म लेने से किसान और खेती के प्रति इनका जुड़ाव बचपन से ही रहा। प्रारंभिक शिक्षा ग्रामीण क्षेत्र में ही सरकारी स्कूल में कंपलीट हुई, बाद में चौधरी के पिता रामदेव सिंह कारोबार के सिलसिले में कोलकाता चले गए और वहां कारोबार की तमाम तरह की बारीकियां को समझा। और कोलकाता में बड़ी संख्या में रह रहे शेखावाटी क्षेत्र के कारोबारी में रामदेव सिंह ने अपनी अच्छी छवि कायम की। इस दौरान इनके बिजनेस पार्टनर जो शेखावाटी क्षेत्र के ही थे, उनका कोलकाता में किसी से जोरदार टकराव और झगड़ा हो गया, इसलिए रामदेव सिंह के हाथ में ही पूरा कारोबार सौंप कर इनका पार्टनर वापस यहां शेखावाटी लौट आया। लेकिन रामदेव सिंह ने कोलकाता में कठिन और विपरीत परिस्थितियों में कारोबार के क्षेत्र में अच्छी सफलता हासिल की, और फिर बाद में उन्होंने जयपुर में झोटवाड़ा और विश्वकर्मा औद्योगिक क्षेत्र में औद्योगिक इकाइयां स्थापित कर जयपुर को अपनी कर्म स्थली बनाया। इसलिए कारोबार का संचालन करने के लिए सुरेश चौधरी भी यहां जयपुर आकर अपने पिता के कारोबार को शानदार तरीके से संचालित करते रहे। इस दौरान व्यक्तिगत प्रॉब्लम्स के चलते इनके पिता को वापस अपने गांव जाना पड़ा, लेकिन जयपुर में सुरेश चौधरी राजनीति के साथ-साथ उद्योग जगत में भी अपना प्रभाव लगातार बढ़ाते रहे। एक तरफ राजनीतिक व्यस्तता, दूसरी तरफ परिवार का कारोबार, दोनों ही जिम्मेदारियां को शानदार तरीके से निभाते रहे। इस दौरान जाट समाज से जुड़ी गतिविधियों और सामाजिक सरोकारों के कार्यों में भी जबरदस्त तरीके से अपनी भूमिका निभाते रहे। कांग्रेस पार्टी में सेवादल में तो कई सालों तक उनकी उल्लेखनीय भूमिका रही ही, इसके अलावा कांग्रेस पार्टी के संगठन में भी बड़ी-बड़ी भूमिकाओं पर काम किया। इसलिए सुरेश चौधरी की राजनीति कांग्रेस पार्टी में जयपुर और झुंझुनू तक ही सीमित नहीं रह गई थी, बल्कि चौधरी की गिनती कांग्रेस पार्टी के कुशल और वरिष्ठ नेताओं में कई सालों तक होती रही। लेकिन जब चुनाव में टिकट देने का समय आया तो पार्टी के रणनीतिकारों ने इन्हें जो अवसर देना चाहिए था वह अवसर नहीं दिया। आज भले ही सुरेश चौधरी विधायक और सांसद नहीं बन पाए हो, लेकिन उन्होंने अपने व्यवहार, नैतिक आचरण और सामाजिक सरोकारों के कामों से जो लोकप्रियता जाट समाज ही नहीं बल्कि हर जाति और बिरादरी के लोगों से मिली है, वह सम्मान और लोकप्रियता किसी विधायक और सांसद को भी नहीं मिलती। आज जयपुर में सुरेश चौधरी का चौधरी होटल राजनीतिक और व्यापारिक गतिविधियों का एक बड़ा केंद्र बना हुआ है, जहां राजनीति के साथ-साथ व्यापार जगत से जुड़े लोगों का भी हमेशा जमावड़ा लगा रहता है। इसलिए सुरेश चौधरी एक कर्मठ और मजबूत छवि वाले राजनेता होने के साथ-साथ एक सफल कारोबारी के रूप में माने जाते हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खेती और किसान के कल्याण और विकास के लिए किए गए कार्यों से काफी खुश और प्रभावित हैं सुरेश चौधरी

भले ही सुरेश चौधरी एक कर्मठ और श्रेष्ठ राजनेता और उद्योगपति हो, लेकिन खेती से आज भी इनका सीधा जुड़ाव है। किसान और खेती आज भी इनकी आत्मा में बसी हुई है। किसान और खेती के कल्याण और विकास को लेकर केंद्र की मोदी सरकार ने जो कार्य किया, उनको लेकर सुरेश चौधरी काफी खुश और प्रभावित हैं। शायद इसीलिए इन्होंने कांग्रेस पार्टी को छोड़कर भाजपा ज्वाइन की हो। अब भाजपा में इनका सफर कैसा रहेगा यह तो आने वाला समय बताएगा, लेकिन चौधरी राजनीति के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों के कार्यों को ज्यादा महत्व देते हैं, और जब भी समय मिलता है या इन्हें किसी भी सामाजिक कार्य में बुलाया जाता है, उसके लिए हमेशा खुद को तैयार रखते हैं। इसलिए इन्हें विधायक और सांसद नहीं बनने का बिल्कुल भी अफसोस नहीं है, क्योंकि जाट समाज और अन्य जाति और बिरादरी के लोगों से इन्हें सामाजिक सरोकारों के कामों के बदले जो प्यार और सम्मान मिल रहा है, ऐसा सम्मान हर किसी राजनेता को नहीं मिलता। इसलिए चौधरी उन नेताओं में है जो हमेशा करम इमानदारी और समर्पित भाव से कर्म करने में विश्वास रखते हैं, ईश्वर फल दे या नहीं दे इसके बारे में ज्यादा विचार नहीं करते। चौधरी का यही कहना है कि समाज के लिए ज्यादा से ज्यादा काम आ सकूं यही मेरी हमेशा से इच्छा शक्ति रही है, और इसी इच्छा शक्ति की वजह से उन्हें जाट समाज नहीं बल्कि हर जाति और बिरादरी के लोगों में अच्छा सम्मान मिला है, जिसकी वजह से उन्हें एक अलग ही आनंद की अनुभूति होती है। चौधरी इस बात को लेकर भी काफी खुश है कि वर्तमान में राजस्थान और केंद्र दोनों ही जगह पर भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, और दोनों ही सरकारी किसान और खेती के कल्याण और विकास को लेकर समर्पित भाव से काम कर रही है। ऐसे में उनका भाजपा में शामिल होना कुछ खास बन जाता है।

सुरेश चौधरी के परिवार का जनता दल लोक दल से भी रहा गहरा जुड़ाव

जानकार लोगों का कहना है कि सुरेश चौधरी का जन्म एक समृद्ध और खुशहाल किसान परिवार के घर में हुआ। इनके पूर्वज खेती से ही अपना जीवन यापन किया करते थे, लेकिन इनके पूर्वजों का और खास तौर से उनके पिता रामदेव सिंह का इलाके में बहुत अच्छा प्रभाव था। इसलिए सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में इनके परिवार की शुरू से ही शानदार सक्रियता रही है, इसलिए इलाके के लोगों में इनके परिवार के प्रति जबरदस्त आदर भाव और सम्मान रहा है। इनके पिता लोगों के सुख-दुख में हमेशा खड़े नजर आते थे, इसलिए क्षेत्र के लोगों में चौधरी के परिवार का शुरू से ही अच्छा प्रभाव रहा है। इसलिए प्रदेश में जनता दल और लोक दल के जमाने से ही चौधरी के परिवार की राजनीति में अच्छी पकड़ रही है, क्योंकि खेती से सीधा जुड़ाव होने की वजह से जनता दल और लोकदल से जुड़े बड़े-बड़े नेताओं का इनके घर पर आना-जाना लगा रहता था। हालांकि बाद में इनके पिता रामदेव सिंह नवलगढ़ पंचायत समिति में कांग्रेस पार्टी के टिकट पर सदस्य भी निर्वाचित हुए थे, लेकिन आज अफसोस इसी बात का है कि जो परिवार सालों से जनता दल, लोक दल और कांग्रेस जैसी बड़ी-बड़ी राजनीतिक पार्टियों से जुड़े रहने के बावजूद भी इनके परिवार का कोई सदस्य विधायक और सांसद नहीं बन पाया। जबकि सुरेश चौधरी के राजस्थान सेवादल और कांग्रेस पार्टी के संगठन में किए गए उल्लेखनीय कार्यों और मेहनत की चर्चा तो कांग्रेस पार्टी में खूब होती है, लेकिन चौधरी को टिकट नहीं देने का अफसोस कांग्रेस पार्टी के रणनीतिकारों को होता है या नहीं, इस सवाल का जवाब किसी के पास नहीं है।

विधानसभा चुनाव में टिकट के लिए फुलेरा और आमेर से कई बार पैनल में टॉप पर नाम रहा लेकिन हर बार चौधरी को निराशा हाथ लगी

जानकार लोगों का कहना है कि कांग्रेस पार्टी में कई बार यह देखने में आता है कि एक ही कैंडिडेट को बार-बार चुनाव हार जाने के बाद भी बार-बार उसे चुनाव लड़ने का मौका दे दिया जाता है, और कई नेता ऐसे भी हैं जो सालों से कड़ी मेहनत और समर्पित भाव से पार्टी के लिए काम करने के बावजूद भी पार्टी के सिंबल से चुनाव लड़ने से वंचित रह जाते हैं। ऐसे नेता सालों से पार्टी के कार्यक्रमों में बड़े नेताओं के लिए दरीपट्टी बिछाते नजर आते हैं, लेकिन जब चुनाव का समय आता है तो टिकट देने के लिए ऐसे नेताओं को इग्नोर कर दिया जाता है। कुछ इसी तरह का बर्ताव कांग्रेस पार्टी में सुरेश चौधरी के साथ भी हुआ। विभिन्न विधानसभा चुनाव में फुलेरा, आमेर और नवलगढ़ में कई बार टिकट के पैनल में सुरेश चौधरी का नाम देखा गया, लेकिन हर बार टिकट को लेकर चौधरी को निराशा हाथ लगी। जबकि टिकट नहीं मिलने के बावजूद भी चौधरी समर्पित भाव से कांग्रेस पार्टी की सेवा दल और संगठन में अपनी जिम्मेदारी को निभाते रहे, यह सोचकर की अगली बार उन्हें पार्टी जरूर मौका देगी। लेकिन हर बार पार्टी के रणनीतिकारों ने उन्हें इग्नोर किया। इसीलिए कांग्रेस पार्टी के सेवादल से जुड़े प्रदेश भर के पार्टी के नेता आज भी इस बात को लेकर अफसोस प्रकट करते हैं कि सुरेश चौधरी जैसे नेता को ही पार्टी ने टिकट नहीं दिया, तो फिर भला सेवा दल से जुड़ने का फायदा क्या हुआ। इसीलिए कांग्रेस पार्टी का सेवादल जो पहले अपने नाम और काम के लिए जाना जाता था, आज सेवादल का असर और प्रभाव पहले जितना नहीं रह गया है। जानकारी के अनुसार सुरेश चौधरी के पिता रामदेव सिंह पूर्व में नवलगढ़ पंचायत समिति के सदस्य भी रह चुके हैं, इसलिए नवलगढ़ और आसपास के इलाकों में सुरेश चौधरी और इनके पिता की बहुत ही जबरदस्त सामाजिक प्रतिष्ठा कई सालों से बनी हुई है जो आज भी कायम है। इसलिए कुछ मौके पर सुरेश चौधरी का नाम नवलगढ़ से भी कांग्रेस पार्टी के पैनल में चला, लेकिन यहां भी चौधरी को टिकट नहीं मिल सका।

कोरोना महामारी में जरूरतमंद लोगों की खूब सेवा की

सुरेश चौधरी के कांग्रेस के सेवा दल में किए गए कार्य कांग्रेस के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हैं। चौधरी कई सालों तक सेवादल में नंबर वन कांग्रेस के नेता रहे, सेवादल का काम ही सेवा करना है, इसलिए पार्टी की सेवा करने के साथ-साथ जन सेवा का भाव अपने आप ही दिल में समा जाता है। यही वजह रही कि प्रदेश में कोरोना महामारी की अवधि में सुरेश चौधरी ने अपनी टीम के लोगों को साथ में लेकर जरूरतमंद लोगों की खूब सेवा की। हालांकि उस समय प्रदेश में अशोक गहलोत के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी की सरकार ही थी, इसलिए कोरोना के मरीज और जरूरतमंद लोगों तक उनकी जरूरत के खाद्य सामग्री, सिलेंडर, मास्क, दवाइयां इत्यादि भिजवाने में चौधरी ने अपने व्यक्तिगत प्रयासों से खूब सेवा की और दिल खोलकर अपनी जेब से पैसा खर्च किया ताकि लोगों को संकट से बचाया जा सके। इसमें इन्होंने उस समय अपनी सरकार से भी अच्छा सहयोग लिया और अपनी जान की परवाह किए बिना अपनी औद्योगिक इकाइयों में काम कर रहे लोगों को साथ लेकर जरूरतमंद लोगों की खूब सेवा की जिसे लोग आज भी नहीं भूले हैं।

औद्योगिक संगठनों के अलावा विभिन्न सामाजिक और शैक्षणिक संस्थानों में भी चौधरी की भूमिका अग्रणी

जानकारी के अनुसार अपनी कड़ी मेहनत, वर्किंग स्टाइल और अपने अच्छे व्यवहार से सुरेश चौधरी ने औद्योगिक जगत में भी काफी नाम कमाया है, जिसमें जयपुर में झोटवाड़ा इंडस्ट्रियल एरिया और विश्वकर्मा इंडस्ट्रियल एरिया में इनकी खुद की औद्योगिक इकाइयां है। इसलिए इन औद्योगिक संगठनों में भी चौधरी की हमेशा अग्रणी भूमिका रही है, क्योंकि सुरेश चौधरी कई सालों तक कांग्रेस पार्टी के काफी कर्मठ और वरिष्ठ नेता रहे। इसलिए औद्योगिक संगठन से जुड़े लोग अपने संगठनों में राजनेताओं को ज्यादा एडजस्ट करने के बारे में सोचते हैं, क्योंकि इससे औद्योगिक संगठनों को सरकार से कई तरह के फायदे लेने में आसानी रहती है। इसलिए औद्योगिक संगठनों में सुरेश चौधरी की हमेशा अच्छी भूमिका रही। इसके अलावा विभिन्न सामाजिक संस्थाओं, स्वयंसेवी संस्थाओं इत्यादि के माध्यम से भी सामाजिक सरोकारों के कार्यों में नियमित रूप से खुद की उपस्थिति दिखाते हैं। चौधरी विनायक ग्रुप आफ एजुकेशन के संरक्षक हैं, आदर्श रामलीला मंडल मुरलीपुरा, जय श्री राम नगर विकास समिति सहित कई अन्य सामाजिक, शैक्षणिक गतिविधियों से जुड़ी संस्थाएं हैं जिनके साथ चौधरी काम करके लोगों को राहत देने का प्रयास करते हैं। इसके अलावा वन और पर्यावरण से जुड़ी संस्थाओं से जुड़कर भी चौधरी काम करते हुए नजर आते हैं।

जाट समाज के लोकप्रिय और कद्दावर नेताओं में होती है गिनती

राजनीतिक विश्लेषक भी यह मानते हैं कि भले ही सुरेश चौधरी जाट समाज से ताल्लुक रखते हो, लेकिन चौधरी के पिता रामदेव सिंह और इनके पुरखों की सामाजिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि इतनी मजबूत और लोकप्रिय थी कि हर जाति और बिरादरी के लोग सालों से इनके परिवार से दिल से जुड़े हुए हैं। बाद में पहले सुरेश चौधरी के पिता और फिर खुद सुरेश चौधरी ने राजस्थान की राजनीति और उद्योग जगत में खुद को साबित करके दिखाया, और पैसा कमाने के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों के कार्यों में भी खुद को समर्पित करके रखा। उसी का परिणाम है कि सुरेश चौधरी सिर्फ जाट समाज नहीं, बल्कि हर जाति और बिरादरी के संगठनों में अपने मिलनसार व्यवहार से अच्छा सम्मान हासिल किए हुए है। जहां तक राजस्थान के जाट समाज के संगठनों की बात है, तमाम जाट समाज के संगठन सुरेश चौधरी की सक्रियता, कर्मठता और जमीनी जुड़ाव से अच्छी तरह से वाकिफ है। इसलिए राजस्थान जाट समाज के संगठनों की ओर से संपादित किए जाने वाले तमाम तरह के कार्यों और गतिविधियों में सुरेश चौधरी की सालों से हमेशा अग्रिम भूमिका रही है। चाहे जाट सम्मेलन करवाने की बात हो, या फिर जाट समाज से जुड़े विषयों और मामलों को सरकारों के समक्ष उठाने की बात हो, या फिर जाट समाज के कल्याण और विकास के लिए काम करने की बात हो, या फिर समाज को आर्थिक सहयोग करने की बात हो, हर जगह सुरेश चौधरी अग्रिम पंक्ति में नजर आते हैं। इसीलिए राजस्थान जाट समाज की जब कोई बड़ी पंचायत होती है, उसमें सुरेश चौधरी हमेशा अग्रिम पंक्ति में बैठे नजर आते हैं।

भाजपा सुरेश चौधरी का कैसे और किस तरह से करेगी उपयोग?

प्रदेश के राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि कांग्रेस छोड़कर भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए सुरेश चौधरी का भारतीय जनता पार्टी कैसे और किस तरह से उपयोग करेगी, क्योंकि सुरेश चौधरी जाट समाज से ताल्लुक रखते हैं और प्रदेश की राजनीति में जाट समाज शुरू से ही अपना अच्छा प्रभाव जमाए हुए हैं। क्योंकि प्रदेश की पांच दर्जन से ज्यादा विधानसभा सीटों पर जाट समाज के मतदाताओं की संख्या काफी ज्यादा है, और इसके अलावा और भी विधानसभा सीट है जहां जाट समाज के मतदाताओं की संख्या अच्छी तादाद में है। ऐसे में अगर जाट समाज का कोई बड़ा लीडर और लोकप्रिय नेता किसी पार्टी में आता है, तो निश्चित रूप से इसका पार्टी को फायदा भी मिलता है। जिसमें सुरेश चौधरी जैसा नेता जो संगठन के मामलों में तो काफी माहिर माने जाते हैं, इसके अलावा उनकी लोकप्रियता जाट समाज में ही नहीं बल्कि हर जाति और बिरादरी के लोगों में है, तो ऐसे में भारतीय जनता पार्टी आने वाले समय में इनका कैसे और किस तरह से उपयोग करेगी यह काफी देखने वाली बात होगी। फिलहाल कांग्रेस छोड़कर भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए कुछ नेताओं को ही भाजपा ने जिम्मेदारी दी हुई है, इसलिए सुरेश चौधरी के बारे में राजस्थान भाजपा और दिल्ली में बैठे भाजपा के नेता आगे क्या कदम उठाएंगे इस पर सब की निगाहें टिकी हुई है।

मास्टर का बेटा जिसने करोड़ों भक्तों के भगवान बने आसाराम बापू के गंदे चरित्र का किया पर्दाफाश

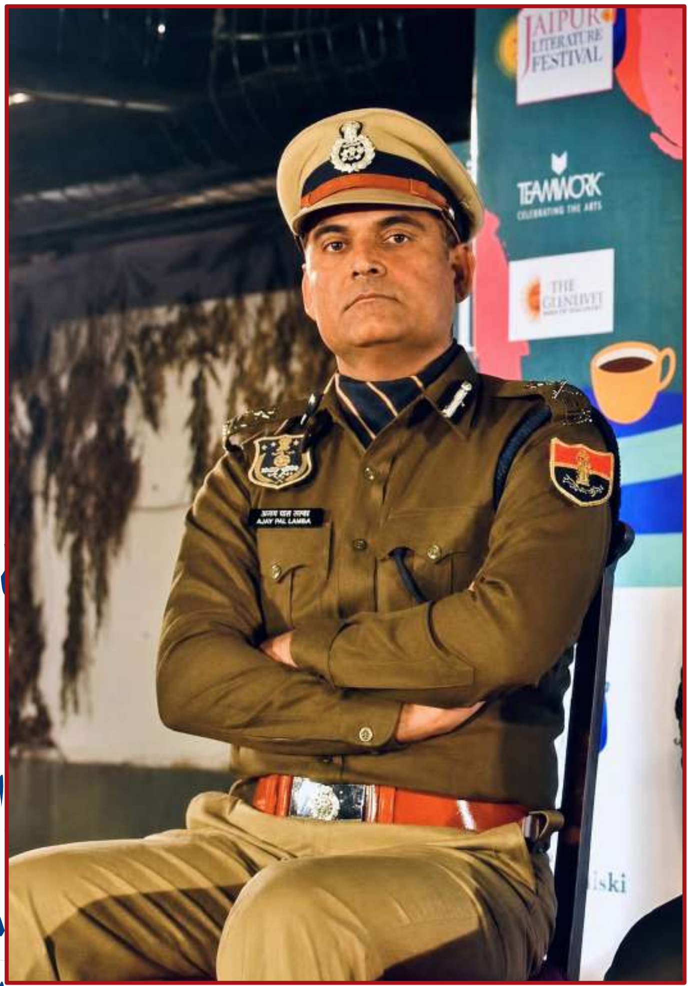

वर्ष 2005 बेच के आईपीएस ऑफिसर अजय पाल सिंह लांबा की पिछली 21 साल की पुलिस की नौकरी में कई ऐसे उल्लेखनीय और उत्कृष्ट कार्य किए, जिनकी गूंज भारत के कोने-कोने में ही नहीं, बल्कि दुनिया के कई देशों में भी सुनाई दे रही है। तकनीकी रूप से काफी मजबूत और सक्षम माने जाने वाले, सीकर जिले के 20 घरों की एक छोटी सी बस्ती लांबा की ढाणी से निकले सरकारी मास्टर के लाडले बेटे ने पुलिस में रहते हुए कई बड़े-बड़े हाई प्रोफाइल मामलों के मकड़जाल को सुलझाया और कई बड़ी दिग्गज पर्सनेलिटियों को जेल की सलाखों के पीछे भिजवाया। प्रदेश के आठ जिलों में एसपी और जयपुर, उदयपुर रेंज आईजी, जयपुर पुलिस कमिश्नरेट में अतिरिक्त आयुक्त और वर्तमान में स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप में पुलिस महानिरीक्षक पद पर रहने के दौरान इनकी ओर से किए गए कई बड़े-बड़े आपराधिक मामलों के निस्तारण और उत्कृष्ट कार्यों से इनकी पुलिस सर्विस का रिकॉर्ड की किताब का हर पन्ना स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो रहा है।

जयपुर। दुनिया भर में करोड़ों लोगों के भगवान बने आसाराम बापू की नाबालिक लड़की से दुष्कर्म करने के आरोप में की गई गिरफ्तारी जितनी पूरी दुनिया में चौंकाने वाली थी, उससे कहीं ज्यादा यह हाई प्रोफाइल मामला शुरू से लेकर आसाराम को आजीवन सजा सुनाने के कोर्ट के फैसले तक, पुलिस और कानूनी प्रक्रिया से जुड़े अनेक पहलुओं और घटनाक्रम को लेकर चौंकाने वाला माना जाता है। जिसमें चाहे इस मामले की जांच पड़ताल कर रहे पुलिस कर्मियों को मुंह मांगी रिश्वत देने की पेशकश की गई हो, या फिर गवाहों की हत्या कर दी गई हो, या फिर पुलिस कर्मियों, वकीलों और उनके परिजनों को डराया धमकाया गया हो। ऐसे रोचक तथ्य इस हाई प्रोफाइल मामले से जुड़े हुए हैं जिन्हें पढ़ कर या फिर सुनकर हर किसी की आंखें फटी रह जाती हैं। लेकिन इस मामले में तत्कालीन जोधपुर पुलिस के अधिकारियों और कर्मचारियों ने अपने फर्ज और ईमान को बिकने नहीं दिया और पुलिस की वर्दी की लाज रखते हुए आसाराम जैसे संत, जिन्हें भारत और दुनिया के कई देशों में मौजूद उनके भक्त उन्हें भगवान से भी बढ़कर मानते और पूजा करते थे, ऐसे संत के गंदे चरित्र का पर्दाफाश कर उसे जीवन भर जेल की सलाखों में बंद रखने के लिए भेजा गया। यह कार्य एक तरह से एवरेस्ट की चोटी को फतह करने जैसा था जिसमें जोधपुर पुलिस के अधिकारी और कर्मचारी पूरी तरह से सफल रहे। इसमें सबसे बड़ी भूमिका राजस्थान के सीकर जिले के 20 घरों की बस्ती वाली लांबा की ढाणी से निकाल कर भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी बने अजय पाल सिंह लांबा की मानी जाती है। जिन्होंने न केवल इस हाई प्रोफाइल मामले से जुड़े जांच के लिए कर्मठ, कुशल, ईमानदार तथा बुद्धिमान पुलिस अधिकारियों और कर्मचारी की टीम का सेलेक्शन किया, बल्कि जिस दिन दिल्ली पुलिस से आसाराम बापू के नाबालिक लड़की से दुष्कर्म करने संबंधी एविडेंस और रिपोर्ट मिली, उसके पहले दिन से लेकर आसाराम को कोर्ट से आजीवन सजा दिलाने तक के करीब 4 साल के

पीड़ित नाबालिग़ लड़की का हौसला और धैर्य देखकर अजयपाल सिंह लांबा शुरू से लेकर आखिरी तक काफी चकित नजर आए

आसाराम बापू ने जिस लड़की के साथ दुराचार किया था, वह लड़की शुरू से लेकर आखिरी तक चट्टान की तरह मजबूत और धैर्य बनाए रखी, क्योंकि आसाराम जैसे हाई प्रोफाइल के खिलाफ पुलिस और कानूनी जंग लड़ना किसी के लिए भी आसान नहीं था। क्योंकि आसाराम के भारत और दुनिया के कई देशों में बड़े-बड़े आश्रम हैं, अरबो रुपए की संपत्ति, अरबो रुपए का बैंक बैलेंस और करोड़ों लोग उसे भगवान की तरह मानते थे। ऐसे में एक नाबालिग़ लड़की ने अपने साथ हुए दुराचार के बारे में पहले दिल्ली पुलिस और फिर जोधपुर पुलिस के साथ न्याय के लिए आसाराम के खिलाफ लड़ाई लड़नी शुरू की। उस लड़ाई में नाबालिग़ लड़की और उसके माता-पिता कभी भी कमजोर नहीं पड़े। कई बार उन्हें जान से मारने की धमकी दी गई, कई बार इस मामले में गवाही देने वाले लोगों को डराया गया, धमकाया गया, और यहां तक कि गवाही देने वाले तीन लोगों की हत्या भी कर दी गई। इन सब के बावजूद भी नाबालिग़ लड़की ने अपना धैर्य बनाए रखा और हमेशा पुलिस के सामने यह कहती रही कि वह कभी भी नहीं झुकेगी और कभी भी नहीं टूटेगी, उसे न्याय चाहिए। लड़की का हौसला और धैर्य देखकर अजय पाल सिंह लांबा खुद चकित रह गए। इतनी विकट और कठिन परिस्थितियों में, इतनी दर्दनाक स्थितियों से गुजरने के बाद भी नाबालिग़ लड़की ने खुद को कमजोर नहीं होने दिया, यह देखकर इस मामले की जांच कर रहे पुलिस अधिकारियों का हौसला हमेशा उसे देखकर बढ़ता रहा। आसाराम की गिरफ्तारी के बाद भी करीब 4 साल तक यह मामला कोर्ट में ट्रायल पर चला। इस दौरान भी बड़े-बड़े घटनाक्रम हुए जिसमें गवाही देने वाले लोगों की हत्या भी की गई, फिर भी नाबालिग़ लड़की और उसके परिजन हमेशा जोधपुर पुलिस के साथ खड़े नजर आए, और पुलिस ने भी नाबालिग़ लड़की और उसके परिजनों को पूरी सुरक्षा व्यवस्था में रखा। यानी इस मामले में पुलिस और पीड़ित पक्ष दोनों एक दूसरे को अपने व्यवहार और हिम्मत से एक दूसरे को मजबूती देते रहे। इसी का नतीजा रहा कि आसाराम जैसे बड़े पर्सनालिटी से पुलिस और कानून की जंग जीती जा सकी।

इस लंबे सफर में न जाने कितनी रातें जाग कर बिताईं, और न जाने कितने ही दिनों तक अपने परिजनों से दूर रहकर इस मामले से जुड़े प्रत्येक पहलू की प्रभावी तरीके से जांच प्रक्रिया को कंप्लीट किया। इस हाई प्रोफाइल मामले में पुलिस की जांच में हर विषय पर, हर एंगल पर सबूत और तथ्य के आधार पर चार्ज शीट तैयार की, जिसमें किसी भी विषय पर किसी भी तरह की कोई भी कमी बाकी नहीं छोड़ी गई ताकि किसी कमी का फायदा उठाकर आसाराम के नामचीन वकील आसाराम को बेगुनाह साबित ना कर दें। क्योंकि अजय पाल सिंह लांबा इंजीनियरिंग कम्युनिकेशन में बीटेक हैं, इसलिए टेक्निकल रूप से काफी मजबूत और सक्षम अधिकारी माने जाते हैं, जिसकी बदौलत आसाराम के इस महत्वपूर्ण केस के अलावा इन्होंने और भी कई बड़े-बड़े विवादित हाई प्रोफाइल मामलों का सटीक निस्तारण करके बड़े-बड़े लोगों को जेल की सलाखों के पीछे भिजवाया है। वर्तमान में स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप में पुलिस महानिदेशक पद पर रहने के दौरान भी, रोजाना आए दिन पेपर लीक जैसे बहुचर्चित मामलों में फरार चल रहे कई वांटेड लोगों को ढूंढ निकाल कर उन्हें जेल की सलाखों के पीछे पहुंचा रहे हैं। इसलिए लांबा अपनी वर्किंग स्टाइल, ईमानदारी और अपनी प्रभावी इन्वेस्टिंग प्रक्रिया से भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारियों में एक अलग ही अंदाज और एक अलग ही कलेवर में नजर आते हैं। इनके उत्कृष्ट और उल्लेखनीय कार्यों की एक मोटी किताब के हर पन्ने स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो रहे हैं, जिससे इन्हें एक अलग क्वालिटी ऑफिसर के रूप में माना जाता है।

"गनिंग फॉर द गॉड मैन"अपनी पुस्तक में अजय पाल सिंह लांबा ने आसाराम के इस पूरे प्रकरण के प्रत्येक पहलू को किया है स्पष्ट

आसाराम की गिरफ्तारी का मामला आईपीएस अजय पाल सिंह के जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया, इसीलिए उन्होंने इस पूरे घटनाक्रम को लेकर खुद एक पुस्तक लिखी जिसका शीर्षक 'गनिंग फॉर द गॉडमैन' है। इस पुस्तक में आसाराम की करतूत से लेकर पुलिस की जांच की प्रक्रिया से जुड़े प्रत्येक पहलू को प्रभावी और तथ्य के अनुसार प्रस्तुत किया गया है। हालांकि अजय पाल सिंह लांबा ने इस पुस्तक के बारे में कहा भी है कि पुलिस की जांच में पूरे देश भर में इस मामले से जुड़े तथ्य, सबूत और आसाराम के बारे में लोगों की ओर से कही गई बातों का भी उल्लेख किया गया है, तथा पुलिस की इन्वेस्टीगेशन में जो-जो तथ्य उजागर हुए उसका जिक्र किया गया है। कानूनी पहलुओं से जुड़े विषयों को स्पष्ट किया गया है। इसमें उन्होंने उन सब तथ्यों और बातों को लिखा है जो पुलिस की जांच प्रक्रिया और कानूनी प्रक्रियाओं का हिस्सा बन चुकी हैं। लांबा का कहना है कि उनका किताब लिखने का मकसद यह नहीं है कि आसाराम को बदनाम करें, बल्कि उनका किताब लिखने का एक ही मकसद है, समाज में जिन्हें

हम भगवान मानते हैं उन्हें इतनी जल्दी भगवान नहीं मानें, क्योंकि आजकल झूठ, पाखंडी धर्म के नाम पर लोगों से पैसा हड़पने वाले, लोगों के जज्बातों से खेलने वाले और लोगों को अंधेरे में रखने वाले ऐसे बहुत से पाखंडी लोग हैं जो दिखावे में खुद को संत महात्मा बताते हैं, लेकिन उनके अंदर की कहानी आसाराम बापू जैसी हो सकती है। इसलिए समाज में लोगों को जागरूक करने और उन्हें मैसेज देने के लिए यह विशेष पुस्तक लिखी है, ताकि लोग भगवान बने आसाराम जैसे लोगों को पहचान सकें। इस पुस्तक में अजय पाल सिंह लांबा ने बाकायदा आसाराम के समर्थन की ओर से उन्हें बड़ी-बड़ी रिश्वत की पेशकश करने जैसी घटनाओं का भी जिक्र किया है। इस पुस्तक में उन्होंने अपने और अपने परिजनों के अलावा अन्य पुलिस अधिकारियों और उनके परिजनों को जान से मारने की धमकी देने जैसी बातों का जिक्र किया है। इस पुस्तक में उन्होंने उस मासूम बच्ची के साहस का भी उल्लेख किया है जिसके साथ आसाराम ने दुराचार किया था। बच्ची और उसके परिजनों ने जो हिम्मत और धैर्य दिखाई उसकी भी इस पुस्तक में उन्होंने तारीफ की है। वकीलों और उनके परिजनों को आसाराम के समर्थकों की ओर से दी गई धमकी के बारे में भी जिक्र किया है। यहां तक कि पुस्तक में इस बात का भी जिक्र है कि आसाराम के मामले का फैसला सुनाने वाले जज की गाड़ी का भी महाराष्ट्र नंबर की एक गाड़ी में काफी पीछा किया था। यानी अजयपाल सिंह लांबा की एक पुस्तक किताब की दुनिया में तहलका मचाए हुए है। इस पुस्तक को लिखने के लिए बाकायदा अजय पाल सिंह लांबा ने सरकार से और पुलिस मुख्यालय से अनुमति भी ली थी, और अनुमति मिलने के बाद ही उन्होंने आसाराम के प्रकरण से जुड़े सभी मामलों को बहुत ही सटीक और प्रभावित तरीके से इस पुस्तक में अंकित किया है।

जब आसाराम के समर्थक गांव लांबा की ढाणी में भी बड़ी संख्या में पहुंच गए थे

जानकारी के अनुसार, आसाराम से जुड़े दुष्कर्म के मामले में अजय पाल सिंह लांबा की प्रभावी जांच की मॉनिटरिंग से आसाराम के समर्थक काफी भड़क गए थे, और एक तरफ जान से मारने की धमकी देकर अजय पाल सिंह लांबा और उनके परिजनों में डर पैदा करने की कोशिश कर रहे थे, तो दूसरी तरफ पैसों का प्रलोभन देकर उन्हें अपने जाल में फसाने का प्रयास कर रहे थे। इस दौरान ही आसाराम के समर्थकों को जब यह पता चला कि अजय पाल सिंह लांबा के परिजन लांबा की ढाणी में रहते हैं, तो वहां भी बड़ी संख्या में आसाराम के समर्थक परिजनों में डर पैदा करने के लिए पहुंच गए थे। लेकिन यह भी सच है कि सीकर जिले, जो शेखावाटी का बड़ा हिस्सा माना जाता है, यहां की मिट्टी में राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र भक्ति का समावेश है, यहां घर-घर में फौजी मिल जाएंगे। ऐसे में आसाराम के समर्थक यह भूल गए कि वे जिस लांबा की ढाणी में जा रहे हैं वहां उन्हें धूल चाटनी पड़ सकती है। ऐसा ही हुआ, वे जिस मकसद से लांबा की ढाणी में गए थे, उल्टे पांव उन्हें भागना पड़ा। इस बात को अजय पाल सिंह लांबा भी स्वीकार करते हैं कि उन्हें और उनके परिजनों को जान से मारने की धमकी कई बार मिली और उनकी बच्ची ने स्कूल जाना बंद कर दिया था और उनकी पत्नी घर से बाहर कम निकलती थी। लेकिन पुलिस ऑफिसर होने के नाते अजय पाल सिंह लांबा यह अच्छी तरह से जानते थे कि इस तरह की स्थितियों का उन्हें सामना करना ही पड़ता है, इसलिए उन्होंने इन सब बातों को बिल्कुल नॉर्मल वे में लिया और अपने मिशन में लगे रहे तथा अपने परिजनों को अलर्ट रहने के लिए जरूर समय-समय पर कहते रहे। लेकिन पहले प्रभावी तरीके से इस मामले से जुड़े हर पहलू की सबूत के साथ जांच करना, फिर करोड़ों के भगवान बने आसाराम को अरेस्ट करना और फिर 4 साल तक कोर्ट की लड़ाई, इन सब में अजय पाल सिंह लांबा हर दिन नए जोश और नई ऊर्जा के साथ इस मामले से जुड़े रहे और कठिन से कठिन और विपरीत परिस्थितियों का डटकर मुकाबला करते हुए आसाराम को इस गंभीर अपराध के मामले में जहां जाना चाहिए था वहां भेज कर, उन्होंने नाबालिग़ लड़की और उनके माता-पिता को न्याय तो दिलवाया ही, इसके अलावा समाज को यह संदेश भी दिया कि आजकल के दौर में इतनी जल्दी किसी को भगवान मान लेना मूर्खता है। क्योंकि आसाराम जो करोड़ लोगों के भगवान बने थे उसने एक मासूम लड़की को अपनी हवस का शिकार बना दिया, यहां तक कि आसाराम के समर्थक आसाराम को बेगुनाह बताने के लिए मीडिया में और चर्चा में इस तरह की बातें कह रहे थे कि आसाराम तो नपुंसक है वह कैसे दुष्कर्म करेगा। इस तरह की दलील न्यायालय में भी दी गई, लेकिन पुलिस यह पहले से ही जानती थी कि आसाराम को बेगुनाह साबित करने के लिए इस तरह की दलीलें दी जा सकती है, इसलिए पुलिस ने पहले ही आसाराम का इस मामले में चिकित्सीय परीक्षण करवा रखा था ताकि जब यह बात कोर्ट में उठे तो आसाराम की मेडिकल रिपोर्ट को प्रस्तुत करके उसके नपुंसक होने की बात को गलत बताया जा सके। पुलिस ने ऐसा किया भी, इस तरह से यह बड़ी कानूनी जंग जीतने के लिए अजय पाल सिंह लांबा और उनकी टीम ने काफी मेहनत की और ईमानदारी दिखाते हुए करोड़ों रुपए के प्रलोभन के जाल में भी नहीं फंसे, इसीलिए अजय पाल सिंह लांबा और उनकी पूरी टीम के चर्चे आज भी होते हैं।

सरकारी मास्टर के बेटे ने लांबा की ढाणी को पूरी दुनिया में मशहूर कर दिया

जानकारी के अनुसार, अजय पाल सिंह लांबा का जन्म सीकर जिले में उस समय 20 घरों की बस्ती लांबा की ढाणी में एक सरकारी अध्यापक के घर में हुआ था। ग्राम पंचायत का मुख्यालय भी लांबा की ढाणी से करीब 5 किलोमीटर दूर था, इसलिए पांचवी क्लास तक की पढ़ाई स्थानीय स्तर पर मौजूद सरकारी प्राइमरी स्कूल में हुई। इसके बाद जवाहर नवोदय विद्यालय में सिलेक्शन होने से छठी से 12वीं तक की पढ़ाई इन्होंने जवाहर नवोदय विद्यालय में संपादित की। इसके बाद कोटा स्थित इंजीनियरिंग कॉलेज से इलेक्ट्रॉनिक कम्युनिकेशन में बीटेक किया। क्योंकि पढ़ने में बचपन से ही काफी इंटेलिजेंट और प्रतिभाशाली थे, इसलिए जवाहर नवोदय विद्यालय में सिलेक्शन होने से परिवार पर पढ़ाई का किसी भी तरह का कोई आर्थिक बोझ नहीं पड़ा। साथ ही कोटा में सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ाई करने से भी इन्हें सरकार की ओर से प्रतिभाशाली स्टूडेंट के रूप में हर तरह से मदद मिलती रही, इसलिए यहां भी इनकी पढ़ाई का इनके परिवार वालों पर खर्च का बोझ नहीं आया। इसके बाद बीटेक के दौरान ही इन्हें एक बड़ी कंप्यूटर हार्डवेयर सॉफ्टवेयर कंपनी में नौकरी का अवसर मिला। यहां कुछ महीने नौकरी के बाद इन्हें केंद्र सरकार के अधीन डीआरडीओ में भी काम करने का अवसर मिला। नौकरी के साथ पढ़ाई के दौरान ही इंडियन रेलवे में इलेक्ट्रिकल शाखा में काम करने का अवसर मिला। इस दौरान ही अजय पाल सिंह लांबा भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा में बैठे, जहां इनका रेवेन्यू सेवा में सिलेक्शन भी हुआ, लेकिन इससे इन्हें संतुष्टि नहीं मिली। फिर दोबारा से इन्होंने यह एग्जाम दिया, जिसमें इन्हें आईपीएस के लिए चुन लिया गया। इसके बाद इन्होंने आईपीएस को ही अपना कर्म समझा, क्योंकि बचपन से खाकी वर्दी को देखकर इन्हें एक अलग आनंद और रोमांच की अनुभूति होती थी, और जब बीटेक कर रहे थे उस समय भी मन ही मन यह सोचते थे कि पुलिस की सेवा में रहकर लोगों का ज्यादा से ज्यादा भला किया जा सकता है। पुलिस की नौकरी ही एक ऐसी नौकरी है जिसके मार्फत लोगों की ज्यादा सेवा की जा सकती है और लोगों के मायूस चेहरों पर खुशी लाई जा सकती है। इसीलिए निजी और सरकारी क्षेत्र में कई बड़ी-बड़ी नौकरियां के सुनहरे रास्ते पर चलते हुए, आखिर में इन्होंने खुद को आईपीएस तक सीमित रखने का पूरा मन बना लिया, क्योंकि बचपन और कॉलेज का जो सपना था वह आईपीएस की वर्दी पहनकर पूरा हो गया था। अब इनके सामने सिर्फ खाकी की लाज रखना

और ट्रेनिंग पीरियड के दौरान जो कुछ सीखा तथा आईपीएस की शपथ लेने के दौरान जो वचन लिया, उसको ईमानदारी से निभाना बाकी बचा था। जिसमें सीकर जिले का यह लाडला बेटा अब सीकर जिले का लाडला ही नहीं बल्कि इन्होंने जिस तरह से करोड़ों लोगों के भगवान बने आसाराम बापू के गंदे चरित्र को समाज के सामने बाहर लाकर रखा और उसे आजीवन जेल की सलाखों के पीछे बंद किया, यह बड़ी गिरफ्तारी भारत के लिए ही नहीं बल्कि दुनिया में बैठे आसाराम के उन करोड़ों भक्तों के लिए भी चौंकाने वाली थी जो आसाराम को भगवान मानकर उनकी पूजा करते थे। जिस दिन आसाराम की गिरफ्तारी हुई थी, उस दिन हिंदुस्तान की आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा जोधपुर पुलिस को थैंक्स बोल रहा था। अजय पाल सिंह लांबा की दुनिया भर में चर्चा हो रही थी, क्योंकि पहले इस हाई प्रोफाइल मामले की प्रभावी जांच और फिर आसाराम को उसके लाखों भक्तों के सामने अरेस्ट करना कोई मामूली बात नहीं थी। लेकिन अजय पाल सिंह लांबा ने अपनी प्रभावी मॉनिटरिंग और चतुराईभरी योजना से मीडिया और आसाराम के करोड़ों भक्तों की आंखों में धूल झोंकर जिस तरह से आसाराम को अरेस्ट किया, वह दृश्य राजस्थान पुलिस और इंडियन पुलिस के इतिहास के पन्नों में ही नहीं, बल्कि भारत जैसे विशाल धार्मिक और सनातनी धर्म वाले धार्मिक देश के इतिहास के पन्नों में यादगार अध्याय के रूप में लिख दिया गया। हालांकि अजय पाल सिंह लांबा खुद कहते हैं कि आसाराम की गिरफ्तारी में चंचल मिश्रा, मुक्तापारीक, सत्य प्रकाश, सतवीर जैसे कई पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों कि सामूहिक मेहनत और दबंगई का ही नतीजा था कि आसाराम को लाखों भक्तों की निगाह से बचाते हुए गिरफ्तार किया गया। लेकिन इस बात को भी सब स्वीकार करते हैं कि इस पूरे हाई प्रोफाइल मामले को शुरू से लेकर आखिरी तक अजय पाल सिंह लांबा ने प्रभावी रूप से हैंडल किया रखा और अपने अधीनस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों को आसाराम की गिरफ्तारी के लिए हर पल हर दिन अपडेट और प्रेरित करते रहे। उससे जोधपुर पुलिस की जो अधिकारी और कर्मचारी इस मिशन में जुटे थे उनमें हर रोज नई ऊर्जा और नए जोश का संचार होता रहा, और पीड़ित लड़की को न्याय दिलाने के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करते हुए भी दिखे। जब इस मामले की जांच कर रहे अधिकारियों और उनके परिजनों को जान से मारने की धमकी भी आसाराम के समर्थकों की ओर से रोजाना दी जाती रही, खुद अजय पाल सिंह लांबा को आसाराम के समर्थकों ने यह तक कह दिया, 'आपने अपने जीवन में इतनी कल्पना भी नहीं की होगी जितनी दौलत और संपत्ति आपको गिफ्ट में दी जाएगी, सिर्फ आसाराम को बचा लो '। लेकिन अजय पाल सिंह लांबा ही नहीं अन्य पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों को भी इसी तरह से प्रलोभन दिया गया, लेकिन यहां अजय पाल सिंह लांबा और मामले की जांच कर रहे सभी पुलिस अधिकारियों की आंखों के सामने उस मासूम लड़की का चेहरा हमेशा छाया रहता था जो आसाराम की गंदी करतूत से लाचार सा दिखाई देता था। इसलिए इस मामले की जांच कर रहे सभी अधिकारियों ने पीड़ित लड़की को न्याय दिलाने के लिए अपनी और अपने परिजनों की जान की परवाह भी नहीं की और अंततः आसाराम को कोर्ट में भी गुनहगार साबित करके उसे आजीवन जेल की सजा भुगतने के लिए मजबूर कर दिया। इसलिए जिस दिन आसाराम को जोधपुर पुलिस ने अरेस्ट किया और जिस दिन कोर्ट ने आसाराम को आजीवन जेल की सजा सुनाई, उसके बाद सीकर जिले की लांबा की ढाणी पूरी दुनिया में अजय पाल सिंह कि इस बहुत बड़ी उपलब्धि से मशहूर हो गई।

आठ जिलों के पुलिस अधीक्षक और जयपुर, उदयपुर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक तथा जयपुर के अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर पद पर रहने के दौरान अपने उल्लेखनीय कार्यों और उपलब्धियों से हमेशा रहे सुर्खियों में

वर्ष 2005 बैच के आईपीएस अधिकारी अजय पाल सिंह लांबा की अब तक की पुलिस सर्विस का रिकॉर्ड बहुत ही अभूतपूर्व और उल्लेखनीय रहा है। आसाराम की गिरफ्तारी ही नहीं, बल्कि पाली, अलवर, झुंझुनू, उदयपुर, जयपुर, जोधपुर समेत 8 जिलों में पुलिस अधीक्षक पद पर रहने के दौरान इन्होंने अपनी ईमानदारी छवि, शानदार वर्किंग स्टाइल, प्रभावी मॉनिटरिंग और अपनी प्रभावी तकनीकी क्षमता के आधार पर कई बड़े-बड़े गंभीर मामलों का पर्दाफाश किया। अनेक ब्लाइंड मर्डर और ब्लाइंड वारदातों का निस्तारण करके दोषी लोगों को अरेस्ट करवाया, बड़े-बड़े गैंगस्टर ग्रुप से जुड़े लोगों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई करके अपराध जगत से जुड़े लोगों में अपने नाम का डर पैदा किया। एक तरफ अपराध जगत से जुड़े लोग इनका नाम सुनते ही बिल में दुबक जाते हैं, तो इनका नाम सुनते ही आम जन के चेहरों पर रौनक आ जाती है, क्योंकि जिलों में पुलिस अधीक्षक पद पर रहने के दौरान इन्होंने अपनी वर्किंग स्टाइल और प्रभावी मॉनिटरिंग से पुलिस स्टेशन की कार्यशैली और पुलिस कर्मियों के मिजाज और व्यवहार को काफी अच्छा और खुशनुमा बनाया, जिसका फायदा जिलों के लोगों को खूब मिला। अजय पाल सिंह लांबा जहां भी और जिस भी जिले में रहे, वहां के दुकानदार, उद्योगपति और विभिन्न समाजों के संगठनों से जुड़े लोग इनसे काफी प्रभावित और खुश दिखे। जयपुर और उदयपुर रेंज पुलिस महानिदेशक पद पर रहने के दौरान भी इनकी प्रभावी मॉनिटरिंग ने पुलिस की कार्यशैली को हमेशा गतिशील और जवाब देही बनाए रखा तथा अवैध मादक पदार्थ की तस्करी करने वाले, हथियारों की तस्करी करने वाले, खनन माफिया और संगठित अपराध ग्रुप से जुड़े लोगों के खिलाफ बड़ी-बड़ी प्रभावी कारवाइयां करके अपने नाम का डंका बजाया और आम जनता के दिलों पर राज किया। जयपुर के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त पद पर रहने के दौरान भी इन्होंने जयपुर की ट्रैफिक व्यवस्था को मजबूत और सुगम बनाने, जयपुर में सीसीटीवी कैमरे के माध्यम से निगरानी व्यवस्था को मजबूत और प्रभावी बनाने के साथ-साथ शहर में ज्यादा से ज्यादा सीसीटीवी कैमरे लगाने जैसे बड़े विषयों पर उत्कृष्ट कार्य किया। सीआईडी सीबी और भ्रष्टाचार निरोधक विभाग में भी अपनी पोस्टिंग के दौरान इन्होंने अपनी प्रभावी मॉनिटरिंग और अपनी प्रभावी तकनीक क्षमता के आधार पर बड़े-बड़े मामलों का चतुर रणनीति के आधार पर पर्दाफाश किया और दोषी लोगों को अरेस्ट करके जेल भेजा। वर्तमान में अजय पाल सिंह लांबा स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप में पुलिस महानिरीक्षक पद पर पोस्टेड हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा यह जानते हैं कि अजय पाल सिंह लांबा तकनीकी रूप से काफी मजबूत हैं, इसलिए पेपर लीक जैसे मामलों की जांच को तेजी से आगे बढ़ाने के लिए अजय पाल सिंह लांबा को एसओजी में लाया गया, जिसके अच्छे नतीजे भी सामने आ रहे हैं। पेपर लीक के विभिन्न मामलों में रोजाना दोषी लोगों की गिरफ्तारी हो रही है। कई लोग जो वांटेड चल रहे थे उन्हें पाताल से भी खोज कर जेल पहुंचाया जा रहा है। पेपर लीक से जुड़े विभिन्न मामलों की जांच प्रक्रिया तेजी से संपादित हो रही है। इसलिए जब से अजय पाल सिंह लांबा एसओजी में आए हैं, तब से ही गिरफ्तारियां का सिलसिला पहले की तुलना में ज्यादा तेजी से आगे बढ़ रहा है।

आसाराम मामले की जांच करने वाली इंस्पेक्टर मुक्ता पारीक के आंखों में आंसू देख कर जब पहली बार काफी हैरान हुए अजय पाल सिंह लांबा

दिल्ली पुलिस की ओर से नाबालिग़ लड़की से दुष्कर्म करने की फाइल वर्ष 2013 में जैसे ही जोधपुर पुलिस के पास आई, उस समय अजय पाल सिंह लांबा जोधपुर में डीसीपी पद पर नियुक्त थे और आसाराम ने जिस कुटिया में नाबालिग़ लड़की से दुराचार किया था वह इलाका उन्हीं के कार्य क्षेत्र में आता था। इसलिए इस पूरे मामले की जांच लांबा की मॉनिटरिंग में ही संपादित हुई थी। लांबा ने इस बड़े हाई प्रोफाइल जांच के लिए एक ऑनेस्ट और अनुभवी महिला इंस्पेक्टर मुक्ता पारीक को नियुक्त किया, क्योंकि अजय पाल सिंह लांबा यह जानते थे कि नाबालिग़ लड़की एक महिला ऑफिसर के सामने ही अपने साथ हुए मामले के बारे में ठीक तरह से बता सकती है, पुलिस अधिकारी के समक्ष वह ठीक तरह से अपनी पीड़ा नहीं बता पाएगी। इसलिए मुक्ता पारीक को मामले की जांच दी गई। पारीक ने जब पीड़ित नाबालिग़ लड़की से पूछताछ की और फिर वह अपने बॉस अजयपाल सिंह लांबा के सामने आई, तो मुक्ता पारीक का चेहरा गुस्से में लाल था और उसकी आंखों में आंसू थे। उसने लांबा को सिर्फ एक ही शब्द बोला, 'बच्ची के साथ दुष्कर्म हुआ है'। मुक्ता पारीक काफी अनुभवी इंस्पेक्टर और दबंग अधिकारी थी, लेकिन जब उन्होंने उनकी आंखों में आंसू देखे, तो अजय पाल सिंह लांबा को भी उस समय यह पूरा यकीन हो गया था कि करोड़ों के भगवान बने आसाराम बापू ने नाबालिग़ के साथ दुष्कर्म किया है, इसलिए अब आसाराम बापू को हर हाल में अरेस्ट करेंगे। लेकिन इसके लिए जरूरी यह भी था कि इस मामले से जुड़े सभी पहलुओं की प्रभावी और सबूत के साथ जांच की जाए। इस बात को भी सबूत और तथ्यों के आधार पर क्लियर किया जाए कि आसाराम के साथ कोई ब्लैकमेलिंग तो नहीं हो रही, ताकि बाद में पुलिस की जांच पर कोई सवाल खड़े ना करें। इसलिए इस मामले की जांच के लिए अलग- अलग पहलुओं और अलग-अलग दृष्टिकोण की जांच के लिए अलग-अलग टीमों का गठन किया गया, और प्रभावी तरीके से जांच को जल्दी से जल्दी कंप्लीट करने की दिशा में अजय पाल सिंह की मॉनिटरिंग में पुलिस की जांच शुरू भी हुई। जांच को सबूत और तथ्यों के साथ प्रभावित तरीके से कंप्लीट करके आसाराम के खिलाफ सभी सबूत और तथ्य के साथ प्रभावी चार्ज शीट तैयार की गई, ताकि पैसों के दम पर न्यायालय में आसाराम पुलिस की जांच को गलत साबित न कर सके।

अपने ट्रेनिंग पीरियड में आईपीएस दिनेश एम. एन. के अधीन कर चुके हैं कार्य

अपनी दबंगई, निडरता और बिना किसी पॉलीटिकल प्रेशर के दबाव में आए, काम करने के लिए माने जाने वाले सीनियर आईपीएस दिनेश एमएन के अधीन अजय पाल सिंह लांबा पुलिस की शुरुआती नौकरी के दिनों में काम कर चुके हैं। जब आपको ट्रेनिंग पीरियड के दौरान ही एक श्रेष्ठ, कर्मठ, ईमानदार और दबंग आईपीएस के अधीन काम करने का मौका मिलता है, तो आपके भीतर छुपी हुई विशेष प्रतिभा तो बाहर निकलती ही है, इसके अलावा आप शारीरिक और मानसिक रूप से और मजबूत होते हो और आपकी पावर को एक्स्ट्रा एनर्जी मिल जाती है, जिसके सहारे आपका आगे का सफर काफी चमकीला और सुनहरा बन जाता है। क्योंकि जैसे बचपन में किसी को अच्छा संस्कारिक और शैक्षणिक माहौल मिलता है तो वह बड़ा होकर श्रेष्ठ नागरिक बनता ही है, ठीक वैसे ही अगर पुलिस जैसी नौकरी में अगर किसी को अपने नौकरी के शुरुआती दिनों में ही एक अच्छे और काबिल अफसर के साथ काम करने का मौका मिल जाए, तो फिर चाहे आगे पुलिस की नौकरी में कितनी ही बड़ी-बड़ी चुनौतियां और मुश्किलें सामने आएं, आप उन सब मुश्किलों और चुनौतियों का बड़े आराम से सामना कर लोगे। कुछ इसी तरह का अनुभव अजय पाल सिंह लांबा को भी मिला है। जब सोहराबुद्दीन एनकाउंटर मामले में देशभर में चर्चित रहे दिनेश एमएन वर्ष 2008 में उदयपुर के पुलिस अधीक्षक थे, उस समय वर्ष 2005 बैच के आईपीएस अजय पाल सिंह लांबा को उदयपुर में पोस्टिंग मिली थी। उस समय लांबा के बॉस दिनेश एमएन ही थे, इसलिए शायद अब दिनेश एमएन को भी इस बात की संतुष्टि और खुशी जरूर हो रही होगी जब वे अजय पाल सिंह लांबा की उपलब्धियां और उत्कृष्ट कार्यों के बारे में सुनते हैं और पढ़ते हैं।

अंग्रेजी कल्चर के माहौल में, हिंदी माध्यम से वर्ष 2013 की आईएएस परीक्षा में चयनित अभ्यर्थियों में अग्रिम पंक्ति में शामिल रहे, साधारण परिवार के कानाराम के आईएएस बनने की संघर्ष गाथा किसी सुपर डुपर हिंदी फिल्म से कम नहीं। ग्राम सेवक की कुर्सी से सीधे आईएएस की कुर्सी तक पहुंचे इस बेहद ही सरल, सीधे, संवेदनशील, संयमित, अनुशासित, कर्मठ व इमानदार अधिकारी कि अब तक की सरकारी सर्विस का रिकॉर्ड भी रहा है बेहद शानदार। अपने नवाचार और नवीन प्रयोगों से किसान, मजदूर, युवा, महिला के हितों की रक्षा और विकास के लिए किया अनेक उत्कृष्ट कार्य केंद्र और राजस्थान सरकार से भी हो चुके हैं सम्मानित

जमीन से जुड़े अधिकारी की चमत्कारिक संघर्ष गाथा

गांव की माटी से तप तप कर सोना बने आईएएस कानाराम

जयपुर। यह सत्य है आजकल अंग्रेजी के माहौल में देश के सभी हाई प्रोफाइल एग्जाम में इंग्लिश मध्यम से परीक्षा देने वाले अभ्यार्थियों का सिलेक्शन में ज्यादा बोलबाला रहता है, इसमें देश की सबसे बड़ी भारतीय प्रशासनिक सेवा भर्ती परीक्षा भी शामिल है। इस परीक्षा में भी चयनित होने वाले अभ्यर्थी ज्यादातर अंग्रेजी माध्यम से ही जुड़े होते हैं। इनमें भी अधिकांश ऐसे होते हैं जो काफी हाई प्रोफाइल और आर्थिक रूप से मजबूत परिवार से जुड़े होते हैं, जिन्हें बचपन से ही परिवार और हाई प्रोफाइल निजी स्कूलों में पढ़ाई का बहुत ही अच्छा वातावरण तो मिलता ही है, इसके अलावा तमाम तरह की सुख सुविधा और पढ़ाई से जुड़ी व्यवस्थाएं भी मिलती है। लेकिन इसके उलट, कानाराम जैसी शख्सियत भी हैं जो अपनी कड़ी मेहनत, तपस्या, समर्पण, आत्म बल से कठिन और विपरीत परिस्थितियों का डटकर मुकाबला करते हुए, सीमित संसाधनों और आर्थिक तंगी के बावजूद भी देश की इस सबसे बड़ी परीक्षा में शानदार परफॉर्मेंस करके दिखाते हैं। जी हां, वर्ष 2013 बेच के आईएएस अधिकारी कानाराम के आईएएस बनने की संघर्ष की कहानी किसी हिंदी सुपर डुपर फिल्म से कम नहीं है। एक साधारण से ग्रामीण परिवार में जन्म लेने वाले कानाराम ने जिस हिम्मत, धैर्य, आत्म बल और कड़ी मेहनत से हिंदी माध्यम से देश की इस सबसे बड़ी परीक्षा को न केवल फाइट किया, बल्कि चयनित अभ्यर्थियों में अग्रिम पंक्ति में खुद का नाम शामिल करवा के देश के उन हजारों युवाओं के लिए प्रेरणा के स्रोत बन गए हैं जिन्होंने आईएएस बनने का सपना तो सजा रखा है, लेकिन उनके परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति और अभाव तथा कठिन परिस्थितियों के बीच वे खुद को इस बड़ी परीक्षा की तैयारी के लिए ठीक तरह से एडजस्ट नहीं कर पा रहे। ऐसे युवा अगर कानाराम के इस आईएएस बनने की संघर्ष गाथा को अपने दिल और आंखों में सजाकर यह परीक्षा दें, तो वे निश्चित रूप से कानाराम की तरह सफलता का स्वाद चख सकते हैं।कानाराम का जन्म राजस्थान के पाली जिले के सोजत रोड पर ग्रामीण क्षेत्र में सिसारवाड़ा में हुआ, इनका परिवार भी बहुत ही साधारण और आर्थिक रूप से कमजोर था, इसलिए अभाव तथा कठिन परिस्थितियों में ग्रामीण स्तर पर ही सरकारी स्कूल में पढ़ाई की। लेकिन बचपन से ही पढ़ने में ब्रिलिएंट होने से इन्हें हमेशा अच्छे मार्क्स मिलते रहे। भले ही पढ़ाई में हिंदी इनका माध्यम हो, लेकिन अंग्रेजी और देश दुनिया की रोजमर्रा की गतिविधियों और खबरों पर कॉलेज के दिनों

से ही नियमित रूप से नजर रखते थे, और देश के गंभीर और ज्वलंत मुद्दों पर अपने साथ पढ़ने वाले छात्रों और शिक्षकों के साथ सामूहिक संवाद करने में ज्यादा रुचि रखते थे, जो आगे चलकर इन्हें आईएएस एग्जाम को फाइट करने में काफी मददगार साबित हुई। लेकिन इनके दिल में अपने परिवार को आर्थिक रूप से मजबूती देने का विचार भी इन्हें हर पल काफी बेचैन किए हुए था, इसलिए पढ़ाई के साथ-साथ सरकारी नौकरी के कंपटीशन एग्जाम के लिए भी खुद को तैयार किया। यह जरूरी भी था क्योंकि एक नौजवान लड़का कब तक अपने माता-पिता को आर्थिक रूप से परेशान देख सकता है। हालांकि कानाराम ने जोधपुर के जयनारायण विश्वविद्यालय से वनस्पति विज्ञान में बीएससी किया, और फिर अजमेर के महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी से भूगोल से एमएससी किया। इस दौरान ग्राम सेवक पद पर इनका सिलेक्शन भी हो गया, लेकिन लोगों के लिए ज्यादा से ज्यादा भलाई का काम करने और अपने कार्य क्षेत्र को काफी विस्तार देने की ललक ने इन्हें आईएएस का एग्जाम देने के लिए प्रेरित किया, जिसमें पहले प्रयास में इन्हें असफलता भी मिली। लेकिन इस असफलता को अपनी आगामी सफलता का संदेश मानकर, अपने पहले प्रयास की कमियों और गलतियां को सुधार कर, पूरे आत्मविश्वास और धैर्य के साथ समर्पित भाव से कड़ी मेहनत करके दोबारा से हिंदी माध्यम से एग्जाम दिया और चयनित अभ्यर्थियों में 54वीं रैंक हासिल करके सबको चकित कर दिया, क्योंकि हिंदी माध्यम से इतनी अच्छी सफलता हासिल करना हर किसी के लिए अचरज वाली खबर थी। वह भी तब जब कानाराम ने अभाव और कठिन परिस्थितियों में इस हाई प्रोफाइल एग्जाम की पढ़ाई भी की और घर का खर्चा भी चलाया। हालांकि ग्राम सेवक से सेकंड ग्रेड टीचर में भी इनका सिलेक्शन हो गया था, लेकिन आंखों और दिल में आईएएस बनने का ख्वाब हर पल इन्हें अच्छे से अच्छा परफॉर्मेंस करने के लिए बेताब कर रहा था, जिसकी वजह से इन्होंने लोहे की तरह तप तप कर अपने कठिन संघर्ष से खुद को मजबूत किया और फिर अपने ख्वाब को पूरा करके अपने करियर को शिखर तक पहुंचाया। इसलिए वे युवा जो अपनी गरीबी और परिवार के हालातो को कमजोर समझ कर पढ़ाई में ब्रिलिएंट होते हुए भी खुद को हाई प्रोफाइल एग्जाम के लिए तैयार नहीं कर पाते हैं, उन्हें एक बार कानाराम की आईएएस बनने की सक्सेस स्टोरी को जरूर पढ़ना चाहिए, वे जरूर कानाराम की स्टोरी को पढ़ कर मोटिवेट होंगे।

कलेक्टर नहीं खुद को जनता का नौकर और सेवक मानते हैं कानाराम

कानाराम लोप्रोफाइल के आईएएस अधिकारी माने जाते हैं जो दिखावे की बजाय सिर्फ चुपचाप ईमानदारी और कर्मठता से अपना कार्य करने में ज्यादा विश्वास करते हैं। खुद को कलेक्टर नहीं बल्कि जनता का नौकर और सेवक मानकर जिले में दूर दराज के इलाके में अंतिम पंक्ति पर बैठे व्यक्ति को सरकारी योजनाओं का फायदा पहुंचा कर उसके कल्याण और विकास पर ज्यादा फोकस रखते हैं। इनकी यही निपुणता और कला इन्हें एक लोकप्रिय और कर्मठ कलेक्टर के रूप में स्थापित किए हुए हैं, भले ही ग्रामीण परिवेश में इनका जन्म हुआ हो, लेकिन अनुशासित और संयमित जीवन बचपन से ही जीते आ रहे हैं। इसलिए चाहे प्रदेश में विभिन्न जिलों में कलेक्टर पद पर रहे हो या फिर अन्य विभागों में बड़े पदों पर रहे हो, हमेशा निर्धारित समय पर कार्यालय पर उपस्थित होना और निर्धारित समय पर ही दफ्तर को छोड़ना इनकी वर्किंग स्टाइल में शामिल है। तथा अपने ऑफिस के दरवाजे 24 घंटे फरियादियों के लिए खुला रखना इनकी आदत में शुमार है, कोई भी पीड़ित व्यक्ति कभी भी आकर इन्हें अपनी पीड़ा बता सकता है। इसके अलावा समय-समय पर खुद भी जिले के विभिन्न गांव में जाकर रात्रि चौपाल का आयोजन करते रहते हैं और लोगों की समस्याओं को सुनकर उनका निस्तारण भी करवाते हैं। डूंगरपुर हनुमानगढ़ और सवाई माधोपुर में कलेक्टर पद पर रहने के दौरान इन्होंने कई रात गांव में ग्रामीणों के साथ बिताते हुए देखा गया है, और ठेठ ग्रामीण की तरह गांव की चौपाल पर जनता दरबार लगाकर लोगों की समस्याओं को सुनकर इनकी ओर से समस्याओं का निवारण करते हुए भी देखा गया है।

किसान और ग्रामीण क्षेत्र के कल्याण और विकास के लिए कर रहे सतत प्रयास

कानाराम वर्तमान में सवाई माधोपुर जिले के कलेक्टर हैं, इससे पहले डूंगरपुर और हनुमानगढ़ जिलों के कलेक्टर भी रहे हैं। इससे पहले आईएएस के शुरू के कार्यकाल में बारा में एसडीएम पद पर भी नियुक्त रहे। विभिन्न जिलों में कलेक्टर रहने के दौरान ग्रामीण क्षेत्र के सर्वांगीण और समुचित विकास के लिए सरकार की ओर से संचालित की जा रही योजनाओं का शानदार तरीके से संपादन तो करवाया ही, इसके अलावा खेती और कृषि में कई नवाचार भी इन्होंने किया जिनका किसानों को काफी फायदा हुआ। कानाराम खुद ग्रामीण परिवेश में पले हैं और ग्रामीण क्षेत्र की समस्याओं तथा किसानों की पीड़ा को बखूबी से जानते हैं, इसलिए कृषि विभाग, पंचायती राज विभाग, राजस्व विभाग और अन्य विभागों से संबंधित योजनाओं और कार्यक्रमों का जिला कलेक्टर रहने के दौरान इन्होंने अपने जिलों में बहुत ही प्रभावी और खूबसूरत तरीके से क्रियान्वयन करवाया। केंद्र और राजस्थान सरकार की ओर से संचालित की जा रही विभिन्न तरह की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ समाज में अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति को मिले, इसके लिए जिलों के कलेक्टर रहने के दौरान इनकी ओर से की गई प्रबंधन व्यवस्था काफी बेमिसाल रही। जिसकी वजह से एक तरफ जहां जिले की ग्राम पंचायत में समुचित रूप से सरकारी पैसे का सदुपयोग हुआ, विशेष रूप से मनरेगा जैसी योजना पर इन्होंने हमेशा अपनी बारीकी से नजर जमाए रखी और जिले भर में ग्राम पंचायत स्तर पर हो रहे विकास कार्यों का फीडबैक संबंधित अधिकारियों से लेते रहे, और खुद मौके पर जाकर कार्यों का निरीक्षण भी करते रहे। जिसकी वजह से इनकी देखरेख वाले जिले में मनरेगा के कार्यों का भी बहुत अच्छा प्रदर्शन रहा और कहीं पर किसी भी काम को लेकर किसी भी तरह की कोई शिकायत और गड़बड़ी भी उजागर नहीं हुई। इस तरह से डूंगरपुर और हनुमानगढ़ जिलों में कलेक्टर रहने के दौरान ग्राम पंचायत में इनकी देखरेख और मॉनिटरिंग में व्यापक पैमाने पर विकास कार्य हुए। अब सवाई माधोपुर में भी इनके कलेक्टर के कार्यकाल में एक तरफ जहां केंद्र सरकार और राजस्थान सरकार की ओर से संचालित विभिन्न तरह की जनकल्याणकारी योजनाओं का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन हो रहा है, तो दूसरी तरफ सरकार की ओर से जिले में किया जा रहे बड़े-बड़े

अधिकारियों के साथ नियमित रूप से बैठक करके उन्हें किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ और राहत पहुंचाने के लिए निर्देशित करते रहते हैं। इसलिए कानाराम के बारे में यही कहा जाता है कि ग्रामीण क्षेत्र के लोगों और किसानों के एक सच्चे हितेषी के रूप में लोग इन्हें ज्यादा जानते हैं।

विकास कार्यों और प्रोजेक्ट के निर्माण में भी इनकी प्रभावी मॉनिटरिंग देखते ही बनती है। जिसकी वजह से प्रदेश की भजनलाल सरकार भी सवाई माधोपुर जिले में कलेक्टर के रूप में कानाराम की वर्किंग स्टाइल और कार्यों से काफी खुश और प्रभावित है। अन्यथा पिछले 1 साल में प्रदेश की भजनलाल सरकार ने कई बार अधिकारियों के तबादला किया, लेकिन कानाराम करीब 1 साल से सवाई माधोपुर जिले में कलेक्टर पद की भूमिका को बहुत ही शानदार तरीके से निभा रहे हैं। जिसकी वजह से स्थानीय जनता भी उनके कार्यों से काफी खुश और संतुष्ट है, तो राजनेता भी इनकी वर्किंग स्टाइल से काफी प्रभावित है। जानकार लोगों का कहना है कि कानाराम किसान और खेती के कल्याण और विकास के लिए हमेशा संवेदनशील और सजक रहते हैं। भले ही यह कृषि विभाग से जुड़ा मामला हो, लेकिन कलेक्टर पद के रूप में भी कानाराम अपने स्तर पर भी जिले के किसानों और ग्रामीण जनता को खेती में नवाचार, नवीनतम तकनीक के उपयोग, खेती की जमीन का नियमित परीक्षण, जैविक खेती को बढ़ावा, कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के आधार पर ही खेतों में फसल उगाना जैसे विषयों के बारे में किसानों को ज्यादा से ज्यादा जानकारी उपलब्ध करवाने की दिशा में कार्य करते नजर आते हैं। इसके अलावा किसानों को सहकारिता के माध्यम से समुचित रूप से फसलों के लिए ऋण, बीज, दवाइयां, यंत्र उपकरण इत्यादि उपलब्ध करवाने की दिशा में भी सहकारिता विभाग के

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भी कर चुके हैं सम्मानित

जानकारी के अनुसार डूंगरपुर हनुमानगढ़ जिलों में कलेक्टर रहने के दौरान विभिन्न सामाजिक संगठनों स्वयंसेवी संस्थाओं इत्यादि की ओर से अनेक बार कानाराम को उनके उल्लेखनीय कार्यों के लिए सम्मानित किया जा चुका है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में बेस्ट परफॉर्मेंस के लिए केंद्र सरकार और राजस्थान सरकार की ओर से भी इन्हें सम्मानित किया जा चुका है। इसके अलावा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भी एक अच्छे और श्रेष्ठ कलेक्टर की भूमिका के रूप में कानाराम को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सम्मानित कर चुके हैं। सवाई माधोपुर जिले में भी पिछले 1 साल में कलेक्टर की भूमिका में इनकी ओर से किए गए उल्लेखनीय कार्यों की गूंज शासन सचिवालय के गलियारों में ही नहीं बल्कि दिल्ली के लोकसभा गलियारों में भी खूब सुनाई दी है। निश्चित रूप से ग्राम सेवक पद से सीधे आईएएस पद पर लॉन्ग जंप लगाने वाले कानाराम असाधारण प्रतिभा के धनी है।

माध्यमिक शिक्षा निदेशक पद की भूमिका भी शानदार तरीके से निभाई

भारतीय प्रशासनिक अधिकारियों में कानाराम की गिनती बेहद ही सरल, सीधे, मधुर, ईमानदार, अनुशासित, संयमित और नए-नए नवाचार करने वाले अधिकारियों में होती है। प्रदेश में करीब 13 साल की नौकरी के दौरान एक आईएएस अधिकारी के रूप में इन्हें अलग-अलग जगह पर अलग-अलग जिम्मेदारी दी गई। जहां भी और जिस भी विभाग में इन्हें जो जिम्मेदारी दी गई, उस जिम्मेदारी को न केवल बखूबी तरह से निभाया, बल्कि वहां अपने नवाचारों और नए प्रयोगों से विभाग की वर्किंग स्टाइल और पारदर्शिता को काफी स्वच्छ और मजबूत बनाया। जिसका लोगों को तो काफी फायदा मिला ही, इसके अलावा अधीनस्थ अधिकारियों और कर्मचारी के कामकाज और व्यवहार में भी काफी कुछ सुधार हुआ। शुरू शुरू में इन्हें बारा जैसे जिले में एसडीएम पद पर नियुक्ति मिली, जिसमें क्षेत्र के लोगों से नियमित जनसुनवाई करके लोगों की विभिन्न तरह की समस्याओं का निस्तारण करवाने में अपनी बड़ी भूमिका निभाई। इसके अलावा सरकार की ओर से संचालित की जा रही योजनाओं का लाभ जरूरतमंद लोगों तक मिले, इसके लिए इन्होंने अपनी सर्विस के शुरू के कार्यकाल में ही अपनी प्रभावी मॉनिटरिंग और पब्लिक से गहरे जुड़ाव के माध्यम से प्रदेश सरकार और जनता दोनों का दिल जितने में सफल रहे। राज्य स्वास्थ्य बीमा एजेंसी के संयुक्त कार्यकारी अधिकारी के रूप में मिली नई जिम्मेदारी को भी इन्होंने शानदार तरीके से निभाया। इसके बाद कृषि और पंचायत राज के आयुक्त पद पर भी इनका कार्यकाल शासन सचिवालय के गलियारों में काफी उत्कृष्ट माना जाता है। बाद में जब इन्हें माध्यमिक शिक्षा का निदेशक बनाया गया, तो यहां प्रदेश में स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता के साथ-साथ, परीक्षाओं का निर्धारित समय पर आयोजन होना, निश्चित समय पर ही रिजल्ट घोषित होना, स्कूलों की शिक्षण व्यवस्था, स्कूलों में खेलकूद, नैतिक आचरण, वाद विवाद, निबंध, लेखन प्रतियोगिता, व्यायाम, योग, शारीरिक शिक्षा इत्यादि सभी क्षेत्र में कानाराम की ओर से उठाए गए कदम और प्रयोग छात्र-छात्राओं के हितों के लिए तो हित कर रहे ही, इसके अलावा माध्यमिक शिक्षा निदेशक के पद पर इनके कार्यकाल को काफी उत्कृष्ट और सर्वश्रेष्ठ माना गया। इसी का परिणाम रहा कि जब इस पद से इनका तबादला जयपुर कर दिया गया था, तो फिर वापस दोबारा से सरकार ने इन्हें माध्यमिक शिक्षा निदेशक पद पर जिम्मेदारी दी थी। वजह यही है कि कानाराम ने खुद स्कूली शिक्षा ग्रामीण क्षेत्र से ही अर्जित की थी, इसलिए स्कूली स्तर पर शिक्षा से जुड़ी सभी समस्याओं और कमियों को भली भांति जानते थे। इसीलिए माध्यमिक शिक्षा का निदेशक बनने के बाद पूर्व के अनुभव के आधार पर कानाराम ने माध्यमिक शिक्षा को नई दिशा और गति देने में जबरदस्त सफलता हासिल की। इसके बाद डूंगरपुर जिला कलेक्टर पद पर रहने के दौरान भी इनके कार्यकाल में डूंगरपुर जिले में कई बड़े-बड़े जन आंदोलन हुए, लेकिन अपनी दूरदर्शी सोच, सामूहिक मंथन और अच्छे व्यवहार से इन बड़े-बड़े जन आंदोलन को भी शांतिपूरक तरीके से निपटाया। तथा डूंगरपुर जैसे आदिवासी जिलों में आदिवासी बहुल लोगों के कल्याण और विकास के लिए केंद्र सरकार और राजस्थान सरकार की ओर से संपादित की जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ हर जरूरतमंद व्यक्ति को दिलवाने वाले कलेक्टरों की सूची में अग्रिम पंक्ति में नजर आए।

वोट डालने को लेकर "एक पाति माता पिता के नाम" अभियान को लेकर भी देश भर में चर्चा में रहे कानाराम

जानकारी के अनुसार डूंगरपुर और हनुमानगढ़ जिलों में कलेक्टर रहने के दौरान कानाराम ने चुनाव में वोटिंग प्रतिशत की वृद्धि और एक-एक वोट के महत्व के बारे में लोगों को ज्यादा से ज्यादा बताने के लिए स्कूल कॉलेज और यूनिवर्सिटी के छात्र-छात्राओं के माध्यम से अपने माता-पिता के नाम एक विशेष पत्र लिखने के अभियान का शुभारंभ करवाया। जिसमें बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने अपने माता-पिता को वोट का महत्व समझाते हुए वोट डालने के लिए मार्मिक अपील की। यह अभियान भी जिले में शानदार तरीके से संपादित हुआ और हर स्कूल कॉलेज और यूनिवर्सिटी में बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने अपने माता-पिता को वोट डालने के लिए पत्र लिखकर प्रेरित किया। कानाराम का कहना था कि हर माता-पिता अपने बच्चों की बात पर सबसे ज्यादा भरोसा और विश्वास करता है और अपने बच्चे कि किसी भी इच्छा को किसी भी हालत में इग्नोर नहीं करता। इसलिए इस अभियान में छात्र-छात्राओं की ओर से लिखे गए पत्र को माता-पीताओं ने काफी गंभीरता से लिया, जिसका सीधा असर चुनाव में जिले में वोटिंग प्रतिशत पर भी पड़ा। इस अभियान के बाद चुनाव में जिले में मतदान के प्रतिशत में जबरदस्त इजाफा हुआ। इस अभियान के शानदार संपादन को लेकर भी कानाराम राजस्थान में ही नहीं बल्कि पूरे देश में चर्चा का विषय बन गए थे।

कानाराम ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में नवीन प्रयोग और नवाचार करके हनुमानगढ़ को पूरे देश में दिलाए विशेष पहचान

जानकारी के अनुसार हनुमानगढ़ में जिला कलेक्टर रहने के दौरान कानाराम ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में जिले के किसानों को रिकॉर्ड क्लेम की राशि का वितरण करवाया। जबकि इससे पहले हनुमानगढ़ जिले में बीमा कंपनियां फसल कटाई के प्रयोग में बड़ी संख्या में आपत्तियां दर्ज कर देती थी, जिसकी वजह से किसानों को क्लेम की राशि नहीं मिल पाती थी, और कई बार कई चक्कर काटने के बावजूद भी किसानों को क्लेम की राशि नहीं मिल पाती थी। बताया जाता है कि वर्ष 2022 और 2023 में बीमा कंपनियों ने हनुमानगढ़ जिले में ही करीब 1 लाख आपत्तियां दर्ज कर दी थी, जिसकी वजह से किसानों को क्लेम की राशि नहीं मिल पाई। इस विषय को कानाराम ने हनुमानगढ़ जिले का कलेक्टर बनने के बाद काफी गंभीरता से लिया और फसल कटाई में पारदर्शी और तकनीक आधारित नीति अपनाई गई, जिसमें फसल कटाई के प्रयोग से पहले बीमा कंपनियों को सूचना देना अनिवार्य किया गया, और फिर फसल कटाई प्रयोग के दौरान थ्रेशिंग, तोल इत्यादि के वीडियो और फोटो खींचना मौके पर अनिवार्य किया गया। जिसकी वजह से कानाराम के कलेक्टर बनने के बाद हनुमानगढ़ जिले में वर्ष 2024 में एक भी आपत्ति बीमा कंपनियों की ओर से फसल कटाई के प्रयोग को लेकर दर्ज नहीं की गई, तथा 2022-23 में जहां 100000 आपत्तियां बीमा कंपनियों की ओर से दर्ज थी, वह आपत्तियां 7000 तक आकर सीमित हो गई। इस तरह से कानाराम के इन नवीन प्रयोगों ने जिले के किसानों को राहत पहुंचाई, और कानाराम का यह नया प्रयोग जिले के किसानों के लिए वरदान बन गया और किसानों को क्लेम की राशि का पेमेंट मिला। उन्हें बीमा कंपनियों के चक्कर भी काटने नहीं पड़े क्योंकि कानाराम लगातार बैंक और बीमा कंपनियों के अधिकारियों से भी बैठक लेकर किसानों को उनकी क्लेम की राशि का समय पर भुगतान करने के लिए निर्देशित करते रहे, जिससे किसानों को आसानी से क्लेम की राशि का भुगतान मिला। इतना ही नहीं, फसल बीमा योजना में हनुमानगढ़ जिला उस समय पूरे देश में सर्वश्रेष्ठ तीन जिलों में शामिल रहा, दो जिले कर्नाटक के थे, जिस पर तिरुवनंतपुरम में आयोजित एक राष्ट्रीय सम्मेलन में कानाराम को इस उल्लेखनीय प्रदर्शन और नवाचार के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया।

कानाराम के मानस नशा मुक्ति अभियान ने पूरे देश भर में सुर्खियां बटोरी

हनुमानगढ़ जिला पंजाब की सीमा से जुड़ा हुआ है और पंजाब नशे को लेकर पूरे देश में किस तरह से बदनाम है यह किसी से छुपा हुआ नहीं है। इसलिए हनुमानगढ़ जिले के पंजाब से जुड़े रहने की वजह से हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर जैसे जिलों में भी युवाओं में नशे की प्रवृत्ति ज्यादा थी। इस समस्या को भी कलेक्टर होने के नाते कानाराम ने काफी गंभीरता से लिया और स्कूल तथा कॉलेज के दोनों में ही स्टूडेंटों को नशे से दूर रखने के लिए व्यापक स्तर पर पुलिस के सहयोग से जिला प्रशासन ने एक बड़ी कार्य योजना तैयार की। जिसमें पीएम श्री स्कूलों और जिले की सभी छोटी बड़ी स्कूलों और शिक्षण संस्थानों में नसे की प्रवृत्ति से दूर रहने के लिए छात्र-छात्राओं के लिए विभिन्न तरह के कार्यक्रमों का आयोजन करके उन्हें यह बताने का प्रयास किया गया कि नशे से नशा करने वाले व्यक्ति का ही जीवन बर्बाद नहीं होता, बल्कि पूरा परिवार बर्बाद होता है, और जब परिवार बर्बाद होता है तो समाज बर्बाद होता है, और जब समाज बर्बाद होता है तो राष्ट्र को नुकसान होता है। इसलिए युवाओं को सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ाने तथा उन्हें नशे से दूर रहने की शिक्षा स्कूली स्तर पर ही देकर जिला प्रशासन और पुलिस ने पूरे जिले में व्यापक स्तर पर कार्यक्रम संपादित किया जो देखते-देखते पूरे जिले में एक बड़ा जन आंदोलन बन गया। जिसमें स्वयंसेवी संस्थाओं, सामाजिक संगठनों और व्यापारिक संगठनों ने भी जिला प्रशासन और पुलिस के इस नेक कार्य में सहभागिता दिखाई, जिसके बहुत अच्छे परिणाम सामने आए और जिले में काफी हद तक युवाओं में नशे से दूर रहने की प्रवृत्ति दिखाई देने लगी। इस पूरे अभियान को मानस नशा मुक्ति अभियान नाम दिया गया, जिसकी गूंज राजस्थान में ही नहीं बल्कि पूरे देश में सुनाई दे रही थी।

1. गैंगस्टर आनंदपाल सिंह एनकाउंटर वाली टीम में पुलिस के सक्रिय मेंबर रहे करण शर्मा ने एसबी, एसओजी, सीआईडी विजिलेंस और जेडीए में पोस्टेड रहने के दौरान ताबड़तोड़ प्रभावी कार्रवाईयां करके खाकी की इज्जत और मान सम्मान में लगाए चार चांद।
2. कई जिलों में डीवाईएसपी, एडिशनल एसपी और पुलिस अधीक्षक पद पर रहने के दौरान कई ब्लाइंड मर्डर और गंभीर अपराधों का खुलासा कर दोषी अपराधियों को जेल की सलाखों के पीछे भिजवाया।
3. सीकर और आसपास के जिलों में बड़े-बड़े गैंगस्टर के गैंग के सदस्यों को बड़ी संख्या में गिरफ्तार कर गैंग का किया सफाया।

बड़े-बड़े गैंगस्टर, हनी ट्रैप और फ्रॉड करने वालों में दबंग आईपीएस करण शर्मा का खौफ

जयपुर। आईपीएस करण शर्मा की अब तक की पुलिस की नौकरी का रिकॉर्ड कई बड़ी-बड़ी उपलब्धियों और उत्कृष्ट कार्यों से भरा पड़ा है। इनका पुलिस की नौकरी का रिकॉर्ड काफी अद्भुत और चमत्कारिक रहा है। इनके एक के बाद एक पुलिस से जुड़े विभिन्न विभागों में शानदार प्रदर्शन को देखते हुए, राजस्थान पुलिस मुख्यालय और राजस्थान सरकार ने इन्हें पुलिस के करीब करीब सभी विभागों में नियुक्ति देकर इनके अनुभव और इनकी दबंगई का फायदा आमजन को पहुंचाने का प्रयास किया है। दिखने में जितने सीधे और सरल लगते हैं, उतने ही खूंखार से खूंखार बदमाशों के लिए जी का जंजाल और काल बनते हुए भी इन्हें देखा गया। बात चाहे गैंगस्टर आनंदपाल सिंह के एनकाउंटर की हो, या फिर गैंगस्टर राजू ठेठ और अन्य कई बड़े-बड़े गैंगस्टर गैंग से जुड़े बदमाशों को पकड़ने की हो, या फिर अनेक ब्लाइंड मर्डर और गंभीर अपराधों का पर्दाफाश करने की बात हो, इनमें हर जगह करण शर्मा ने अपनी वर्किंग स्टाइल, दबंगई और चतुराई से प्रभावी कार्रवाईयां करके राजस्थान सरकार और राजस्थान पुलिस मुख्यालय में विराजमान सीनियर पुलिस अधिकारियों का भरोसा और दिल जीता। वर्ष 1997 में राजस्थान पुलिस सेवा से अपनी सर्विस की शुरुआत करने वाले इस ऑनेस्ट पुलिस अधिकारी के सामने कई बार बड़ी-बड़ी चुनौतियां और बड़ी-बड़ी मुश्किलें सामने आई, लेकिन हर बार बड़ी-बड़ी बाधा और बड़े-बड़े बदमाशों का सामना करते हुए राजस्थान पुलिस के गौरव को हमेशा आगे बढ़ाया। राजस्थान सरकार और पुलिस मुख्यालय ने भी इनकी ईमानदारी, कर्मठता और दबंगई को देखकर इन्हें स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप, भ्रष्टाचार निरोधक विभाग, सीआईडी विजिलेंस, जेडीए में प्रवर्तन शाखा, क्राइम ब्रांच के साथ-साथ इनके भारतीय पुलिस सेवा में शामिल होने के बाद प्रदेश के कई संवेदनशील जिलों में पुलिस की बागडोर इन्हें दी गई। हर जिले में इन्होंने बड़े-बड़े बदमाशों और गैंगस्टरों के गैंग के खिलाफ नियमित रूप से प्रभावी कार्रवाई करके बड़ी संख्या में बदमाशों को जेल की सलाखों के पीछे भेजा। जिसमें सीकर जिले में पुलिस अधीक्षक पद पर रहने के दौरान इन्होंने आनंदपाल सिंह, राजू ठेठ और कई अन्य बड़े-बड़े गैंगस्टर गैंग से जुड़े बदमाशों की बड़ी संख्या में गिरफ्तारियां की, जिसकी वजह से यह सारे बड़े गैंग धराशाई हो गए थे। जिले में शांति और कानून व्यवस्था का एक नया माहौल बना, तथा आमजन और व्यापार जगत से जुड़े लोगों को बड़ी राहत मिली। पिछले करीब 10 महीने से राजधानी जयपुर का उत्तर इलाका जो बहुत ही संवेदनशील माना जाता रहा है और यह इलाका हमेशा जयपुर जिला प्रशासन और पुलिस के लिए बड़ी चुनौती और मुश्किल रहा है, लेकिन पिछले 10 महीने में करण शर्मा ने अपनी वर्किंग स्टाइल, दबंगई और जनता से एक बेहतर जुड़ाव के माध्यम से इस इलाके में शांति और कानून व्यवस्था कायम करने में जो सफलता हासिल की है वह दिल को काफी सुकून देने वाली है। क्योंकि यह ऐसा इलाका है जहां छोटी सी बात को लेकर भी जातिगत और सांप्रदायिक झगड़ा होने में बिल्कुल भी देरी नहीं होती, लेकिन पिछले 10 महीने में करण शर्मा ने इस इलाके में पुलिस का जो नेटवर्क स्थापित किया है वह काफी बेमिसाल है। जिसमें हर जाति और बिरादरी के लोगों के बीच आपस में भाईचारा और सद्भाव की भावना मजबूत हुई है, जिससे इलाके में शांति और कानून व्यवस्था तो मजबूत हुई है ही, इसके अलावा इलाके में अपराध की घटना घटने से पहले ही अपराध को रोक लिया जाता है। जिसकी वजह से जयपुर शहर उत्तर के इलाके में फूल खिले गुलशन गुलशन जैसे हालात बने हुए हैं।

जयपुर उत्तर जैसे संवेदनशील इलाके में पिछले 10 माह से फूल खिले गुलशन गुलशन जैसे हालात

सालों से जयपुर उत्तर का इलाका संवेदनशील माना जाता है। यहां छोटी-छोटी बातों पर ही बड़ा बवंडर, सांप्रदायिकता और जातिगत हिंसा जैसे दृश्य देखने को मिलते रहे हैं। इसलिए यह इलाका पुलिस और जिला प्रशासन के लिए हमेशा बड़ी चुनौती और मुश्किल भरा रहता है। लेकिन यह करण शर्मा की दबंगई और उनकी वर्किंग स्टाइल का असर ही है कि पिछले 10 महीने में यह इलाका पूरी तरह से शांत रहा। इस दौरान अगर कोई अपराध की कोई घटना भी हुई, तो उसका पुलिस ने तुरंत ही निस्तारण करके आरोपी व्यक्ति को दबोचा। जिसमें बड़ी चौपड़ पर एक ज्वेलर से लूटपाट करने वाले बदमाशों को पुलिस ने बहुत जल्दी ही दबोच लिया। इसी तरह से जया किशोरी की कथा में अन्य जेब काटने वाली अन्य राज्यों से आई एक बड़ी गैंग को दबोचा। करण शर्मा ने अपने पुराने विशाल अनुभव के आधार पर जयपुर उत्तर में पुलिस का एक ऐसा मजबूत नेटवर्क स्थापित कर दिया है कि इलाके में अगर छोटी सी अपराध की घटना होने का थोड़ा सा भी अंदेशा होता है, तो इसकी भनक तुरंत पुलिस को मिल जाती है, और पुलिस तुरंत मौके पर पहुंचकर अपराध की घटना को काटने से रोक देती है। जयपुर उत्तर में करण शर्मा नियमित रूप से पुलिस थानों में जाकर जनसुनवाई भी करते रहे हैं, और पुलिस स्टेशनों के कामकाज की समीक्षा करके पुलिस स्टेशन में तैनाद अधिकारियों और कर्मचारियों को जनता की शिकायतों का जल्दी से जल्दी निस्तारण करने के लिए प्रेरित भी करते रहते हैं। पुलिस की बीट व्यवस्था को मजबूत बनाने, होटल, ढाबा, रेस्टोरेंट, धर्मशाला, मदरसा इत्यादि सभी जगह पर नियमित रूप से पुलिस यहां ग्राहकों के आने वालों के बारे में तमाम तरह की जानकारी हासिल करती है। जयपुर उत्तर में बड़ी संख्या में पर्यटन स्थल भी हैं, जिसमें हवा महल, आमेर फोर्ट, जंतर मंतर, सिटी पैलेस इत्यादि सभी जगह पर पर्यटकों के साथ किसी भी तरह की कोई धोखाधड़ी नहीं हो और पर्यटकों की सुरक्षा का अच्छा माहौल मिले, इसके लिए अलग से पुलिस की टीमों का गठन करके इन पर्यटन स्थलों पर नियुक्त किया गया है। पुलिस और जनता के बीच नियमित रूप से संवाद होता रहे, इसके लिए थाना स्तर पर, जिला स्तर पर नियुक्त सीएलजी मेंबरों के साथ समय-समय पर बैठक आयोजित करके इलाके की गतिविधियों के बारे में जानकारी हासिल की जाती है। इलाके के व्यापार जगत से जुड़े लोगों और विभिन्न सामाजिक संगठन से जुड़े लोगों के साथ भी पुलिस नियमित रूप से संवाद करती रहती है, जो इलाके में शांति और कानून व्यवस्था बनाए रखने में काफी सहायक साबित हो रही है। इसके अलावा थाना स्तर पर वांटेड अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए प्लानिंग तैयार करके फरार बदमाशों को पकड़ने में भी लगातार पुलिस को कामयाबी मिल रही है। थाना स्तर पर घोषित हिस्ट्रीसीटर और उनके संपर्क सूत्रों, दोस्तों सभी की गतिविधियों पर नियमित रूप से कड़ी निगरानी रखी जाती है। अपराध जगत से जुड़े जो लोग जो जेल में हैं और जो जेल से बाहर हैं, उन सब पर करण शर्मा की तीसरी निगाह हमेशा वॉच करती रहती है। इसी का असर है कि जयपुर उत्तर इलाके में अपराधों में जबरदस्त गिरावट आई है, और हिंदू मुस्लिम सभी धर्म के त्योहार बड़े ही शांतिपूरक तरीके से पिछले 10 माह में यहां संपादित हुए हैं। जिसमें पिछले दिनों जयपुर दिल्ली राजमार्ग पर ईदगाह और जोहरी बाजार सहित कई इलाकों में बहुत ही शांतिपूर्वक तरीके से लाखों लोगों ने ईद की नमाज पढ़ी। जयपुर उत्तर इलाके में जमीन ज्यादा का कारोबार भी काफी ज्यादा होता है, ऐसे में अपराध की संभावनाएं और बढ़ जाती है। लेकिन करण शर्मा ने यहां पहले से ही अपने खुफिया तंत्र को इस तरह से डेवलप किया हुआ है कि यहां फ्रॉड और अपराध की वारदातों को अंजाम देने वाले लोगों की दाल ठीक तरह से नहीं गल रही।

करण शर्मा की करीब 29 साल की पुलिस की नौकरी का अभूतपूर्व शानदार सफर

वर्ष 1997 में राजस्थान पुलिस सेवा में नियुक्त होने के बाद करण शर्मा को प्रदेश में अलग-अलग जगह पर डीवाईएसपी पद पर नियुक्ति दी गई, जिसमें सांभर, अजमेर ट्रैफिक पुलिस, किशनगढ़, खानपुर इत्यादि जगहों पर नियुक्त रहे। इसके बाद अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के तौर पर क्राइम ब्रांच में भी काम किया। अजमेर ग्रामीण, जयपुर पश्चिम और जयपुर विकास प्राधिकरण में भी प्रवर्तन शाखा में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पद पर नियुक्त रहे। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप में भी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक की भूमिका में काम करते हुए गैंगस्टर आनंदपाल का एनकाउंटर करने वाली टीम के सक्रिय मेंबर रहे। जयपुर ग्रामीण में भ्रष्टाचार निरोधक विभाग में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पद पर काम करते हुए बड़ी संख्या में भ्रष्ट अधिकारियों और कर्मचारियों को रिश्वत लेते गिरफ्तार किया। इसके अलावा वसुंधरा राजे के प्रथम शासन काल में वसुंधरा राजे ने मुख्यमंत्री कार्यालय में प्रदेश में भ्रष्ट अधिकारियों और कर्मचारी के बारे में मिलने वाली शिकायतों की जांच पड़ताल के लिए एक अलग से विंग की स्थापना की थी, जिसकी कमान करण शर्मा को दी गई, जिस पर यहां भ्रष्टाचार की शिकायत संबंधी दर्जनों मामलों की जांच पड़ताल कंप्लीट करके मुख्यमंत्री कार्यालय को प्रेषित की। इनके कार्यों से वसुंधरा राजे भी काफी प्रभावित थी द्य इसी तरह से स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप में नियुक्त रहने के दौरान करण शर्मा ने कई बड़े-बड़े मामलों का खुलासा करके उस समय जयपुर और पूरे प्रदेश भर में सुर्खियां बटोरी थी, जिसमें हनी ट्रैप के मामलों में करण शर्मा की ओर से की गई प्रभावी कार्रवाइयों की गूंज पूरे प्रदेश भर में हुई द्य जयपुर विकास प्राधिकरण में भी अपनी ईमानदार छवि को बरकरार रखते हुए इन्होंने प्रवर्तन शाखा के कामकाज को काफी पारदर्शक और साफ सुथरा बनाने में बड़ी भूमिका निभाई थी, और जब तक यह जेडीए में रहे तब तक अवैध कब्जे और अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई रोजाना प्रभावी रूप से संपादित होती हुई देखी गई। इनका जेडीए का कार्यकाल भी काफी उत्कृष्ट माना जाता है। वर्ष 2022 में करण शर्मा को पदोन्नति मिली और यह पुलिस अधिकारी अब भारतीय पुलिस सेवा का हिस्सा बन चुके थे। इसके बाद इन्हें सीकर, भिवाड़ी, कोटा ग्रामीण जिला पुलिस अधीक्षक पद पर भी काम करने का अवसर दिया गया। इन सभी जिलों में अपराध जगत से जुड़े लोगों के खिलाफ इनकी ओर से की गई प्रभावी कार्रवाइयों की वजह से इनके नाम से ही बड़े से बड़े गुंडे या तो भूमिगत हो जाते थे, या फिर जिला छोड़कर चले जाते थे। क्योंकि करण शर्मा जहां भी नियुक्त होते थे, वहां बदमाशों के खिलाफ पूरी प्लानिंग और नियोजित तरीके से अभियान चलाकर काम को अंजाम दिया करते थे, और हर छोटे-बड़े अपराधियों के मूवमेंट और गतिविधियों पर खुद निगरानी रखते थे। अपराधियों के संपर्क सूत्र, दोस्तों, रिश्तेदारों, परिजनों सब पर करण शर्मा की प्रभावी मॉनिटरिंग 24 घंटे संपादित होती रहती थी, जिसकी वजह से कई बड़े-बड़े बदमाशों को पदकर इन्होंने जेल में भेजा। इसीलिए यह जहां भी जिस भी जिले में जाते थे, वहां के गुंडा गैंग इनका नाम सुनते ही या तो भूमिगत हो जाते थे, या फिर जिला छोड़कर चले जाते थे। करण शर्मा ने क्राइम ब्रांच में भी एसपी पद पर काम करते हुए उल्लेखनीय प्रदर्शन किया। पिछले 10 महीने से जयपुर उत्तर में डीसीपी पद पर पोस्टेड है।

गैंगस्टर आनंदपाल के एनकाउंटर करने वाली टीम के सक्रिय सदस्य थे करण शर्मा

गैंगस्टर आनंदपाल का एनकाउंटर करने वाली टीम के कारण शर्मा प्रभावी सदस्य रहे हैं। आनंदपाल सिंह और उसके भाइयों और साथियों की लोकेशन का पता लगाने, आनंदपाल सिंह के संपर्क सूत्रों, परिजन, दोस्तों, रिश्तेदारों इत्यादि की गतिविधियों पर नियमित रूप से कड़ी निगरानी रखने और आनंदपाल सिंह के विभिन्न ठिकानों के बारे में जानकारी जुटाना जैसे महत्वपूर्ण विषयों में करण शर्मा की विशेष भूमिका रही। उस समय करण शर्मा स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप में एडिशनल एसपी पद पर नियुक्त थे, और आनंदपाल सिंह के भाइयों की गिरफ्तारी और फिर आनंदपाल सिंह के एनकाउंटर करने वाली टीम में भी करण शर्मा की प्रभावी भूमिका रही। इतना ही नहीं, जब करण शर्मा को सीकर का पुलिस अधीक्षक बनाया गया, तब सीकर में राजू ठेठ, आनंदपाल सिंह और अन्य कई बड़े गैंगस्टरों के बीच आपस में वर्चस्व की लड़ाई चल रही थी। हालांकि उस समय राजू ठेठ और आनंदपाल सिंह दोनों ही दुनिया में नहीं थे, लेकिन इन दोनों के ही गैंग सीकर और शेखावाटी क्षेत्र में जबरदस्त तरीके से सक्रिय थे, और एक दूसरे को ठिकाने लगाने के लिए आपस में एक दूसरे पर जानलेवा हमला भी कर रहे थे। ऐसे में जिले में अशांति और घबराहट का माहौल बना रहता था। आमजन और व्यापार जगत से जुड़े लोग भी काफी परेशान थे। ऐसे में करण शर्मा ने इन सभी बड़े-बड़े गैंगस्टर गैंग से जुड़े लोगों की गिरफ्तारी के लिए प्रभावी रूप से कार्य योजना तैयार की, और बड़ी संख्या में छापामार कार्रवाई को अंजाम देकर गैंग से जुड़े लोगों को गिरफ्तार किया। जिसकी वजह से उस समय सीकर और शेखावाटी में करीब करीब सभी बड़े गैंग या तो खत्म हो चुके थे या फिर उन्होंने अपना ठिकाना बदल लिया था, और जो बच गए थे वह जेल की सलाखों के पीछे चले गए थे। इसलिए इनके सीकर में एसपी पद पर रहने के दौरान शांति और कानून व्यवस्था का एक अच्छा माहौल बना था। करण शर्मा की इन प्रभावी कार्रवाइयों से जिले के लोग और व्यापार जगत से जुड़े लोग ही नहीं बल्कि विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता भी काफी प्रभावित हुए थे।

किशनगढ़ के मार्बल कारोबारी आज भी करण शर्मा को क्यों करते हैं याद ?

कई साल पहले किशनगढ़ में मार्बल कारोबारी भवानी की हत्या हुई थी। भवानी युवा था, अपने टैलेंट की वजह से उसने कम उम्र में मार्बल कारोबार में काफी नाम, पैसा और शोहरत हासिल कर ली थी। लेकिन धारदार हथियार से उसका गला काटकर और फिर उसकी बॉडी के टुकड़े-टुकड़े करके उन्हें बोरी में भरकर बनास नदी में फेंक दिया गया था। यह ब्लाइंड मर्डर था। यह मर्डर उन दिनों अजमेर जिले में ही नहीं बल्कि पूरे राजस्थान में काफी चर्चा का विषय कई दिनों तक बना रहा। इस मर्डर की गुत्थी को सुलझाने की जिम्मेदारी करण शर्मा को मिली, जो उस समय किशनगढ़ में डीवाईएसपी पद पर तैनात थे। पुलिस के लिए यह मर्डर बड़ी चुनौती बन गया था। एक तरफ इस मर्डर की गूंज पूरे राजस्थान में हो रही थी, तो दूसरी तरफ मार्बल कारोबारी भी इस मर्डर को लेकर गुस्से में थे। लेकिन अपने विवेक, बुद्धि कौशल और वर्किंग स्टाइल से करण शर्मा ने इस ब्लाइंड मर्डर का खुलासा करते हुए मृतक भवानी की पत्नी और उसके ड्राइवर को गिरफ्तार करके सबको चौंका दिया। क्योंकि भवानी के मर्डर के बाद ही उसकी पत्नी खुद के गुनाह को छुपाने के लिए कई तरह की नौटंकी कर रही थी। उसने अपने पति की गुमशुदा की रिपोर्ट भी दर्ज करवाई और बनावटी रो-रोकर खुद का बुरा हाल भी कर लिया था, ताकि पुलिस और लोग उस पर संदेह नहीं करें। लेकिन करण शर्मा ने मिले संकेतों, सबूत और तथ्यों के आधार पर भवानी की पत्नी और उसके ड्राइवर को हत्या के आरोप में अरेस्ट किया। इसके बाद पत्नी ने मर्डर करना कबूल भी कहा और कहा कि उसके पति के किसी अन्य से अवैध संबंध थे, इसलिए उसने गुस्से में आकर यह कदम उठाया। करण शर्मा के इस ब्लाइंड मर्डर का खुलासा करने के बाद किशनगढ़ के मार्बल कारोबारियो का गुस्सा शांत हुआ, और आज भी किशनगढ़ के मार्बल कारोबारी करण शर्मा की वर्किंग स्टाइल और उनकी ईमानदार छवि को याद करते हैं।

जयपुर में हनी ट्रैप के मामलों के निस्तारण में करण शर्मा दिखा चुके जलवा

जब करण शर्मा स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप में एडिशनल एसपी पद पर नियुक्त थे, तब जयपुर में हनी ट्रैप के मामले बड़ी संख्या में पुलिस थानों में दर्ज हो रहे थे। यह मामले पुलिस के लिए बड़ी चुनौती बन गए थे, और इन मामलों को लेकर बड़े-बड़े व्यापारी, उद्योगपति, राजनेता, अधिकारी सब परेशान थे। इस तरह के मामलों में फंसकर कई लोग अपना सब कुछ गवा बैठे थे। यह मामले सरकार और राजस्थान पुलिस मुख्यालय के लिए भी बड़ा सिर दर्द बने हुए थे। यह मामले जयपुर में ही नहीं बल्कि पूरे प्रदेश और देश में मीडिया की सुर्खियों में रहने लगे थे। ऐसे में स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप में नियुक्त करण शर्मा को इन मामलों के निस्तारण की जिम्मेदारी दी गई। करण शर्मा ने इन मामलों की प्रभावी जांच को तेजी से आगे बढ़ाया और इन मामलों में कई बड़े-बड़े लोगों को अरेस्ट किया, जिसमें एनआरआई, वकील, पुलिस और मीडिया जगत से जुड़े लोग भी शामिल थे। करीब तीन दर्जन लोगों की गिरफ्तारी की गई और दर्जन भर मामले दर्ज किए गए। हनी ट्रैप के मामलों में करण शर्मा की ओर से की गई इस प्रभावी कार्रवाई का असर यह हुआ कि फिर अगले एक साल तक जयपुर में हनी ट्रैप के मामलों में जबरदस्त गिरावट आई। अन्यथा जयपुर में बड़ी संख्या में विभिन्न पुलिस स्टेशन में हनी ट्रैप के मामले रोजाना आए दिन दर्ज हो रहे थे। लेकिन स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप की ओर से की गई इस प्रभावी कार्रवाई के बाद जयपुर में इस तरह के मामलों से लोगों को राहत मिली, और करण शर्मा की इन प्रभावी कार्रवाइयों की सभी जगह पर खूब प्रशंसा हुई।

215 करोड रुपए गोल्ड सुख कंपनी के धोखाधड़ी के आरोपी लोगों को वियतनाम में जाकर किया अरेस्ट, पुलिस पदक से हुए सम्मानित

साधारण किसान परिवार में जन्म लेने वाले पुलिस अधिकारी की ऊंची उड़ान

करण शर्मा का भरतपुर जिले के बयाना के खटनावली गांव में एक साधारण किसान परिवार में हुआ। परिवार काफी लंबा चौड़ा था, लेकिन सरकारी सर्विस में परिवार का कोई भी सदस्य नहीं था। खेती के सहारे ही परिवार का जीवनयापन होता था। करण शर्मा के 6 भाई और दो बहन हैं, ऐसे में एक किसान पिता के लिए अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाना काफी चुनौती पूर्ण और मुश्किल था। लेकिन करण शर्मा ने अपनी मेहनत और कड़ी लगन से स्कूल की पढ़ाई ग्रामीण स्तर पर ही सरकारी स्कूल में की। पढ़ने में बचपन से ही काफी ब्रिलिएंट थे। पढ़ने के साथ-साथ परिवार की आजीविका के लिए खेती के कार्य में भी अपने परिजनों का पूरा सहयोग करते रहे, लेकिन एक बड़ा अधिकारी बनने का ख्वाब शुरू से ही दिल में हिलोरे मार रहा था। इसलिए कॉलेज और यूनिवर्सिटी की आगे की पढ़ाई कंप्लीट करने के लिए कठिन और विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी जयपुर आए, जहां इन्होंने राजस्थान यूनिवर्सिटी से एमए की डिग्री हासिल की और फिर राजस्थान प्रशासनिक सेवा परीक्षा के लिए खुद को तैयार करते रहे। फिर एक दिन वह समय भी आया जब करण शर्मा 1997 में राजस्थान पुलिस सेवा के लिए चुन लिए गए। यह खबर करण शर्मा की फैमिली के लिए हमेशा हमेशा के लिए यादगार बन गई, क्योंकि इनकी फैमिली में ही नहीं बल्कि पूर्वजों में भी कोई अफसर क्लास तक पोस्टेड नहीं रहा था। इसलिए करण शर्मा के पुलिस ऑफिसर बनने की खबर से इनके परिवार में खुशी की लॉटरी निकल गई। इसके बाद पिछले करीब 29 साल की नौकरी में करण शर्मा ने जो उत्कृष्ट और उल्लेखनीय प्रदर्शन करके दिखाया, उसकी वजह से इनके गांव और आसपास के पूरे इलाके में आज बच्चा- बच्चा इनके नाम से वाकिफ है, और इन्हीं की जैसे क्षेत्र के युवा पुलिस अधिकारी बनने का ख्वाब देख रहे हैं।

गोल्ड सुख कंपनी के 215 करोड रुपए के इकोनॉमिक्स फ्रॉड का खुलासा करने में करण शर्मा की बहुत बड़ी भूमिका रही। यह एक ऐसा ज्वलंत मामला था जो राजस्थान में ही नहीं बल्कि पूरे भारतवर्ष में कई दिनों तक सुर्खियों में रहा। इस कंपनी ने सैकड़ो लोगों को डेढ़ साल में धन दुगना करने का झांसा देकर करोड़ों रुपए ठग लिए। कई तरह के प्रलोभन और कई तरह के लालच देने से कई बुद्धिजीवी और कई बड़े-बड़े व्यापारी, नागरिक और बुद्धिजीवी भी इस कंपनी के जाल में फंस गए थे। कंपनी का हाई प्रोफाइल दफ्तर और कंपनी के हाई प्रोफाइल लुक वाले कर्मचारियों को देखकर बड़ी संख्या में लोगों ने इस कंपनी में इन्वेस्ट भी किया। लेकिन बाद में जब लोगों को धोखाधड़ी का एहसास हुआ, तो यह मामला राजधानी जयपुर ही नहीं बल्कि पूरे प्रदेश और देश में चर्चा का विषय बन गया। पुलिस के लिए यह मामला बड़ी चुनौती बन गया था, क्योंकि कंपनी का संचालन करने वाले लोगों को उच्च स्तर पर संरक्षण भी मिला हुआ था, इसलिए संचालक देश छोड़कर फरार भी हो गए। लेकिन इस मामले की जांच में बड़ी भूमिका निभा रहे करण शर्मा उस समय जयपुर में एडिशनल एसपी पद पर नियुक्त थे। करण शर्मा बड़ी चतुराई और विवेक से मिले संकेतों और तथ्यों के आधार पर इस मामले में फरार चल रहे आरोपी लोगों की लोकेशन का पता लगाने में कामयाब रहे, और इंटरपोल की मदद से आखिरकार वियतनाम में जाकर इस मामले में पांच लोगों को अरेस्ट किया। करण शर्मा की इस प्रभावी कार्रवाई से राजस्थान पुलिस मुख्यालय और सरकार भी इसे काफी प्रभावित और खुश हुई, इसलिए सरकार ने इन्हें पुलिस पदक से सम्मानित किया।

अभिषेक सुराणा का "कोड चूरू" नवाचार छात्रों के उज्जवल भविष्य के लिए बना वरदान

जिला कलेक्टर अभिषेक सुराणा की ऐतिहासिक पहल से चूरू जिले के ग्रामीण क्षेत्र के स्कूली बच्चे अपनी प्रतिभा से आईआईटी मद्रास जैसी कुछ हाई प्रोफाइल संस्थानों में भी खिला रहे फूल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विकसित राजस्थान के विजन को हासिल करने में "कोड चूरू" अभियान भी निभा रहा अपनी अहम भूमिका। चूरू जैसे छोटे और ग्रामीण क्षेत्र वाले जिले में ग्रामीण क्षेत्र के स्कूली बच्चों की अदृश्य प्रतिभा को निखार रहा कोड चूरू अभियान। कोड चूरू अभियान से छात्र यूजर नहीं, बल्कि बन रहे जॉब क्रिएटर। कोड चूरू अभियान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल युग से जुड़ी सभी तरह की जानकारी के अलावा आधुनिक तकनीक, यंत्र, उपकरण से संबंधित तमाम तरह की जानकारियां और नॉलेज स्कूली शिक्षा में ही हासिल करके अपने करियर को ब्राइट फ्यूचर की तरफ ले जा रहे हजारों छात्र।

जयपुर। चूरू जिला कलेक्टर अभिषेक सुराणा की ओर से शुरू किया गया 'कोड चूरू' अभियान जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के स्कूली बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए वरदान बन गया है। इस अभियान से ग्रामीण क्षेत्र के गरीब और मध्यम परिवार के बच्चे भी आईआईटी मद्रास जैसी हाई प्रोफाइल संस्थानों में प्रवेश हासिल करके खुद के करियर को तो ब्राइट कर ही रहे हैं, साथ-साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विकसित राजस्थान के विजन और संकल्प को हासिल करने में भी बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। एक साधारण से परिवार में जन्म लेने वाले सुराणा आज हजारों साधारण परिवारों बच्चों को अपने इस 'कोड चूरू' अभियान से न केवल उन्हें आधुनिक डिजिटल युग के लिए पूरी तरह से परफेक्ट कर रहे हैं, बल्कि उन्हें जॉब क्रिएटिव के रास्ते पर तेजी से आगे बढ़ा रहे हैं, जिससे स्कूली पढ़ाई के दौरान ही छात्रों के ब्राइट फ्यूचर का जो सुनहरा रास्ता अभिषेक सुराणा ने तैयार कर रहे है, वह हमेशा-हमेशा के लिए चूरू जिले के लोगों के लिए एक यादगार स्वर्णिम अध्याय के रूप में पढ़ा जाएगा। सुराणा का यह नवाचार निश्चित रूप से भारत जैसे विशाल युवाओं वाले देश में इस बात के लिए भी बड़ी उपलब्धि माना जा सकता है कि उनके इस अभियान से स्कूली पढ़ाई में ही छात्र खुद को रोजगार लेने वाला नहीं, बल्कि रोजगार देने वाला बनाने की दिशा में तैयार करते हुए दिख रहे हैं, जो निश्चित रूप से कहीं ना कहीं बेरोजगारी की समस्या को हमेशा-हमेशा के लिए मिटाने कभी एक बड़ा माध्यम बना हुआ है। इसीलिए सुराणा आज चूरू जिले के स्कूली, कॉलेज के छात्रों में ही नहीं, बल्कि महिलाओं में भी काफी पॉपुलर और सम्मानित ऑफिसर के रूप में माने जाते हैं। हालांकि चूरू जिले में कलेक्टर रहने के दौरान उन्होंने कई तरह के नवाचार किए हैं और इन नवाचारों से चूरू की जनता का काफी भला भी हो रहा है, लेकिन इनके कोड चूरू नवाचार की चर्चा राजस्थान में ही नहीं, बल्कि पूरे देश में हो रही है।

जिले की शहरी और ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को लैपटॉप, मोबाइल, अन्य आधुनिक तकनीक की जानकारी देने के लिए कई विशेष कार्यक्रम शुरू किए

भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी अभिषेक सुराणा कर्मठ, मेहनती, ईमानदार और जमीन से जुड़े अधिकारी तो माने जाते हैं ही, इसके अलावा अपने नवाचारों के लिए भी हमेशा सुर्खियों में रहते हैं। भले ही कलेक्टर के रूप में उनकी चूरू में पहली पोस्टिंग हो, लेकिन उनकी पहली पोस्टिंग के कामकाज से ऐसा दिखता ही नहीं है कि उनकी कलेक्टर के रूप में पहली पोस्टिंग हो, ऐसा लगता है जैसे वे अब से पहले कई जिलों के कलेक्टर चुके हो, इसलिए उन्हें एक कुशल प्रशासक के रूप में भी माना जाता है। यही वजह है कि चूरू में जिला कलेक्टर का कार्यभार संभालने के बाद सुराणा ने जिले में शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं को डिजिटल सिस्टम से जुड़ी सभी जानकारी के बारे में पूरी जानकारी उपलब्ध करवाने के लिए गंभीरता से काम करना शुरू किया। क्योंकि आजकल केंद्र और राजस्थान सरकार की ओर से संचालित विभिन्न तरह की जनकल्याणकारी योजनाओं का पैसा और लाभ ऑनलाइन तरीके से ही लोगों के बैंक अकाउंट में आता है, और विभिन्न तरह के सरकारी कामकाज भी ऑनलाइन तरीके से ही ज्यादा संपादित होते हैं। केंद्र की मोदी सरकार और प्रदेश की भजनलाल सरकार ने महिलाओं के कल्याण और विकास के लिए कई तरह की योजनाएं और कई तरह के कार्यक्रम शुरू किए हैं, जिनमें बड़ी संख्या में महिलाएं सरकार की योजनाओं का फायदा उठाकर खुद को विभिन्न व्यवसायों और क्षेत्र में स्थापित भी कर रही हैं। इसलिए महिलाओं को कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल के बारे में समुचित जानकारी उपलब्ध करवाना सुराणा ने बहुत जरूरी समझा, ताकि महिलाएं डिजिटल सिस्टम से जुड़ा अपना काम खुद अपने हाथों से संपादित कर ले, महिलाओं को किसी दूसरे की तरफ अपने काम के लिए देखना नहीं पड़े। इसीलिए उन्होंने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को मोबाइल, कंप्यूटर, लैपटॉप के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी उपलब्ध करवाने के लिए विशेष कार्यक्रम शुरू किया, जिसका महिलाओं ने खूब फायदा भी उठाया है। महिलाओं के लिए किए गए इस विशेष कार्य के लिए सुराणा को स्कॉच अवार्ड से भी सम्मानित किया गया, इसके अलावा इन्हें इनके विशेष कार्यों और उपलब्धि के लिए कई और बड़े सम्मान हासिल हुए हैं। विभिन्न सामाजिक संगठनों और व्यापार मंडलों की ओर से भी समय-समय पर इनका सम्मान किया गया।

"कोड चूरू" अभियान से पारंगत होकर जिले में स्कूलों में स्थित अटल टिकरिंग लैब का भी कर रहे हैं संचालन

जानकारी के अनुसार, कोड चूरू अभियान से डिजिटल सिस्टम, इंटरनेट, आधुनिक तकनीक इत्यादि के बारे में पारंगत होकर स्कूली छात्र अब मोबाइल एप्लीकेशन, वीडियो, विजुअल्स, वेबसाइट, मॉडल इत्यादि का निर्माण करने लगे हैं। ऐसे पारंगत छात्रों ने अपने अलग-अलग समूह बना रखा है, जो जिले में सरकारी और निजी स्कूलों में स्थित अटल टिकटिंग लैब का बहुत ही प्रभावी तरीके से संचालन कर रहे हैं। क्योंकि सरकारी और निजी स्कूलों में अटल टीकरिंग लैब स्थापित तो कर दी गई थी, लेकिन इन लैब का संचालन करने के लिए प्रशिक्षित टीचर और कर्मचारी नहीं थे, जिसकी वजह से स्कूलों में यह लैब बंद पड़ी थी, इसका छात्र फायदा नहीं उठा पा रहे थे। लेकिन कोड चूरू अभियान के तहत पारंगत और प्रशिक्षित होने वाले स्कूली छात्र अब खुद अपने स्तर पर इन लैब का संचालन कर रहे हैं। छात्रों के समूह की ओर से बाकायदा वीडियो, विजुअल्स इत्यादि तैयार करके उन्हें वेबसाइट पर अपलोड करके में अटल तिकरिंग लैब के माध्यम से छात्रों को जानकारी उपलब्ध करवाई जाती है। कोड चूरू अभियान से पारंगत और प्रशिक्षित होने वाली छात्र विभिन्न विभागों से जुड़ी समस्याओं का डिजिटल संकलन और आकलन करके उन्हें प्रभावी तरीके से अपनी विशेष सामग्री में शामिल करके डिजिटल क्रांति में नए-नए नवाचार और प्रयोग कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विकसित राजस्थान के विजन और संकल्प को हासिल करने में "कोड चूरू" की बड़ी भूमिका

जानकारी के अनुसार, चूरू जिला कलेक्टर अभिषेक सुराणा ने एक एनजीओ के सहयोग से 2 साल पहले कोड चूरू अभियान की शुरुआत की थी। इस अभियान में चूरू जिले की शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में स्थित सरकारी और निजी स्कूलों में छात्रों को कोड सिस्टम के तहत सोशल मीडिया से जुड़े विभिन्न तरह के डिजिटल प्लेटफॉर्म से जुड़े नॉलेज के अलावा इंटरनेट से संबंधित सभी जानकारियां दी जाती है, और उन्हें आधुनिक दूरसंचार, यंत्र, उपकरण और डिजिटल युग से जुड़े सभी सब्जेक्ट और तकनीक के बारे में बारीकी से सिखाया जाता है। शुरू में इस अभियान में कक्षा नवमी से 11वीं तक के करीब 13000 छात्र जुड़े थे, अब इन छात्रों की संख्या 20000 से ज्यादा हो गई है। यह छात्र ऑनलाइन तरीके से डिजिटल शिक्षा की पढ़ाई पढ़ रहे हैं और मोबाइल से एप्लीकेशन बनाना, वेबसाइट तैयार करना इत्यादि कार्यों में परफेक्ट भी हो रहे हैं। यानी स्कूल में पढ़ाई के दौरान ही उन्हें इस विशेष कार्यक्रम के माध्यम से एक अलग क्वालिटी की उच्च तकनीक की व्यवसायिक शिक्षा भी हो रही है, जो आगे चलकर उन्हें बड़े-बड़े हाई प्रोफाइल एग्जाम की तैयारी करने में तो सहायक साबित होती है ही, इसके अलावा उन्हें स्टार्टअप्स और खुद की ओर से नवाचार और नए प्रोडक्ट बिजनेस तैयार करने में काफी मददगार साबित हो रही है। इस तरह से इस विशेष अभियान के माध्यम से छात्र स्कूल की पढ़ाई के दौरान ही कई छात्र खुद को नौकरी जॉब क्रिएटर के रूप में तैयार कर लेते हैं, जिससे ऐसे छात्र खुद तो आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बन ही रहे हैं, बल्कि वे बेरोजगारों को रोजगार देने के लिए भी तैयार हो रहे हैं।

अभिषेक सुराणा की प्रभावी मॉनिटरिंग से प्रगति लैब, महात्मा गांधी कस्तूरबा विद्यालय, अटल टीकरिंग लैब, आईसीटी प्रयोगशाला का बेहतर तरीके से हो रहा उपयोग

वर्ष 2018 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी अभिषेक सुराणा के कलेक्टर के रूप में चूरू में वर्ष 2024 में पहली पोस्टिंग थी, और चूरू में कलेक्टर के रूप में अपनी पहली ही पोस्टिंग में इन्होंने कई तरह के नवाचार और नवीन प्रयोग किया, जिनका जिले की जनता खूब फायदा उठा रही है। लेकिन सुराणा के एजुकेशन के क्षेत्र में किए गए नवाचार पूरे देश में चर्चा का विषय बने हुए हैं। चाहे स्कूली छात्रों को डिजिटल सिस्टम में पारंगत करने और छात्रों को जॉबक्रिएटर और डेवलपर्स के रूप में विकसित करने की बात हो, या फिर जिले में निजी और सरकारी स्कूलों में स्थित अटल टीकरिंग लैब, प्रगति लैब का बेहतर तरीके से संचालन करने की बात हो, इन सब कामों में सुराणा की बहुत बड़ी भूमिका रही है। जिले की सरकारी और निजी स्कूलों में सभी जगह पर पुस्तकालय बंद पड़े थे, पुस्तकालय में कंप्यूटर, लैपटॉप और इत्यादि सुविधाओं का अभाव था, पुस्तकालय में डिजिटल सिस्टम, आधुनिक तकनीक की जानकारी रखने वाले शिक्षक नहीं थे, इसलिए पुस्तकालय बंद पड़े हुए थे। लेकिन सुराणा ने इन पुस्तकालय में एक तरफ जहां लैपटॉप, कंप्यूटर और अन्य यंत्र उपकरण की व्यवस्था करवाई, तो दूसरी तरफ कोड चूरू जैसे अभियान की शुरुआत करके जिले के स्कूली छात्रों के भविष्य को नई दिशा और गति देने के लिए बहुत बड़ा नवाचार किया। सुराणा ने अटल टीकरिंग लैब, प्रगति लैब में कंप्यूटर, लैपटॉप और अन्य यंत्र उपकरण की व्यवस्था करवाई, तो दूसरी तरफ कस्तूरबा महात्मा गांधी विद्यालय में भी छात्राओं को डिजिटल सिस्टम की जानकारी उपलब्ध करवाने, इंटरनेट, संचार संसाधनों से जुड़े यंत्र उपकरण से जुड़ी तमाम तरह की जानकारियां उपलब्ध करवाने, तथा आधुनिक तकनीक की जानकारी देने के लिए विद्यालय में कंप्यूटर, लैपटॉप इत्यादि की व्यवस्था करके कस्तूरबा महात्मा गांधी विद्यालय में भी छात्राओं को ज्यादा से ज्यादा जॉब क्रिएटिव प्रोफेशनल बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे महिलाओं और छात्राओं को भी डिजिटल युग के लिए पूरी तरह से तैयार होने में मदद मिल रही है।

व्यापक पैमाने पर लोगों की ज्यादा से ज्यादा सेवा करने के लिए विदेश में एक बड़े अंतरराष्ट्रीय निजी बैंक की बड़े पैकेज की नौकरी छोड़ दी

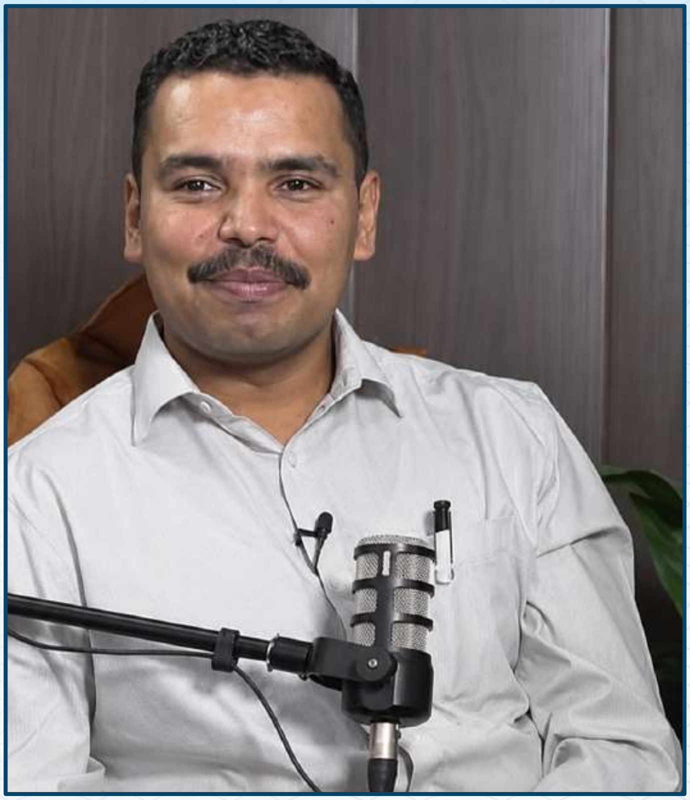

अभिषेक सुराणा ने 17 साल बाद वर्ष 2024 में चूरू महोत्सव का आयोजन करके चूरु को देश और दुनिया में विशेष पहचान दिलाने का शानदार प्रयास किया। हालांकि वर्ष 2008 में तत्कालीन जिला कलेक्टर अर्जुन मेघवाल, जो वर्तमान में केंद्र में मंत्री हैं, उन्होंने चूरू महोत्सव का आयोजन किया था। इसके बाद चूरू महोत्सव का आयोजन बंद हो गया, जो चूरू जिले के लोगों को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था। यहां के व्यापारी, सामाजिक कार्यकर्ता, उद्योगपति, राजनेता, कला संस्कृति साहित्य खेल इत्यादि सभी क्षेत्र से जुड़े लोग चूरू महोत्सव का आयोजन नहीं होने से दुखी थे। लेकिन अभिषेक सुराणा ने वर्ष 2024 में जिले में कलेक्टर पद पर कार्यभार संभालने के बाद चूरू महोत्सव को फिर से शुरू करने के बारे में गंभीरता से विचार किया। केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने भी चूरू महोत्सव को फिर से शुरू करने की बात कही। इसके बाद सुराणा ने बहुत ही विस्तृत कार्य योजना और विस्तृत कार्यक्रम तैयार करके ऐतिहासिक और शानदार तरीके से चूरू महोत्सव का फिर से शुभारंभ करने का निर्णय लिया। इस तरह से 17 साल बाद 22 से 24 फरवरी तक चूरू महोत्सव का आयोजन हुआ, जिसमें विरासत कार्निवल यात्रा, आर्ट एंड क्राफ्ट मेले, फन गेम्स, फूड बाजार, राजस्थान लोक संगीत, लोक नृत्य, म्यूजिक, सांस्कृतिक संध्या, कला प्रदर्शनी, किताबों का संसार, प्रवासी मिलन उत्सव, गौरव श्री अवार्ड, कवि सम्मेलन, मेगा पेंटिंग्स प्रतियोगिता, एकल गायन प्रतियोगिता, संगीत प्रतियोगिता, संगोष्ठियां, मेहंदी प्रतियोगिता, कवि सम्मेलन, पेंटिंग प्रतियोगिता इत्यादि दर्जनों तरह के कार्यक्रम और प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। इसके बाद अब हर साल चूरू महोत्सव का आयोजन किया जाता है। इस आयोजन के शुरू होने के बाद चूरू जिले के पर्यटन को भी काफी बढ़ावा मिला है, और वैश्विक मंच पर भी चूरू जिले को एक अलग पहचान मिली है।

17 साल बाद वर्ष 2024 में चूरू महोत्सव का शुभारंभ करके चूरू को वैश्विक पहचान दिलाने का किया प्रयास

जानकारी के अनुसार, अभिषेक सुराणा ने वर्ष 2017 में भारतीय प्रशासनिक सेवा भर्ती परीक्षा में मेरिट लिस्ट में दसवां स्थान हासिल किया था। हालांकि इससे पहले इन्होंने तीन बार इस एग्जाम में हिस्सा लिया, जिसमें शुरू के दो बार के चांस में इनका सिलेक्शन नहीं हुआ और तीसरे चांस में इनका आईपीएस में सिलेक्शन हुआ। लेकिन सुराणा ने अपने मन मस्तिष्क में भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी बनने का सपना सजा रखा था, इसलिए उन्होंने चौथी बार एग्जाम दिया और चौथी बार में उन्हें बहुत अच्छी सफलता मिली। लेकिन इस एग्जाम में बैठने से पहले सुराणा सिंगापुर में एक बड़े अंतरराष्ट्रीय बैंक में इन्वेस्टर बैंकर के रूप में नियुक्त थे, इसके बाद इसी बैंक में सिंगापुर से लंदन नौकरी के लिए चले गए। यहां इनको बहुत अच्छा पैसा और सभी तरह की सुख सुविधा मिल रही थी, लेकिन बचपन में अपने पिता को कड़ी मेहनत करते देखकर इनके मन में जरूरतमंद लोगों की ज्यादा से ज्यादा सेवा करने का भाव हमेशा इन्हें बेचैन किया हुआ था। विदेश में अच्छी नौकरी और अच्छी शोहरत हासिल करने के बाद भी इन्हें संतुष्टि नहीं मिल रही थी, इसलिए वर्ष 2014 में यह अच्छी खासी नौकरी छोड़कर सुराणा इंडिया लौट आए, और फिर भारतीय प्रशासनिक सेवा भर्ती परीक्षा की तैयारी में जुट गए। सुराणा ने 12वीं कक्षा के बाद जेईई सिलेक्शन होने के बाद दिल्ली आईआईटी से बीटेक इलेक्ट्रिकल की डिग्री हासिल की, इसके अलावा पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में एम. ए. की डिग्री भी हासिल की हुई है।

केंद्र सरकार और राजस्थान सरकार की योजनाओं का बेहतर तरीके से करवा रहे क्रियान्वयन

केंद्र सरकार और राजस्थान सरकार की ओर से संचालित की जा रही विभिन्न तरह की जनकल्याणकारी योजना को बेहतर तरीके से संपादित करवाने में अभिषेक सुराणा प्रदेश के अग्रज जिला कलेक्टरों की लिस्ट में शामिल है। चाहे ग्रामीण चौपाल का आयोजन करके ग्रामीणों की समस्याओं का निस्तारण करने की बात हो, या फिर केंद्र सरकार और राजस्थान सरकार की ओर से जिला कलेक्टरों को दी गई जिम्मेदारी का विषय हो, हर जगह पर सुराणा ने बेहतर परफॉर्मेंस करके दिखाया है। सरकार की योजनाओं का लाभ समाज में अंतिम छोर तक बैठे व्यक्ति तक हर हाल में पहुंचे, इसके लिए चूरू जिले में सुराणा ने एक व्यापक कार्य योजना और रणनीति तैयार करके अधिकारियों की जिम्मेदारी कार्यों के लिए सुनिश्चित की हुई है, और लगातार जिले के अधिकारियों से नियमित रूप से कामकाज का फीडबैक लेते रहते हैं। इसलिए पूरे जिले में एक तरफ जहां सरकारी योजनाओं का शानदार और बेहतर तरीके से संपादन हो रहा है, तो दूसरी तरफ चूरू जिले के लोगों की समस्याओं का निस्तारण भी त्वरित गति से हो रहा है। इसीलिए कलेक्टर के रूप में सुराणा चूरू जिले के लोगों में एक भरोसेमंद और लोकप्रिय अधिकारी के रूप में माने जाते हैं।

अपने सरकारी आवास पर भी बच्चों के लिए जनरल नॉलेज और साहित्यिक ज्ञान के लिए विशेष प्रोग्राम आयोजित करते हैं सुराणा

अभिषेक सुराणा का स्कूल के छोटे बच्चों को लेकर बहुत ही जबरदस्त लगाव है। बच्चे अच्छी एजुकेशन हासिल करके अपना भविष्य उज्जवल बनाएं तथा परिवार और देश का नाम रोशन करें, इसके लिए बच्चों को बचपन से एक अच्छा शैक्षणिक और संस्कारिक माहौल मिले, तथा आधुनिक बदलते परिदृश्य में बच्चे आधुनिक शिक्षा के माध्यम से खुद को शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार करें। इसके लिए सुराणा जहां तक हो सके अपने स्तर पर भी जहां भी रहते हैं, वहां के बच्चों के लिए अपना सब कुछ समर्पित करने को तैयार रहते हैं। यही वजह है कि चूरू जिला कलेक्टर रहने के दौरान भी अपने सरकारी आवास पर बच्चों के लिए अभिषेक सुराना समय पर कई तरह के कार्यक्रम आयोजित करते रहते हैं, जिसमें बच्चों को अच्छे साहित्य उपलब्ध करवाने के अलावा जनरल नॉलेज से संबंधित कई तरह की किताबें वितरित करते हैं, तथा बच्चों को अच्छी शिक्षा हासिल करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। इसलिए चूरू जिले के स्कूली बच्चों में सुराणा काफी पॉप्युलर है।

डोनाल्ड ट्रंप और एलन मस्क की तरह अपने बच्चों को कंधे पर बिठाने वाली फोटो को लेकर सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुए थे सुराणा

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति एलन मस्क अपने बच्चों को कंधे पर बिठाने वाली फोटो के सोशल मीडिया पर वायरल होने पर काफी चर्चा में रहे थे, वैसे ही अभिषेक सुराणा भी अपने बच्चों को अपने कंधे पर बिठाने वाली फोटो को लेकर सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुए थे। लोगों ने सुराणा और उनके बच्चे की फोटो को देखकर कई तरह के रोमांचित और अच्छे मैसेज भी किए थे। लोग खुले दिल से कहते हैं कि सुराणा बच्चों को लेकर बहुत ही संवेदनशील और सहयोग रहते हैं, बच्चों को बहुत प्यार और सम्मान देते हैं। इसीलिए जिले के स्कूली एजुकेशन सिस्टम को नई दिशा और गति देने में इन्होंने कई बड़े-बड़े प्रयोग किया, और अपने सरकारी आवास पर भी लगातार स्कूली बच्चों के साथ संवाद करते रहते हैं, उन्हें उनके अच्छे भविष्य के लिए, अच्छी शिक्षा के लिए प्रेरित करते रहते हैं। सुराणा की यह खूबी उन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी के रूप में एक अलग छवि के रूप में पहचान दिला चुकी है।

अभिषेक सुराणा से जिले में हर राजनीतिक दल से जुड़े छोटे बड़े सभी राजनेता है काफी प्रभावित

अभिषेक सुराणा वर्ष 2024 से चूरू में जिला कलेक्टर पद पर नियुक्त है और कलेक्टर पद पर रहने के दौरान इन्होंने कई उत्कृष्ट और उल्लेखनीय कार्य किया। ईमानदार और मेहनती होने के अलावा अभिषेक सुराणा अपने व्यवहार और वर्किंग स्टाइल से चूरू जिले के हर जाति और बिरादरी के लोगों में तो काफी पॉप्युलर है ही, इसके अलावा चूरू जिले के विभिन्न दलों के छोटे-बड़े सभी राजनेता इनके कार्यों और व्यवहार से काफी खुश और प्रभावित हैं। यही वजह है कि सुराणा के कामकाज को लेकर जिले में किसी भी व्यक्ति को किसी भी तरह की कोई शिकायत नहीं है, अन्यथा कई बार देखने में आता है कि नाराज लोग जिला कलेक्टर पर ही राजनीति करने का आरोप लगा देते हैं, लेकिन यहां अभिषेक सुराना से सभी दलों के राजनेता उनके कार्यों से काफी खुश और संतुष्ट हैं।

हाई प्रोफाइल एग्जाम की तैयारी में युवाओं के "सारथी" बनेंगे आईपीएस "सुधीर चौधरी"

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान जैसलमेर में सीमा सुरक्षा में अपने उत्कृष्ट कार्यों के लिए तत्कालीन थल सेना अध्यक्ष जनरल द्विवेदी के हाथों सम्मानित होने वाले, श्रीमाधोपुर के रहने वाले दबंग, ईमानदारकुशल, कुशल और टेक्निकल रूप से काफी मजबूत माने जाने वाले आईपीएस सुधीर चौधरी बहुत जल्दी ही हाई प्रोफाइल एग्जाम की तैयारी के लिए युवाओं को फ्री में ऑनलाइन कोचिंग के लिए उपलब्ध होने वाले हैं। एग्जाम की तैयारी के साथ-साथ युवाओं को टाइम मैनेजमेंट शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूतहोने जैसे विषय पर भी युवाओं का करेंगे मार्गदर्शन। पिछले करीब 11 साल की आईपीएस की नौकरी में प्रदेश में आधा दर्जन जिलों में पुलिस अधीक्षक की भूमिका में कई उत्कृष्ट और उल्लेखनीय काम तो किया ही, इसके अलावा पुलिसिंग में आधुनिकरण, साइबर अपराध पर रोकथाम के साथ साथ इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किया और नए-नए नवाचार और नई नवीन प्रयोगों से खाकी का गौरव बढ़ाते हुए लोगो की हर रहे पीड़ा तथा युवाओं को उनके उज्जवल भविष्य के लिए कर रहे प्रेरित।

जयपुर। सालों से इंडियन मिलिट्री में प्रदेश के शेखावाटी इलाके के युवा अपनी बहादुरी और बलिदान के लिए पूरे देश में जाने जाते हैं, तथा भारत सरकार, राजस्थान सरकार और मिलिट्री प्रशासन की ओर से सम्मानित भी होते रहे हैं। लेकिन आज जयपुर टाइम्स अपने इस आलेख में प्रदेश के शेखावाटी इलाके के छोटे से गांव बागरिया बास से निकलकर तीन बड़ी हाई प्रोफाइल सर्विसों से होते हुए आईपीएस बने एक ऐसे परफेक्ट नौजवान के व्यक्तित्व परिचय के बारे में संक्षिप्त बता रहे हैं, जिन्हें अभी आईपीएस की सर्विस में सिर्फ 11 साल ही हुए हैं। इन 11 सालों में शेखावाटी के इस 'लाल' ने इतने अनेक उत्कृष्ट और उल्लेखनीय काम करके दिखाया है जिन्हें एक किताब में संग्रहित करें, तो उस किताब का हर एक पन्ना एक अलग उत्कृष्ट कार्य के लिए स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज होता दिख रहा है। हालांकि, यह नौजवान आईपीएस परिचय का मोहताज नहीं है क्योंकि इनके अभूतपूर्व कार्यों की कुंडली को राजस्थान के लोग ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लोग बहुत पहले ही पढ़ चुके हैं। राजस्थान और देश के लोग उस दिन को अब भी नहीं भूले जब उदयपुर के बहुत चर्चित कन्हैया लाल हत्याकांड को अंजाम देने वाले अपराधियों को सिर्फ 5 घंटे की अवधि में ही इस आईपीएस अधिकारी ने अपने बेस्ट सुपरविजन और बुद्धि कौशल से अरेस्ट करके दिखा दिया था, इसके बाद पुलिस मुख्यालय की ओर से इन्हें डीजी डिस्क से सम्मानित किया गया। इसके बाद थोड़ा और आगे जाएं तो प्रदेश और देश के लोग उस खूबसूरत पल की यादों को भी नहीं भूले होंगे जब इंडियन मिलिट्री ने पाकिस्तान की मिलिट्री को धराशाई कर दिया था, और पाकिस्तान की सीमा से लगे हुए राजस्थान के विभिन्न जिलों में जैसलमेर जिले के तत्कालीन पुलिस अधीक्षक को सीमावर्ती क्षेत्रों में मजबूत अंतरिक्ष सुरक्षा व्यवस्था स्थापित करने और सीमा पर बीएसएफ के जवानों के साथ प्रभावी और बेहतर समन्वय तालमेल बनाने के लिए भारत के थल सेना अध्यक्ष जनरल द्विवेदी ने सम्मानित किया था। अब तो आप बिल्कुल समझ ही गए होंगे, यहां हम बात कर रहे हैं शेखावाटी के जांबाज आईपीएस सुधीर चौधरी की। जी हां, सुधीर चौधरी प्रदेश में अब तक आधा दर्जन जिलों में पुलिस अधीक्षक पद पर रह चुके हैं और इन सब जिलों में इनकी ओर से किए गए नवाचार, नवीन प्रयोगों और व्यवस्थाओं से एक तरफ जहां अपराधिक गतिविधियों में जोरदार गिरावट आई, तो दूसरी तरफ साइबर क्राइम के मामलों की रोकथाम में इनकी ओर से किए गए ठोस प्रबंधन और कदमों से शानदार नतीजे देखने को मिले जिनकी तारीफ पूरे देश में हुई। वीर भूमि शेखावाटी की जमीन से पैदा हुए हैं, इसलिए दबंग और योद्धा जैसे लक्षण तो यहां हर बच्चे को अपनी मां के पेट में गर्भ में ही समा जाते हैं। इसलिए लॉरेंस

बिश्नोई जैसे बड़े-बड़े अंतर्राष्ट्रीय गैंगस्टर ग्रुप से जुड़े बदमाशों में भी इनके नाम का खौफ है, छोटे-मोटे गुंडो की तो औकात ही क्या जो इनके जिले में गुंडागर्दी करें। इसलिए इनके अलवर जिला पुलिस अधीक्षक पद पर नियुक्त होने के बाद अलवर जिले में अपराध की घटनाओं में तेजी से गिरावट आई है। अगर अपराध की कोई घटना घट जाती है, तो उसका पर्दाफाश भी जल्दी हो रहा है, जैसा कि एक 5 साल की बच्ची से दुष्कर्म के आरोपी राहुल मीणा को पुलिस ने 5 घंटे में ही दबोच लिया था। क्रमबद्ध तरीके से करीब 200 सीसीटीवी कैमरे की जांच पड़ताल करते हुए, सुधीर चौधरी के निर्देशन और मार्गदर्शन में अलवर पुलिस की टीम ने जयपुर में गांधीनगर रेलवे स्टेशन से राहुल मीणा को पीछा करते हुए पकड़ लिया था। इसके बाद पूर्व केंद्रीय मंत्री और अलवर के पूर्व सांसद भवरजितेंद्र सिंह और विपक्ष के नेता टीकाराम जूली ने बाकायदा फोन करके सुधीर चौधरी को राहुल मीणा की गिरफ्तारी के लिए थैंक्स बोला था। इसके अलावा अलवर जिला, जो पहले साइबर क्राइम के मामलों को लेकर कई सालों से प्रदेश और पूरे देश में सुर्खियों में रहता था, अब साइबर क्राइम अपराध की रोकथाम के मामले में पूरे देश में अव्वल है, जो अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि कहीं जा सकती है।

करोड़ों लोगों के भगवान बने आसाराम के फर्जी मेडिकल सर्टिफिकेट का पर्दाफाश करने में सुधीर चौधरी की रही बड़ी भूमिका

नाबालिक लड़की से दुष्कर्म के आरोप में आजीवन कारावास की सजा भुगत रहे आसाराम बापू को सदा सदा के लिए जेल की सलाखों के पीछे भिजवाने में सुधीर चौधरी का भी बहुत बड़ा योगदान माना जाता है। देश और दुनिया के इस चर्चित दुष्कर्म के मामले के समय सुधीर चौधरी जोधपुर में पोस्टेड थे। इस दौरान आसाराम को बेगुनाह साबित करने के लिए भारत के बड़े-बड़े वकील हर तरह के हथकंडे अपना रहे थे, जिसमें आसाराम के नपुंसक होने की बात कहकर न्यायालय में आसाराम की फर्जी मेडिकल रिपोर्ट तक प्रस्तुत की गई और यह बताया गया कि आसाराम तो नपुंसक है वह कैसे दुष्कर्म कर सकता है। लेकिन इस मामले की जांच कर रहे जोधपुर पुलिस के सभी अधिकारी काफी निष्ठावान थे और नाबालिग़ लड़की को न्याय दिलाने के लिए पुलिस अधिकारियों ने अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया था। यहां तक कि इस मामले की जांच कर रहे पुलिस अधिकारियों और उनके परिजनों को आसाराम के समर्थको ने कई बार जान से मारने की धमकी दी, और कई बार आसाराम को निर्दोष साबित करने के लिए अधिकारियों के समक्ष ब्लैंक चेक तक रखे गए। लेकिन उस समय इस मामले की जांच कर रहे जोधपुर पुलिस के सभी अधिकारी नाबालिग़ लड़की को न्याय दिलाने के लिए सामूहिक रूप से दिन-रात कड़ी मेहनत कर रहे थे। इसी क्रम में न्यायालय में जब आसाराम के फर्जी मेडिकल सर्टिफिकेट प्रस्तुत किए गए, तो उस समय इन मामलों की जांच सुधीर चौधरी के मार्गदर्शन में ही संपादित हुई थी, जिसमें सुधीर चौधरी ने मेडिकल सर्टिफिकेटों की प्रभावी जांच करके न्यायालय को यह बताया कि यह सब मेडिकल सर्टिफिकेट फर्जी हैं। इस तरह से आसाराम को दुष्कर्म के मामले में निर्दोष साबित करने का यह गलत तरीका न्यायालय में सफल नहीं हो पाया। उस समय आसाराम के इन फर्जी मेडिकल सर्टिफिकेट का मामला भी देश और विदेश में खूब चर्चित रहा और सुधीर चौधरी भी अपनी जांच को लेकर खूब चर्चा में रहे।

युवाओं के लिए समय प्रबंधन बहुत जरूरी, हाई प्रोफाइल एग्जाम के लिए तीन चांस है काफी

वर्तमान में अलवर जिला पुलिस अधीक्षक पद पर नियुक्त सुधीर चौधरी का कहना है कि भारत युवाओं का देश है और युवाओं की तरक्की ही भारत का विकास निर्भर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का पूरा फोकस युवाओं के विकास और कल्याण पर टिका है, क्योंकि विकसित भारत और विकसित राजस्थान का विजन तभी पूरा होगा जब युवाओं का भविष्य सुरक्षित और उज्जवल हो। इसीलिए युवाओं को अपने समय प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। अनुशासित जीवन तथा अच्छे नैतिक विचारों के साथ शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत होना आज के दौर की जरूरत है। युवाओं को अपने जीवन की एक-एक मिनट का महत्व समझना होगा। इसमें प्रभावी तरीके से पढ़ाई के साथ-साथ योग, व्यायाम और शुद्ध खान पान को दैनिक दिनचर्या का बड़ा हिस्सा बनाकर टाइम पंक्चुअल और टाइम मैनेजमेंट की थीम पर खुद की पर्सनालिटी को डेवलप करना होगा। इसमें अगर किसी हाई प्रोफाइल परीक्षा में तीन चांस के बाद भी आपका सिलेक्शन नहीं होता है, तो फिर आपको अपने करियर को नई दिशा देने के बारे में सोचना चाहिए। अगर आप एक ही एग्जाम को बार-बार दे रहे हो और आपको सफलता नहीं मिल रही है, तो फिर आपको अपना समय व्यर्थ किए बिना खुद को आत्मनिर्भर और स्वावलंबन बनाने के लिए दूसरे विकल्पों पर काम कर देना चाहिए, क्योंकि जितना समय आप एक ही एग्जाम को बार-बार देने में खर्च कर रहे हैं उतना समय आप किसी अपने स्वरोजगार के साधन में खर्च करेंगे तो आपका रोजगार का साधन मजबूत होगा, जो आपको आर्थिक रूप से मजबूत करेगा। इसलिए किसी भी हाई प्रोफाइल एग्जाम में तीन बार से ज्यादा बैठना आज के दौर में ठीक नहीं है। सुधीर चौधरी कहते हैं कि कई स्टूडेंट हाई प्रोफाइल एग्जाम में बार-बार बैठते हैं और हर बार उन्हें असफलता मिलती है। ऐसे में कई स्टूडेंट की आयु 40 साल तक पहुंच जाती है और वह अपने जीवन का आधा सफर सिर्फ हाई प्रोफाइल परीक्षाओं की तैयारी में ही पूरा कर देता है, जिसकी वजह से वह शारीरिक और मानसिक रूप से तो कमजोर हो ही जाता है, इसके अलावा उसके परिवार की आर्थिक स्थिति भी बिगड़ जाती है। वह ऐसे स्टेज पर आ जाता है जिसमें वह शारीरिक और मानसिक रूप से विचलित और कमजोर होने की वजह से वह ना तो खुद का रोजगार डेवलप कर सकता है और ना ही किसी अच्छी जगह पर नौकरी कर पाने की स्थिति में होता है। इसलिए आज के इस प्रतिस्पर्धी दौर में किसी भी हाई प्रोफाइल एग्जाम में तीन बार से ज्यादा किसी का बैठना मूर्खतापूर्ण डिसीजन ही माना जाएगा। क्योंकि वर्तमान में समय काफी महत्वपूर्ण है, इसलिए समय की उपयोगिता और माहौल तथा परिस्थितियों को देखते हुए बिना ज्यादा सोच विचार किया और ज्यादा विचलित हुए, अगर किसी को तीन चांस के बाद भी किसी बड़े हाई प्रोफाइल एग्जाम में सफलता नहीं मिलती है, तो उसे हताश नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे अपने करियर को नई दिशा देने के लिए नया रास्ता तुरंत लेना चाहिए। सुधीर चौधरी का कहना है कि आज के दौर में एग्रीकल्चर, बागवानी फल सब्जियां के क्षेत्र में भी बड़े-बड़े नवाचार और बड़े-बड़े नए और प्रयोग करके समाज देश और दुनिया में नाम कमाया जा सकता है। इसलिए युवाओं को अपने समय को ज्यादा व्यर्थ नहीं करना चाहिए और नशे से हमेशा दूर रहकर खुद को शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनाए रखने के लिए नियमित रूप से व्यायाम, योग करते हुए अपने रुचि के खेल भी खेले ताकि आपका शरीर और आपकी पर्सनालिटी पूरी तरह से फिट रहे।

आईआईटी रुड़की के छात्र रहे सुधीर चौधरी अब हाई प्रोफाइल एग्जाम की तैयारी कर रहे युवाओं को फ्री में ऑनलाइन कोचिंग की देंगे सुविधा

सुधीर चौधरी ने आईआईटी रुड़की से बीटेक किया है। हालांकि उनके पिता कृषि विभाग में बड़े अधिकारी पद से सेवानिवृत हुए हैं, लेकिन इनकी प्रारंभिक पढ़ाई श्रीमाधोपुर में हुई। इसके बाद बूंदी, जयपुर और कोटा में इन्होंने आगे की पढ़ाई की और फिर आईआईटी रुड़की से बीटेक किया। पढ़ने में बचपन से ही काफी इंटेलिजेंट रहे और पिता के बड़े सरकारी सेवा में रहने से इन्हें पढ़ाई और अन्य सुविधाओं में कोई कमी नहीं थी। लेकिन इन्होंने अपने साथ पढ़ने वाले गरीब स्टूडेंटों की पीड़ा को अपनी आंखों से देखा, इसलिए गरीब और निर्धन लोगों की सेवा करने का भाव इनके मन में कॉलेज के जमाने से ही पैदा हो गया था। इसी वजह से इन्होंने तीन बड़ी हाई प्रोफाइल सर्विस को छोड़कर आईपीएस बनने की राह चुनी, क्योंकि भले ही इन्हें अच्छा वेतन और अच्छी सुविधा मिल रही थी, लेकिन समाज के लोगों का ज्यादा से ज्यादा भला करना और लोगों की पीड़ा को, समस्याओं का ज्यादा से ज्यादा समाधान करने जैसे मन की इच्छा का काम यह इन हाई प्रोफाइल नौकरियों में नहीं कर पा रहे थे। इसलिए भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा को फाइट करना शुरू किया, जिसमें एक बार इनका इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में सिलेक्शन हो गया था। इसी तरह से दिल्ली सेवा सर्विसेज में भी इनका सिलेक्शन हुआ, लेकिन ज्यादा से ज्यादा लोगों का भला करने की इच्छा ने इन्हें फिर से भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा में बैठने के लिए प्रेरित किया, जिसमें वर्ष 2015 में इनका आईपीएस में सिलेक्शन हो गया। वैसे वर्ष 2013 में इनका इंडियन मिलिट्री इंजीनियरिंग सर्विस में भी इनका सिलेक्शन हो गया था। इसलिए हाई प्रोफाइल एग्जाम में अपनी प्रभावी तैयारी, कड़ी मेहनत और समर्पित भाव से बड़े-बड़े एग्जाम इन्होंने बहुत ही सहज तरीके से फाइट किया और सफलता मिली। वैसे आईपीएस की दिनचर्या काफी व्यस्त रहती है, यह ऐसी नौकरी है जिसमें कोई समय निश्चित नहीं होता, रात के 2:00 बजे भी सूचना मिलने के बाद आईपीएस को मौके पर जाना पड़ता है और बड़ी-बड़ी वारदातों का पर्दाफाश करने के लिए कई-कई दिनों और कई-कई घंटे तक फाइलों की स्टडी करनी पड़ती है। लेकिन इसके बावजूद भी सुधीर चौधरी अब बहुत जल्दी ही हाई प्रोफाइल एग्जाम की तैयारी कर रहे युवाओं को ऑनलाइन तरीके से स्टडी करवाने के लिए कार्य योजना तैयार कर रहे हैं। इसमें इन्होंने अपने कुछ टैलेंटेड और सफल साथियों को भी साथ लिया है, जो विभिन्न हाई प्रोफाइल एग्जाम की तैयारी कर रहे युवाओं को ऑनलाइन तरीके से शिक्षा देंगे। इसके लिए तमाम तरह के संसाधन, सामग्री, यंत्र उपकरण और अन्य व्यवस्थाओं के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं से भी मदद लेने के बारे में गंभीरता से विचार किया जा रहा है, ताकि वे युवा जो टैलेंटेड है लेकिन आर्थिक तंगी और पर्याप्त संसाधनों की कमी की वजह से चाहते हुए भी ठीक तरह से हाई प्रोफाइल एग्जाम की तैयारी के लिए खुद को तैयार नहीं कर पा रहे, उनके लिए सुधीर चौधरी अब सारथी के रूप में नजर आने वाले हैं, जो युवाओं को ऑनलाइन तरीके से कोचिंग ही नहीं देंगे बल्कि उन्हें इंटरव्यू देने के लिए भी पूरी तरह से तैयार करेंगे।

सलमान खान के प्रकरण में गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई से जुड़े बदमाशों को भी पकड़ने में निभाई बड़ी भूमिका

फिल्म स्टार सलमान खान को जान से जान मारने की धमकी देने के मामले में सुधीर चौधरी की प्रभावी जांच जेल में बंद गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई ग्रुप से जुड़े बदमाशों तक भी पहुंची। इन्होंने अपनी प्रभावी जांच से सलमान खान को जान से करने की धमकी देने के मामले में तो बदमाशों को अरेस्ट किया, जिनके तार लॉरेंस बिश्नोई से सीधे जुड़े हुए थे। इस तरह से सुधीर चौधरी अपनी आईपीएस नौकरी के शुरू के सफर में ही कई बड़े-बड़े चर्चित मामलों का प्रभावित तरीके से निस्तारण करके राजस्थान में ही नहीं बल्कि पूरे देश में सुर्खियों में बने रहे, और अब तक सुधीर चौधरी मीडिया में ही नहीं बल्कि राजनेताओं और शासन सचिवालय के गलियारों में भी अपने कार्यों और वर्किंग स्टाइल से चर्चा में बने रहते हैं।

सुधीर चौधरी के नेतृत्व में राजस्थान पुलिस के ऑपरेशन म्युल हंटर अभियान में अलवर जिला पूरे देश में अग्रणी रहा

जानकारी के अनुसार राजस्थान पुलिस मुख्यालय की ओर से प्रदेश के सभी जिलों में संपादित किए गए ऑपरेशन म्युल हंटर अभियान में अलवर जिला पुलिस अधीक्षक सुधीर चौधरी के नेतृत्व में अलवर जिला राजस्थान में ही नहीं, बल्कि पूरे देश में सबसे आगे रहा। बड़ी संख्या में एक तरफ जहां अलवर पुलिस की प्रभावी जांच और मॉनिटरिंग से खाते फ्रीज किए गए, तो दूसरी तरफ लाखों की संख्या में साइबर क्राइम को अंजाम दे रहे फ्रॉड मोबाइल नंबरों के ब्लॉकिंग करवाने में भी अलवर जिला राजस्थान में ही नहीं, बल्कि पूरे देश में नंबर वन पोजीशन पर रहा। अलवर जिला पुलिस की ओर से लाखों की संख्या में सिम और आईएमईआई के नंबर ब्लॉक किए गए, जिसकी वजह से साइबर ठगी और अपराध के मामलों में जबरदस्त गिरावट आई। इस तरह के प्रकरणों में अलवर जिला पुलिस ने बड़ी संख्या में साइबर अपराधियों को अरेस्ट भी किया है और देश भर में सक्रिय साइबर अपराधियों को चिन्हित करके उन्हें उनकी वास्तविक जगह जेल पहुंचा है। इसके अलावा सुधीर चौधरी के नेतृत्व में साइबर क्राइम के मामलों को केस ऑफिसर स्कीम के तहत निस्तारित किया जा रहा है, जिसमें देश के अलग-अलग राज्यों में रहने वाले साइबर अपराधियों की संपत्तियां को अटैच करने की प्रभावी कार्रवाई भी अलवर जिला पुलिस की ओर से की गई है। सुधीर चौधरी के निर्देश पर अलवर जिले में साइबर अपराध की रोकथाम के लिए 'साइबर महासंग्राम' अभियान शुरू किया जा रहा है, जिसमें ऑनलाइन ठगी के मामलों मामलों का प्रभावी निस्तारण तो किया जा रहा है, इसके अलावा सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर साइबर अपराध की गतिविधियों को अंजाम देने वाले लोगों को चिन्हित करने के लिए भी अलवर जिला पुलिस की ओर से सोशल मीडिया पर नियमित रूप से कड़ी निगरानी रखी जा रही है जिसमें अलवर जिला पुलिस को लगातार सफलता मिल रही है। साइबर अपराध के मामलों में अलवर जिला पुलिस की ओर से की गई कार्रवाई की चर्चा राजस्थान पुलिस मुख्यालय में ही नहीं हो रही बल्कि देश के गृह मंत्रालय में भी खूब हो रही है, जिसका पूरा श्रेय सुधीर चौधरी को दिया जा सकता है। क्योंकि सुधीर चौधरी आईआईटी रुड़की के सबसे बेस्ट स्टूडेंट रहे हैं और तकनीक रूप से काफी सक्षम और मजबूत अधिकारी माने जाते हैं। साइबर क्राइम एक ऐसा क्राइम माना जाता है जिसमें अपराधी काफी शातिर और चतुर दिमाग के होते हैं, और इस तरह की वारदातों को अंजाम देने वाले हाई प्रोफाइल पढ़ाई किए हुए लोग भी होते हैं जो संचार साधनों और आधुनिक तकनीक का अलग-अलग तरह से इस्तेमाल करने में काफी माहिर होते हैं। इसलिए इस तरह के मामलों के निस्तारण के लिए पुलिस अधिकारी का तकनीकी नॉलेज के रूप में दक्ष होना बहुत जरूरी है, जिसमें सुधीर चौधरी ऐसे मामलों का निस्तारण करने में काफी माहिर हैं और यह काम सुधीर चौधरी ने करके भी दिखाया है, जब अलवर जिला पुलिस ने बड़ी संख्या में बैंक अकाउंट फ्रीज करवाए और मोबाइल नंबरों की ब्लॉकिंग करवाई।

मुंबई दिल्ली एक्सप्रेस हाईवे पर दुर्घटनाओं को रोकने की दिशा में कई बड़े कदम उठाए, हाईवे के किनारे से बड़ी संख्या में अतिक्रमण हटाए गए

मुंबई दिल्ली एक्सप्रेस हाईवे पर बढ़ती दुर्घटनाओं को रोकने के लिए भी सुधीर चौधरी के नेतृत्व में अलवर जिला पुलिस ने कई बड़े कदम उठाए और कई बड़े नवाचार और नए प्रयोग किए हैं। जिसकी वजह से पहले की तुलना में मुंबई दिल्ली एक्सप्रेस हाईवे पर एक तरफ जहां सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश लगा है, तो दूसरी तरफ अलवर जिले में सड़क मार्गों पर यातायात व्यवस्था को मजबूती प्रदान करने और सुगम बनाने की दिशा में भी वाहन चालकों की सुविधा के लिए सड़क मार्गों पर एक्सीडेंट संभावित जगहों पर खास प्रबंध और उपाय किए हैं, ताकि वाहन चालक दूर से ही देख कर अलर्ट हो जाए। इसके अलावा मुंबई दिल्ली एक्सप्रेस हाईवे पर अलवर जिला पुलिस ने एक बहुत बड़ा अभियान शुरू करके हाईवे किनारे स्थित अतिक्रमणों को हटाया है। बड़ी संख्या में ढाबे होटल इत्यादि को हटाया गया है ताकि हाईवे पर ठीक तरह से वाहनों का संचालन हो सके।

कोटा एसीबी में रहने के दौरान कई बड़े-बड़े अधिकारियों को रिश्वत के आरोप में अरेस्ट किया, रणथंबोर अभयारण्य में सांभर शिकार प्रकरण का पर्दाफाश कर खूब चर्चा में रहे

जानकारी के अनुसार वर्ष 2015 बैच के आईपीएस अधिकारी सुधीर चौधरी राजस्थान में आधा दर्जन जिलों में पुलिस अधीक्षक पद पर रह चुके हैं, इसके अलावा कोटा एसीबी में भी अधीक्षक पद पर रहे हैं। कोटा एसीबी में अधीक्षक पद पर रहने के दौरान इन्होंने कई बड़े-बड़े भ्रष्ट अधिकारियों को जेल भेजने में बड़ी भूमिका निभाई। सुधीर चौधरी जैसलमेर, हनुमानगढ़, सवाई माधोपुर, राजसमंद जिलों के पुलिस अधीक्षक रह चुके हैं। इसके अलावा जोधपुर कमिश्नरेट में एसीपी पद पर भी रहे हैं, आईपीएस की ट्रेनिंग पीरियड के दौरान कई जगहों पर अतिरिक्त अधीक्षक पद पर भी काम किया है, इसके अलावा पुलिस मुख्यालय में साइबर क्राईम सेल के अधीक्षक पद पर भी काम किया। इनके बारे में कहा जाता है, जहां भी और जिस भी जिले में इनकी पोस्टिंग हुई, वहां इनकी पोस्टिंग के दौरान अपराधों के ग्राफ में जबरदस्त गिरावट हुई। जहां भी रहे इन्होंने अपनी ओर से कई तरह के नवाचार और नए प्रयोग किया, तथा साइबर क्राइम के मामलों में इनकी प्रभावी कार्रवाई हमेशा प्रदेश और देश में चर्चा में रही। जैसलमेर जिले में ऑपरेशन सिंदूर के दौरान इन्होंने बीएसएफ के जवानों के साथ सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा व्यवस्था को मजबूती प्रदान करने और कई गुप्तचर सूचनाओं का एकीकरण करने में जो प्रभावी भूमिका निभाई, उससे तत्कालीन थल सेना अध्यक्ष की ओर से इन्हें सम्मानित किया गया था। सवाई माधोपुर जिले में विश्व प्रसिद्ध नेशनल रणथंभौर अभयारण्य में सांभर शिकार के मामले में सुधीर चौधरी के मार्गदर्शन में ही 10 अपराधियों की गिरफ्तारी हुई थी, इस मामले का पर्दाफाश करने को लेकर भी सुधीर चौधरी की चारों तरफ प्रशंसा हुई। वर्तमान में अलवर जिला पुलिस अधीक्षक पद पर रहने के दौरान भी इन्होंने अलवर जिला पुलिस की कार्यशैली को जो नई दिशा और गति प्रदान की है वह काबिले तारीफ है। आज अलवर जिला पुलिस साइबर अपराधों के निस्तारण के मामले में अपने कामों को लेकर राजस्थान में ही नहीं बल्कि पूरे देश में सुर्खियों में है, तो दूसरी तरफ अलवर जिला पुलिस महिलाओं के उत्पीड़न और अत्याचार के मामलों के निस्तारण में भी अव्वल है। पहले महिलाओं के अत्याचारों के मामलों का निस्तारण दो महीने के अंदर दर्ज मामलों में 50 प्रतिशत मामलों का ही हो पाता था, जो अब दो महीना में 87 प्रतिशत तक पहुंच गया है। जिसका अर्थ यह है कि महिलाओं के अत्याचारों के मामलों का निस्तारण करने में अलवर जिला पुलिस काफी गंभीरता से काम कर रही है और महिलाओं को इंसाफ दिलाने में समर्पित भाव से अपनी जांचों को तेज गति से संपादित कर रही है।

पुलिसिंग, इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग और अन्य विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण विषयों पर कई शोध पत्र तैयार किया और कई महत्वपूर्ण संगोष्ठियों में प्रभावी भाषण प्रस्तुत किया

बीटेक की हाई प्रोफाइल स्टडी के दौरान ही सुधीर चौधरी ने इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में विभिन्न विषयों पर कई तरह के शोध पत्र तैयार किया। रिसर्च और नवाचार के मामलों में शुरू से ही इंटेलिजेंट छात्र के रूप में सुधीर चौधरी की गिनती होती थी, इसलिए इन्होंने अपनी पढ़ाई के दौरान ही अपने महत्वपूर्ण रिसर्च और अनुसंधान से काफी सुर्खियां बटोरी जिसमें अपने सहयोगी छात्र के साथ पहियों में डिस्क ब्रेक तकनीक पर रिसर्च शोध प्रस्तुत किया। इसी तरह से कंफर्ट मैकेनिक वाइब्रेशन को भी पूरा किया। साइबर क्राइम और तकनीकी विकास पर सुधीर चौधरी के प्रभावी शोध पत्र प्रशंसा के पात्र बने। इसके अलावा क्रिप्टो करेंसी सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी पर इनकी ओर से किए गए शोध पत्रों काफी चर्चा में रहे, तथा वर्ष 2023 में क्लाउड कंट्रोल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल पर सुधीर चौधरी की ओर से प्रस्तुत किया गया शोध पत्र काफी महत्वपूर्ण माना गया। सुधीर चौधरी ने भारतीय लॉ इंस्टीट्यूट और राजस्थान ज्यूडिशरी अकादमी की ओर से आयोजित किए गए महत्वपूर्ण विषयों पर प्रभावी शोध पत्र और व्याख्यान देकर कार्यक्रम में मौजूद विशिष्ट जनों को काफी प्रभावित किया। इसके अलावा समय-समय पर साइबर क्राइम से जुड़ी कॉन्फ्रेंस और इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग से जुड़े कई महत्वपूर्ण विषयों पर आयोजित कॉन्फ्रेंस में सुधीर चौधरी को एक प्रभावी वक्ता के रूप में देश भर में बुलाया जाता रहा है।

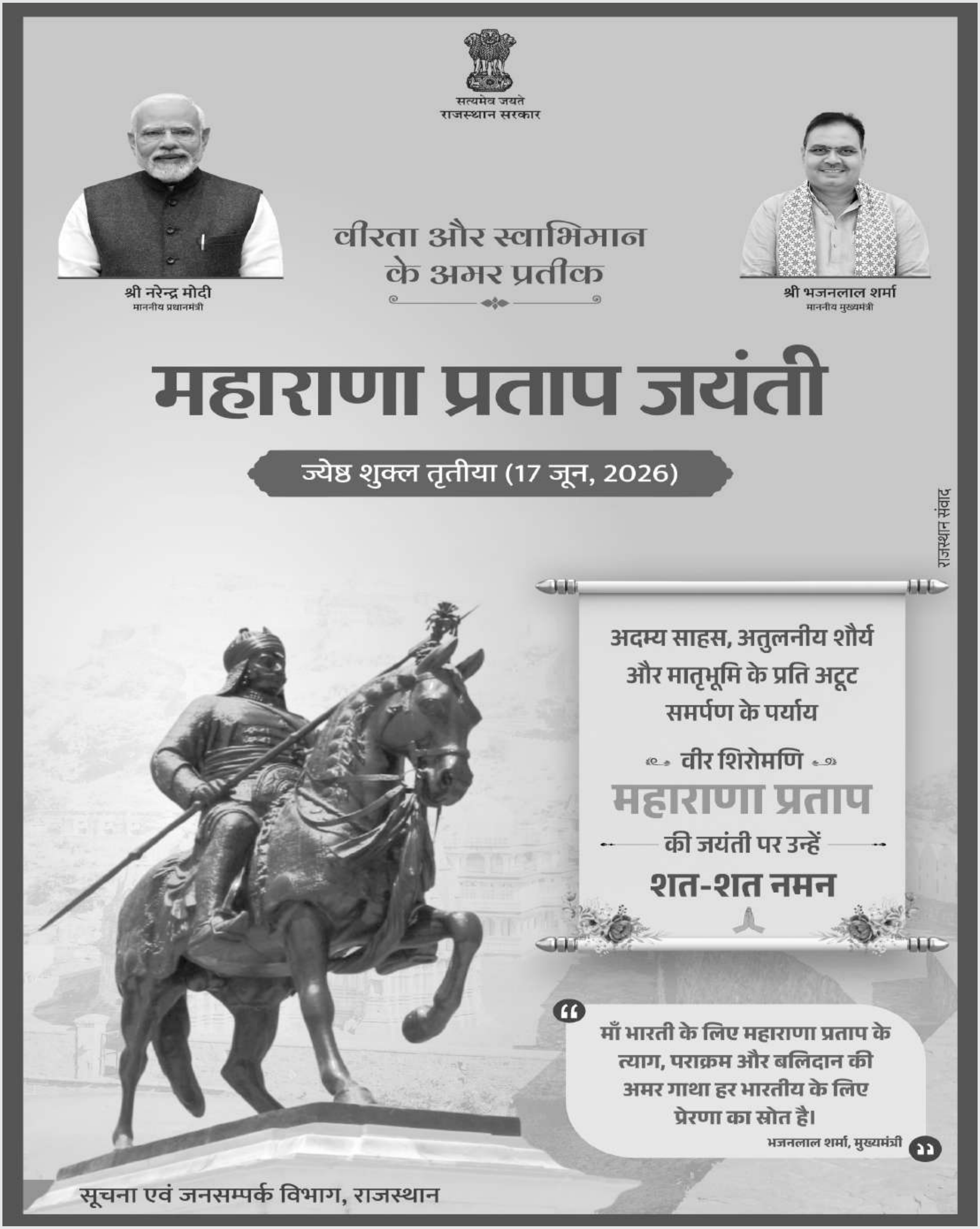
सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार
श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री
वीरता और स्वाभिमान
के अमर प्रतीक
श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री
महाराणा प्रताप जयंती
ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया (17 जून, 2026)
राजस्थान संवाद
अदम्य साहस, अतुलनीय शौर्य
और मातृभूमि के प्रति अटूट
समर्पण के पर्याय
वीर शिरोमणि
महाराणा प्रताप
की जयंती पर उन्हें
शत-शत नमन
माँ भारती के लिए महाराणा प्रताप के
त्याग, पराक्रम और बलिदान की
अमर गाथा हर भारतीय के लिए
प्रेरणा का स्रोत है।
भजनलाल शर्मा, मुख्यमंत्री
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

प्रवेश सत्र 2026-27 से

विद्यालय परिवार की तरफ से विशेष योजना का शुभारंभ

25 प्रतिशत निःशुल्क (RTE) के
अलावा 25 प्रतिशत और अतिरिक्त
आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को
ट्यूशन फीस फ्री करने का लिया निर्णय

C-586,587, 588, 589, 4C SCHEME, NEW LOHA MANDI ROAD, JAIPUR
7230022801, 9983322224

राजस्थान सरकार एवं केंद्र सरकार द्वारा विज्ञापन के लिए मान्यता प्राप्त

जयपुर टाइम्स

(जयपुर एवं चूरू से एक साथ प्रकाशित)

जयपुर टाइम्स

भजनलाल सरकार में वीआईपी कल्चर का त्याग करने वाले पहले मंत्री "संजय शर्मा"

जयपुर टाइम्स

राजनीति में दादी से आगे निकली दिया कुमारी

दिया कुमारी ने अब तक तीन चुनाव लड़े और तीनों जीते

जयपुर टाइम्स

किसान और पशुपालकों में ओम पूनिया की लोकप्रियता चरम पर

जयपुर टाइम्स

पहले वाजपेई का अब नरेंद्र मोदी का दिल जीता "अश्विनी वैष्णव" ने

जयपुर टाइम्स

पिता के सपनों को साकार कर रहे झाबर सिंह खर्रा, शहरों को नया लुक देने के लिए कर रहे है कड़ी मेहनत

जयपुर टाइम्स

भजनलाल शर्मा ने रचा इतिहास, डेढ़ लाख आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं संग मनाया "रक्षाबंधन"

जयपुर टाइम्स समाचार पत्र प्रतिदिन पढ़ने के लिए क्लिक करें

www.jaipurtimes.org

https://www.youtube.com/@JaipurTimes

@JaipurTimes2

@jaipurtimes.news

जयपुर टाइम्स में संवाददाता बनने के लिए, विज्ञापन एवं समाचार प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें :-

Email- jaipurtimes2007@gmail.com (समाचारों के लिए)

Email- jaipurtimes.adv@gmail.com (विज्ञापनों के लिए)

मो. 7014217770

प्रधान कार्यालय- सी 588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड़, रोड़ नं. 14, सीकर रोड़, जयपुर (राजस्थान)